

ԷԶՄԻԱԾԻՆ

Յա-է-լ-աճ



2023



2. ՏԱՐԻ

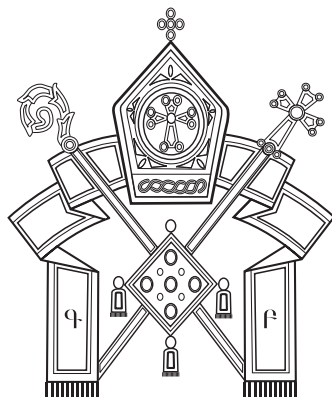
ԲԱՆԴՈՒՄ

ՊԼՇՏՈՆԱԿԱՆ ԱՐԱՆԻՐ
ԱՐԵՆԱՅՆ ՀԱՅՈՑ ԿԱԹՈՂԻԿՈՍՈՒԹԵԱՆ
ԱՆՅՐ ԼԹՈՒՄՅՈՒՆ ՄԻՔՈՅ ԷԶՐԻԼԵՐՆԻ

ՅԱՆԷԼՄԱՆ

2023

Վ. ԷԶՐԻԼԵՐՆԻ

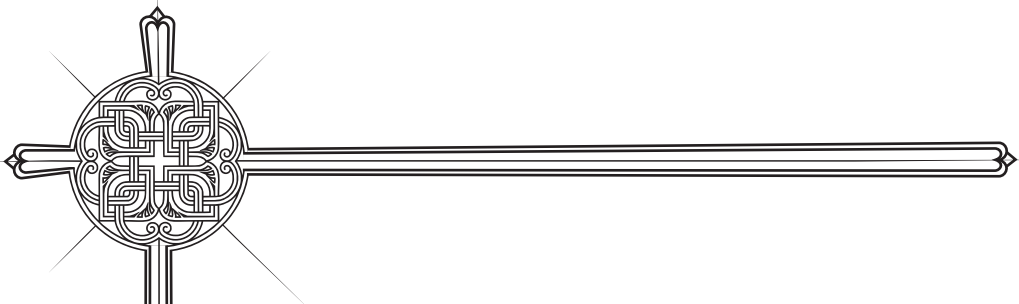


ՀՐԱՄԱՆԱԻ

Ն. Ս. Օ. Տ. Տ. ԳԱՐԵԳՆԻ ԵՐԿՐՈՐԴԻ

ՎԵՀԱՓԱՌԻ ԵՒ ՍՐԲԱԶՆԱԳՈՅՆ

ԿԱԹՈՂԻԿՈՍԻ ԱՄԵՆԱՅՆ ՀԱՅՈՑ



«ԷԶՄԻԱԾԻՆ»

կրօնագիտական եւ հայագիտական ամսագիր

Խմբագրական

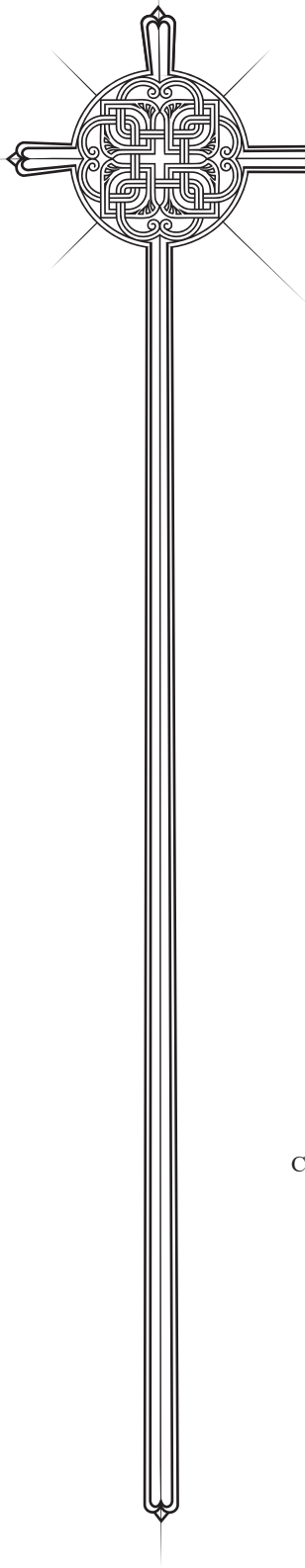
Գլխավոր խմբագիր՝ Գեորգ Մադոյեան

Լեզուատնական խմբագիր՝ Նարէ Սարգսեան

Տեխնիկական խմբագիր՝ Գոռ Գրիգորեան

Խմբագրական խորհուրդ՝ **Տ. Եզնիկ արք. Պետրոսեան,
Տ. Չաքարիա ծ. վրդ. Բաղումեան,
Տ. Անդրէաս վրդ. Եզեկեան,
Գոհար Աւագեան,
Ազատ Բոգոեան,
Խաչիկ Բաֆֆի Գազեր
Վահէ Թորոսեան**





“Etchmiadzin”

Journal of Religious and Armenological Studies

Editorial staff

Editor-in-Chief **Gevorg Madoyan**

Stylistic editor **Nare Sargsyan**

Technical editor **Gor Grigoryan**

Editorial Board **Archbishop Yeznik Petrosyan,
Proto-Archimandrite Zakaria Baghumyan,
Archimandrite Andreas Yezekyan,
Gohar Avagyan,
Azat Bozoyan,
Hacik Rafi Gazer
Vahe Torosyan**



«Эчмиадзин»

Религиоведческий и арменоведческий журнал

Редакционный состав

Главный редактор **Геворг Мадоян**

Стилистический редактор **Нарэ Саргсян**

Технический редактор **Гор Григорян**

Редакционный совет **Архиепископ Езник Петросян,
Протоархимандрит Закария Багумян,
Архимандрит Андреас Езекян,
Гоар Авакян,
Азат Бозоян,
Хачик Рафи Газер
Ваге Торосян**

ՆԵՐՍԷՍ ՇՆՈՐՀԱԼԻ. ՉԱՆԵԼՈՒԿՆԵՐ

Ներսէս Գ. Կլայեցի հայրապետի մահուան 850-րդ տարելիցի կապակցութեմբ շարադրուած է կաթողիկոսի համառօտ կենսագրութիւնը եւ թարգմանուած են հեղինակի 300-ը գերազանցող հանելուկներից 6-ը, որ զուտ ազգային եւ հոգեւոր նշանակութիւն ունեն՝ Հայկ Նահապետ, Տորք Անգեղ, Սուրբ Տրդատ Գ. թագաւոր, Սուրբ Գրիգոր Լուսաւորիչ, Մովսէս Խորենացի, Դաւիթ Անյաղթ:

6 个谜语

天才内尔塞斯四世¹

天才内尔塞斯四世² 是 1166 年至 1173 年间亚美尼亚使徒教会的大主教。他是一位神学家、诗人、作家和赞美诗作曲家。他努力使亚美尼亚教会摆脱孤立。内尔塞斯被天主教会认定为圣人。

他写了许多音乐作品、诗集和神学著作。他的主要文学成就包括 *Vipasanoutyoun*³ 和 *Voghb Yedesyo*⁴。 *Hisous Vord*⁵ 是《圣经》的诗

¹ Ստացուել է 1.11.2023, գրախօսուել է՝ 14.11.2023: էլ հասցէ՝ armensargsean@outlook.com: Խմբագիր 杨明、四川省，成都市，（成都外语学校书法老师） Շան Մին, Զինաստանի Ժողովրդական Հանրապետություն, Սիչուանի նահանգ, քաղաք Չէնդու (Կրթարան օտար լեզուաց):

² 也称为 Nerses Shnorhali, Nerses of Klla

³ 亚美尼亚语-音译(Վիպասանութիւն), 一部以诗歌形式写成的小说

⁴ 亚美尼亚语-音译(Ողբ Եդեսիոյ), 与埃德萨的陷落有关

⁵ 亚美尼亚语-音译(Յիսուս Որդի), 英语翻译为“神子耶稣”

ՆԵՐՍԷՍ ՇՆՈՐՀԱԼԻ. ՉԱՆԵԼՈՒԿՆԵՐ

Ներսէս Գ. Կլայեցի հայրապետի մահուան 850-րդ տարելիցի կապակցութեամբ շարադրուած է կաթողիկոսի համառօտ կենսագրութիւնը եւ թարգմանուած են հեղինակի 300-ը գերազանցող հանելուկներից 6-ը, որ զուտ ազգային եւ հոգեւոր նշանակութիւն ունեն՝ Հայկ Նահապետ, Տորք Անգեղ, Սուրբ Տրդատ Գ. թագաւոր, Սուրբ Գրիգոր Լուսաւորիչ, Մովսէս Խորենացի, Դաւիթ Անյաղթ:

6 个谜语

天才内尔塞斯四世¹

天才内尔塞斯四世² 是 1166 年至 1173 年间亚美尼亚使徒教会的大主教。他是一位神学家、诗人、作家和赞美诗作曲家。他努力使亚美尼亚教会摆脱孤立。内尔塞斯被天主教会认定为圣人。

¹ Ստացուել է 1.11.2023, գրախօսուել է՝ 14.11.2023: էլ հասցէ՝ armensargsean@outlook.com: Խմբագիր 杨明、四川省, 成都市, (成都外语学校书法老师) Եան Մին, Չինաստանի Ժողովրդական Հանրապետութիւն, Սիչուանի նահանգ, քաղաք Չէնդու (Կրթարան օտար լեզուաց):

² 也称为 Nerses Shnorhali, Nerses of Kla

他写了许多音乐作品、诗集和神学著作。他的主要文学成就包括 *Vipasanoutyoun*³ 和 *Voghb Yedesyo*⁴。 *Hisous Vordi*⁵ 是《圣经》的诗歌形式的再现，其中还包含教会历史的故事，并以世界末日的事件结尾。

这位伟大的思想家、诗人和作曲家生活并创作于 850 多年前。但他的作品，尤其是对儿童而言，在今天仍然至关重要。他的谜语约有 300 个，迄今仍具有高价值。850 多年后的今天，他的作品帮助孩子们愉快地度过业余时间并获得宝贵的知识。

我们精选了他的 6 个谜语呈现给我们的中国读者。我们试图运用中国古代诗词的风格，为中国朋友更清晰地表达谜语的精神。为了让谜语更容易理解，我们现在介绍斯内尔塞斯写过的亚美尼亚民族的杰出人物。

• **族长哈伊克 (Hayk the Patriarch)** 是亚美尼亚民族传奇的创始人。根据科雷内的摩西的说法，哈伊克是诺亚的曾孙。哈伊克拒绝服从巴比伦的贝尔，与他作战，并统一了他的国家，现在称为 **哈伊伊或亚美尼亚人**。

• **托克·安格 (Tork Angegh)** 是亚美尼亚神话中的力量、勇气、制造和艺术之神，是一种具有非自然力量和权力的存在。据信他是族长哈伊克的曾孙之一。

• **梯里达梯三世 (Tiridates III)**，也称为梯里达梯大帝或梯里达梯四世，是 298 年至 330 年的亚美尼亚国王。梯里达梯宣布基督教为亚美尼亚国教，使亚美尼亚王国成为第一个正式信奉基督教的国家。

³ 亚美尼亚语-音译 (Վիպասանութիւն), 一部以诗歌形式写成的小说

⁴ 亚美尼亚语-音译 (Ողբ Եդեսիոյ), 与埃德萨的陷落有关

⁵ 亚美尼亚语-音译 (Յիսուս Որդի), 英语翻译为“神子耶稣”

- **启蒙者格列高利 (*Gregory the Illuminator*)**, 也称为 Grigor Lusavorich (257 – 328), 是亚美尼亚使徒教会的创始人和第一位官方首脑。
- **无敌大卫 (*David the Invincible*)**, 也被称为哲学家大卫, 是六世纪的新柏拉图主义哲学家。
- **科雷内的摩西 (*Moses of Chorene*)**, 也称为莫夫谢斯·霍雷纳齐 (Movses Khorenatsi) (410-490 年代), 是古代晚期著名的亚美尼亚历史学家, 也是《亚美尼亚历史》(*History of the Armenians*) 的作者。

金发巨人完成任务,
他从巴比伦回到家乡。
他给他的国家起了一个名字,
还有舌头和释放。

族长哈伊克

亚美尼亚住着一位伟大的巨人,
他很勇敢, 也很高兴。
他的指甲是锋利的山削刀,
他的拳头坚硬足以打烂山峦。
曾经对手从海边过来,
毁灭性的岩石将他们杀死在海中。

托克·安格

蓝眼睛的国王是如此邪恶，
有一天，他长出了獠牙和尾巴。
但当他认罪后，
他被医治了，他是如此蒙福。

梯里达梯三世

他是两个父亲的儿子，
一个人是邪恶的，通奸的，
一个人是那么的纯洁，那么的正义，
牧羊人的儿子很慷慨。

启蒙者格列高利

亚美尼亚住着一位智者，
在雅典学习并在这里工作。
他言谈优雅，给别人留下了深刻的印象，
令无数大师惊叹不已、深受启发。

无敌大卫

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

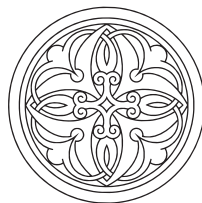
Ներսէս Ծնորհալի, Երզնցոյ, Կլայեցի, Հռոմկլայեցի, հանելուկ, կաթողիկոս, Ողբ Եղեսիոյ:

РЕЗЮМЕ

В связи с 850-летием со дня смерти Св. Патриарха Нерсеса IV Клаеци (Шнорали) изложена краткая биография Католикоса и переведены его 6 из более чем 300 авторских загадок, имеющих чисто национальный и духовный характер: Айк Наапет (прародитель армянского народа), Торк Ангех, Св. царь Тиридат III, Св. Григорий Просветитель, Св. Мовсес Хоренаци, Давид Непобедимый.

SUMMARY

In connection with the 850th anniversary of the death of the Catholicos Nerses IV of Kla or Saint Nerses the Graceful, a brief biography of the Catholicos is presented and six of more than his 300 author's riddles, which have purely national and spiritual significance, are translated: Patriarch Hayk, Tork Angegh, King St. Tiridates III, St. Gregory the Illuminator, Movses of Khoren, David the Invincible.



ՎԱՐԱՆԴ (ՅԱԿՈԲ) ՔՈՐԹՄՈՍԵԱՆ

ՍՈՒՐԲ ԳՐԻԳՈՐ ՏԱԹԵԼՅՈՒՆԻ
(Կենսագրական գծեր, «Գիրք Հարցմանց»ի որոշ հատուածների
արաբերէն թարգմանութիւնը)

Յօդուածում ամփոփ կերպով ներկայացուել է սբ. Գրիգոր Տաթևացու կենսագրութիւնը: Օտար ընթերցողին որոշ պատկերացում շնորհելու համար Տաթևացու հեղինակած «Գիրք Հարցմանց»ից որոշ հարցումներ եւ պատասխաններ թարգմանուել են արաբերէն. ի մասնաւորի՝ բարու եւ չարի, Աստուածգիտութեան, Աստուածտեսութեան, Ճշմարտութեան եւ հաւատքի, Սիրոյ եւ Բարու, Եփեսացիս Գ. 18-ի եւ Զորեքկերպեան կենդանիների մասին հատուածները:

القديس¹

غريغور تاتيفاتسي

السيرة الذاتية

³، مقاطعة جوجارك² ولد سنة 1346. في قلعة تموك
بأرمينيا.⁴ توفي سنة 1409 هـ. يوم 27 ديسمبر في دير تاتيف
درس في جامعة تاتيفوكان تلميذا لهوفان فوروتنييتسي.
في عام 1371 قام غريغوريوس بالحج إلى القدس مع معلمه. حصل هناك على رتبة راهب، وفي طريق
العودة إلى الدير، سلمه فوروتنييتسي طاقمًا عقائديًا 1380 في سنة 1388م انتقلوا إلى دير أبراكونييتيس،
بعد وفاة معلمه، وببركته وموافقة الجميع، أصبح غريغور رئيساً لذلك الدير. وبعد سنتين عاد إلى دير
تاتيف مع تلاميذه .
وأراكيل⁵ قام غريغور تاتيفاتسي بتدريس أكثر من 300 طالب، بما في ذلك توفاميتسيوبييتسي
وآخرين.⁷ وماتايوس جوغايتسي⁶ سيونييتسي
وفي عهد قيادته، بلغت مدرسة تاتيف، التي تحولت إلى جامعة، ذروة ازدهارها، فأصبحت مركزاً للعلم
والثقافة والفن والحياة الروحية. لعب أكثر من 300 طالب من طلاب تاتيفاتسي دوراً مهماً في الحياة
الروحية والكنسية والعلمية والثقافة الأرمنية.

¹ Ստացուել է՝ 24.10.2023, գրախօսուել է 2.11.2023: էլ հասցէ՝ hagop1424@gmail.com:

Խմբագիր՝ Սոնիա Քորթիմոսեան:

تقع حاليًا في منطقة أسبيندزاي (أسبنجاك) في منطقة سامتسخي-جافاخك في جورجيا. يقع الحصن على ثلاث تلال
عالية: كان طوله في الماضي حوالي 150 مترًا وعرضه 30 مترًا، وتحيط به أسوار وأبراج مبنية على ثلاث تلال
منفصلة. لأول مرة تم ذكر قلعة تموك في مصادر القرن العاشر.

تقع منطقة جوجارك في جنوب منطقة لوري في شمال أرمينيا. تم تشكيلها في 30 سبتمبر 1930. تبلغ مساحتها 3 770.4
كيلومتر مربع، ويبلغ عدد سكانها حوالي 30.000 نسمة.

مجمع رهباني من العصور الوسطى في أرمينيا. تقع جنوب قرية تاتيف في منطقة سيونيك، على الضفة اليمنى لوداي 4
رافد نهر فوروتان.

وبحسب التقليد، سمي الدير باسم يوستاثيوس تلميذ الرسول تداوس. في القرن الرابع عشر، تأسست جامعة تاتيف على
أراضي مجمع الدير، الذي أصبح مركزاً رئيسياً للعلوم. لم يكن مجمع دير تاتيف مركزاً روحياً فحسب، بل كان أيضاً
مركزاً تعليمياً وثقافياً كبيراً. عاش غريغور تاتيفاتسي أيضاً وعمل في دير تاتيف. قام بتحسين برنامج الجامعة وإعداد
الكتب المدرسية.

ولد عام 1378 وتوفي عام 1444. كان راوياً ومعلماً وكنيسة وشخصية ثقافية وعامة. وله عدد من المؤلفات أبرزها 5
"تاريخ لانك تاموراي وخلفائه" و"كتاب مذكرات

" (1892) الذي يشير إلى نقل كرسي كاثوليكوس الأرمن من إس إس عاصمة قبايقية إلى فاغارشابات.

ولد حوالي عام 1350 وتوفي حوالي عام 1425. كان رئيساً لدير تاتيف، وكان أيضاً مؤرخاً وكتّاباً ومزهِراً وفيلسوفاً 6
ونحويًا ومنظرًا للموسيقى. ومن أهم مؤلفاته "كتاب آدم" و"كتاب الجنة".

ولد عام 1350 وتوفي عام 1411. مترجم ومعلم وكتّاب أرمني، نُسخَت أعماله وانتشرت على نطاق واسع في أرمينيا 7
وفي الشتات الأرمني. ترك تراثاً أدبيا غنيا: كنوزا وأشعارا، شروحا عديدة، حوالي 50 خطبة،

ودافع عن استقلال الكنيسة الأرمنية⁸ لقد حارب بشدة ضد الوحودية ومن أشهر كتبه "كتاب الأسئلة" (كتاب ذو طابع علمي عام، يُناقش فيه العديد من المشكلات الفلسفية والدينية واللاهوتية والعلوم الطبيعية والتربوية والاجتماعية والاقتصادية على شكل أسئلة وأجوبة)، "كتاب الأسئلة" الوعظ...، "فوسكيوريك"، "هماروت" حل مقدمة فرفوروس"، أعمال "الحل باختصار لنظرية داود الذي لا يقهر"، عدد من التفسيرات الفلسفية واللاهوتية. خصص غريغور تاتيفاتسي مكانًا حاسمًا للمعلم في التعليم، ونصح بالجمع بين التربية العقلية والأخلاقية والتربية البدنية. وفقًا لغريغور تاتيفاتسي، المجتمع عبارة عن كائن حي، يقوم كل عضو فيه فقط بعمله المحدد والمحدد مسبقًا. يتم كسر الانسجام الاجتماعي بسبب الحركات الطائفية وجشع الطبقة الحاكمة. وينبغي حل قضايا الشعب بأغلبية الشعب و بالتوافق. وبحسب تاتيفاتسي، فإن سبب تدمير الدولة الأرمنية هو الأنانية والسياسة الشريرة للأمرأء. خصص غريغور تاتيفاتسي قدرًا كبيرًا من الوقت لدراسة العمل والقيمة والسعر والأرباح والفئات الأخرى. إن انتهاك مبدأ المساواة الطبيعية بين الناس، في رأيه، لا علاقة له بالنظام الذي وضعه الله، بل هو مظهر من مظاهر إرادة الإنسان الشريرة. وصنفت الكنيسة الرسولية الأرمنية غريغور تاتيفاتسي ضمن القديسين، وتحفل بذكره يوم السبت قبل الأحد الرابع من الصوم الكبير.

أسئلة وأجوبة

عن الخير والشر

السؤال الأول. كيف يتناقض الخير والشر؟

إجابة: بأربع طرق. موضوعيا ، مثل الكبير والصغير. النقص ، مثل القدرة والنقص. داخليا ، مثل الساخنة والباردة. التناقضات ، مثل التأكيد والرفض. في الواقع ، الخير والشر ليسا متناقضين ، مثل الأشياء ، لأن الأشياء كاملة وتتكون من بعضها البعض. الخير والشر ليسا كاملين والشر لا يأتي من الخير ولا الخير من الشر. وهم ليسوا في علاقة التأكيد والاستبعاد ، لأنهما متضادان في الكلام ، مثل الصواب والخطأ ، والشر والخير يحدثان أثناء العمل والكلام. فهي ليست ذاتية ، كالساخنة والباردة ، والأبيض والأسود ، لأن هذه

(الكنائس المسيحية unitor التوحيد (باللاتينية: الموحدون – التوحيد) أو التوحيد، اتجاه كنسي يقوم على فكرة اتحاد (8) المختلفة مع الكنيسة الرومانية الكاثوليكية، والتي تقبل سيادة البابا، والعقيدة الكاثوليكية، والطقوس مع الحفاظ على لغة العبادة الوطنية.

صفات ، والخير جوهر ، والشر ليس جوهر ، وهم يقدمون أنفسهم على أنهم وجود ونقص ، لأن الخير هو القدرة ، والشر هو نقصها ، كما أن العمى عمى العين والظلمة هي انعدام النور .

هم أيضا يختلفون في هذا الطريق. من الوجود يولد النقص ، ولكن من النقص لا يمكن ان يولد الوجود أبداً ، بينما يمكن لأي شخص أن يتحول من الخير إلى الشر ومن الشر إلى الخير .

وإذا قال أحدهم أنه بسبب الباطن ، يتحول أحدهما إلى الآخر وليس بسبب الوجود أو النقص ، فلنفترض أن الخير والشر ، وفقاً لحامله ، هما داخليان لبعضهما البعض ، وهما في حد ذاته وجود ونقص ، كما قلنا .

السؤال الثاني. ما هم أعمال الخير والشر ؟

إجابة: الخير موجود و بناءً ، والشر هدام ومزيف. ثم ، إذا كان الشر هو إفساد الآخرين ، أينما وجد ، فهو مقيد ، وفقاً لما هو شر ، فهو ليس كائنًا ولا يمكن أن يكون .

وإذا قال أحدهم أن الحرارة تطرد البرد ، وتبقى [ككائن] ، وبالتالي الشر أيضًا ، فلنقل أن الحرارة تقاوم البرد ، وتبقى ككائن ، لأنها كائن وصفة ، وشر. لا يبقى ، لأن الشر ليس جوهرًا ، بل نقصًا .

السؤال الثالث. كيف يكون الشر غير كيان ، لأنه هنا يتعارض مع الخير ، تمامًا كما أن الفضيلة والشر كلاهما من الجوهر ، تمامًا مثل المرض من الصحة والفساد من الجسد .

إجابة: دعنا نقول في هذا الصدد. الشر ليس جوهرًا ، وليس في الجوهر ، وليس من الجوهر ، وليس بداية الجوهر . بالنسبة إلى الأول ، فلنفترض أن الشر ليس كائنًا ، لأنه مفسد ومدمر . الآن ، عندما يفسد الآخرون ، هو نفسه فاسد أيضًا ، ويتوقف عن أن يكون كائنًا. الشر أيضًا ليس في الوجود ، ودعونا نظهر هذا من التقسيمات [التالية] . هناك كيان وهو جيد مثل كل الكيانات. هناك شيء ليس كائنًا ، لكنه جيد ، مثل المواد ذات الجودة الرديئة. يوجد كائن ، لكنه ليس جيدًا ، مثل الإرادة الشريرة . وهناك ما ليس جوهرًا وليس جيدًا ، مثل الشر الخارج عن الجوهر والخير .

وأيضًا ، الشر ليس من الجوهر ، لأن كل ما هو جوهري جيد ، بل على العكس "لأن الشجرة الطيبة تأتي بثمر جيد" ، كما يقول الرب (إنجيل متى 7:17) . وكل ما هو جوهري له بداية وسبب ، ولكن الشر ليس له بداية وسبب ، لأنه ليس من الجوهر .

وهي ليست حتى بداية الوجود ، لأن الخير لا يأتي من الشر .

ثانيًا ، هناك نوعان من الشر. هناك شر أناني ، وهو شر واضح وبسيط. [هذا] أبعد من الخير والجوهر ، وهو ليس في أي مكان ولا زمان. لم يكن ولا يمكن أن يكون ، و هو العدم. هذا الشر ليس كائنًا وليس موجودًا. [هذا] ليس له بداية ولا سبب ، وليس في حد ذاته بداية أو سبب للآخرين ؛ هذا هو الشر أناني .

وهناك الشر الذي يختلط بالخير وينشأ من الجوهر ، فكما ينشأ المرض من الصحة ، ينشأ الفساد من الجسد ، لأن المرض ينشأ من تدهور الصحة ، وعندما يضعف الجسم يحدث المرض. واعلم هذا ، كلما تدهورت الصحة ، زاد المرض ، وكلما زاد ضعف الجسم ، زاد الضرر. وعندما تتدهور الصحة على الإطلاق ، سيختفي المرض أيضًا. وبنفس الطريقة ، فإن الضرر ، ومع فقد الكامل للحياة ، سيفقد الموت أيضًا ، لأن له كيانًا متأصلًا في جوهره. وهكذا يوجد الخير البسيط والموحد ، مثل الله ، لأنه غير قابل للتغيير والله خير دائمًا ، لأنه جيد في الجوهر ، والصالح هو جوهر الله. وهناك خير مختلط ، مثل صلاحنا ، وهو القدرة ، لأن طبيعتنا مختلفة والصالح الموجود في طبيعتنا. هذه الخير لا يتغير ويتحد مع الملائكة ، ولكنه متغير فينا ، لأن روحنا متغيرة أيضًا ، وهي أحيانًا جيدة وأحيانًا شريرة. ميزة خاصية الخير قدرة طبيعية فينا ، لأننا خُلِقنا من الخير ، والشر أجني ونقص في الخير. الخير هو سبب الواحد ، وهو الله واحد ، رغم أنه يظهر فينا من نواح كثيرة ، والشر متعدد الوجوه ومن أسباب كثيرة.

الآن دعونا نجيب على ذلك [كيف] الشر يتعارض مع الفضيلة والظلم للعدالة. كالظلام للنور. والنور كائن ، والظلمة لا كيان. وكما أن الهواء قادر على النور والظلام ، كذلك الروح كائن قادر على الخير والشر ، أي الفضيلة والشر. ومثلما يكون الضوء دائمًا نورًا ، رغم أنه يتلاشى في الهواء ، لأنه من المعروف أنه سيضيء مرة أخرى ، بالطريقة نفسها ، فالخير دائمًا جيد ، على الرغم من أنه يتضاءل في الروح ، فإنه يظل جوهرًا ، لكونه جوهرًا ، فالخير لا يختفي. اما الشريختي تاركًا الروح ، لأنها ليست كائنًا ولا وجودًا. لذلك ، من الواضح أن الخير هو حسب حاملها ووفقًا لها جوهر. اما الشر موجود ويظهر عند من يحمله ، وهو في حد ذاته يئلف ويفسد ، لأنه ليس وجودًا ولا موجود.

السؤال الرابع. الشر ليس كائنًا ولا وجودًا. كيف يتم تمييزه عن اللاوجود البسيط ، الذي هو لا شيء على الإطلاق؟

إجابة: بشكل عام ، الشر لا شيء ، الذي يتعارض مع الخير ، ولا شيء ، الذي يتعارض مع الجوهر ، متساويان في الجوهر.

ومع ذلك ، لديهم اختلافات. أولاً ، اللاوجود يطمح ويريد أن يكون موجودًا وأن يكون. والشر لا يسعى أن يكون خيرا. ثانيًا ، اللا جوهر ينير الجوهر ويصبح الجوهر. والشر لا ينير الخير ولا يصير خيرا. ثالثًا ، اللاوجود ليس خيرا ولا شرا في حد ذاته ، بينما الشر هو بحد ذاته شرير ، حتى لو كان جيدا. رابعًا ، عندما يصبح اللاوجود كائنًا ، فإنه لا يتحول إلى كائن بعد الآن. وبعد إظهار الشر ككيان ، فإنه يتحول مرة أخرى إلى لا شيء وخالٍ من الشكل. خامسًا ، لا يوجد ما يتعارض مع الجوهر ، على الرغم من أنه متأصل في نفسه ، والشر ، الذي يظهر في حامله ، يعارض الخير ويدمره ، على الرغم من أنه في حد ذاته ليس شيئًا وغير موجود.

السؤال الخامس. كيف هذا الشر لا ينضب و ليس له بداية ولا سبب ولا حدود؟

إجابة: للوجود بداية وسبب ، بالإضافة إلى القياس والحد [ينتمي إلى] الطبيعة. والشر خارج عن الجوهر والطبيعة ، لذلك فهو لا ينضب ولا سبب له. مرة أخرى ، يُنظر إلى الحجم والحد على أنهما الحواف الأخيرة للوجود ، والبداية والسبب هما أولهما. في الوقت نفسه ، الشر ، وهو العدم ، ليس له بداية ولا نهاية ، بسببه الشر الذي لا يقاس ولا سبب له ، كما أوضحنا أعلاه.

السؤال السادس. الله غير محدود وبلا سبب ، والشر لا سبب له ولا حدود له في حد ذاته. كيف يتم التعرف عليهم؟

إجابة: نحن نستخدم كلمات سلبية عن الله ، مثل لا يوصف ، لانهائي ، ليس وفقًا للافتقار ، ولكن وفقًا للتفوق ، لأن وجود الله اللامتناهي واللامتناهي يتجاوز الآخرين. هذا هو الاختلاف الأول.

ثانيًا ، لأن الله غير محدود ويحدّدنا ، فهو بلا بداية ويعطينا بداية ، وهو سبب كل شيء آخر. والشر ، كونه لانهائيًا في حد ذاته ، ليس هو المحدد للآخرين. الأمر نفسه ينطبق على [كيانه] الذي لا سبب له ولا بداية له وكل شيء آخر.

ويمكن العثور على الخطاب الكامل عن الخير والشر في الفصل الرابع من "كتاب الأسماء الإلهية" لديونيسيوس وفي خطاب الذريعة المقابلة ، وكذلك في نهاية "حدود" داود ، والتي تسمى "كل الشرور". أمر مؤلم .

هذا كل شيء عن هذا.

عن معرفة الله

السؤال الأول. كم [ممكن] معرفة الله؟

إجابة: لكي تعرف الله ، خلق الله نوعين من الأمثلة. المعرفية والحسية: كالروح والعقل ونحوه والشمس والنور ونحوهما. وهناك خمس طرق لمعرفة الله.

أولاً ، بالفحص الطبيعي ، كما يفعل الفلاسفة.

ثانيًا ، بالإيمان كما [نعلم] نحن المؤمنين.

ثالثًا: بالنعم كالأنبياء أو بالخيال أو بحواس الجسد.

رابعًا ، بنظرية خاصة عن المعرفة ، والتي [تُعطي] لميزة خاصة ، مثل موسى.

هذه الأشياء في هذه الحياة.

والخامس هو رؤيته وجهاً لوجه في الحياة الأبدية ، بحسب الرسول بولس (انظر الرسالة الأولى إلى أهل كورنثوس: 13.12). أولئك الذين يستحقون هذه النظرية ، سيصبحون مباركين وسيتحدون بشكل لا ينفصم مع حبه ، مثل الملائكة.

السؤال الثاني. لماذا لم يكشف الله عن طبيعته للجنس البشري في هذه الحياة؟

إجابة: لا يمكن أن نقول ببساطة كالثائعات أنه بسبب الحسد أو الطموح [لم يظهر] حتى يتمجد بالجهل. مثل هذا الرأي غير مقبول ، يقال [شيء] لا يليق بطبيعة الله البسيطة والبرينة ، الذي يريد أن يعيش كل الناس. وبسبب صلاحه العظيم خلق الإنسان على صورته ومثاله. دعونا [نجيب] وفقاً للعقائد الأرثوذكسية للكنيسة.

شرح غريغور اللاهوتي السبب الأول لذلك. كل شيء يمكن العثور عليه بسهولة أيضاً يحقره بسهولة ، لذلك أراد الله أن ننضم إليه بحب غير مشروط عندما نراه.

والسبب الثاني: أنه لا يؤمن النظر مباشرة إلى أشعة الشمس ، لأنها يمكن أن تشوش الرؤية وتحرمها مما هي عليه. لذلك ، أنقذ الله الجنس البشري ، حتى لا نجد أنفسنا في دولة أروسيك ، الذي لم يكن قادرًا على تحمل عظمة المجد ، فقد حرم أيضًا من المعتدل.

ثالثاً: إن شاء الله ليس بالرحمة فحسب ، بل بالعدل أيضاً ، ولإعطاء أجر الاستشهاد بدرجة الصبر.

رابعاً ، نحن المسجونون في الجسد ، لا نستطيع رؤيته بشكل معنوي ، كما يستحيل أن نتقدم ، أو نطأ ظلنا ، أو نرى أي شيء دون وساطة الهواء. بهذه الطريقة يستحيل على الإنسان أن يرى الله في هذه الحياة بدون مثال ووسيط.

السؤال الثالث. إذا كان أحدهم لا يعرف القراءة ولا يقبل شهادات الكتاب المقدس ، فكيف نظهر له أن الله موجود؟

إجابة: بالأشياء الموجودة ، يمكننا أن نظهر أن الله موجود وموجود بثلاث طرق.

أولاً - مسموعاً ، وثانياً - بذكاء ، وثالثاً - بصرياً. لأنه ، أو السماع من الأجداد ، "في البدء خلق الله السموات والأرض" (سفر التكوين 1: 1). أو إذا لم يكن الأمر كذلك ، فإنهم يتعلمون عن ترتيب الأشياء بأذهانهم ، وإذا لم يكن الأمر كذلك ، فإنهم يرون السماء والأرض بأعينهم. بهذا الترتيب يقول النبي إشعياء عن الأول: ألم تسمع ولم يقل لك أنني أسست أسس الأرض (نبوءة إشعياء 40: 21). وعن الثاني يقول: "إنك لا تفهم ولا تستوعب" (نبوءة إشعياء 40: 21). وعن الثالث يقول: "ارفعي عينيك وانظري أنه لا يسمح للرؤساء أن يحكموا" (نبوءة إشعياء 51: 6).

بهذه الطريقة ، إما من خلال الاستماع إلى تاريخ الأجداد ، أو بترتيب الأشياء ، أو من خلال رؤية أشياء مهمة ، نصل إلى فكرة الإله الحقيقي ، الذي ينطلق منه الإيمان.

في الواقع ، الأول ، من خلال الاستماع ، هو عن نفسه وعن الآخرين عن نفسه ، وعن نفسه عن الآخرين وعن الآخرين عن الآخرين. عن نفسه: "أنا الرب الإله الأول والآخر" (نبوءة إشعياء 41.4). من شخص آخر عن نفسه: "لذلك يجب على المرء أن يؤمن بوجود إله" (رسالة إلى العبرانيين 11.6). عن شخص آخر غيره: "لا إله آخر غيري" (نبوءة إشعياء 44: 6). من واحد إلى آخر ، "الأشياء المصنوعة بأيدي البشر ليست آلهة" (أعمال الرسل 19: 26).

وثانيًا ، الإله الحقيقي معروف من ترتيب الأشياء. أولاً ، كسبب ، وثانيًا ، كبداية ، وثالثًا ، باعتباره السبب الوحيد. أولاً ، كسبب ، لأن كل سبب له مسبب ، وبالتالي يصبح سببًا لسبب آخر ، وبلا استمرار على هذا النحو ، لن يتحقق اللامتناهي ، لذلك يجب أن يكون هناك سبب مسبب لكل الأسباب ، وهو الله نفسه. ثانيًا ، كبداية ، بما أنه لا يمكن لأي شيء أن يكون له بداية من تلقاء نفسه ، لذلك يجب أن يكون لكل الأشياء التي ظهرت إلى الوجود بداية. الآن ، إذا كانت البداية هي لا بداية ، وجدنا ما كنا نبحث عنه. وإذا بدأ أيضًا ، فلا بد أن يكون له بداية. واستمرارًا على هذا المنوال ، نجد اللابداية التي هي الله نفسه. ثالثًا ، باعتباره الوحيد ، لأن أي عدد [يتكون من] واحد ، مثل الأنواع من الفرد ، والخط من النقطة ، والعدد الكبير من الواحدة. الآن ، عندما ينضم الشخص الوحيد إلى الكثيرين ، فإنه لم يعد هو الوحيد ، وإذا لم ينضم ، فلن يكون هناك جموع ، ولكن ستكون هناك وحدات. علاوة على ذلك ، فإن الشخص الوحيد متحد على أنه انتماء ، لكنه ليس موحدًا بنفسه. كما هو الحال مع المضاعفات ، فإن الوحدات متنوعة ، ولا توجد وحدة [مطلقة]. لذلك ، من الضروري أن يكون هناك مثل هذا واحد ، يجب أن يكون كذلك ، سواء بين الكثيرين أو بين الوحدات. الله هو الوحيد من هذا القبيل. كان هذا هو الثاني.

والثالث: أن السماء والأرض يُدركان برؤية الأشياء. الآن ، هناك أربع ظواهر مرئية على الأرض. أولاً ، استقرار الأرض ، تدفق المياه. ثانيًا: تغيير الملوك ، إثراء الفقراء ، إفقار الأغنياء. ثالثًا ، فشل مشورات الناس وإرادتهم ، لأننا نتأمل ونرغب في أشياء كثيرة لا تتحقق. رابعًا: تغيير الهواء والنباتات.

عن الأول يقول داود: "ثبتوا الأرض على أسسها حتى لا تتزعزع إلى الأبد" (مزمور 13: 5). أو "وجهت البناييع إلى الوديان". فيما يتعلق بالثاني ، تقول الأمثال: "ملك بي الملوك" (أمثال 8: 15). وحنة تقول: "الرب يفقّر والرب يغني" (الملوك الأول 2: 7). عن الثالث ، يقول داود: "الرب يبذل مشورات الناس" (مزمور 32: 10). وعن الرابع يقول داود: "جعل الفرس كسهم" (مزمور 147: 16). أو "يرسل كلمته وينوبها" (مزمور 147: 18) أو "ازرع العشب في الجبال والمساحات الخضراء لتعتني هموم الناس" (مزمور 14: 103).

تظهر أربع ظواهر في السماء أيضًا. أولاً ، الفضاء الواسع والتقوس المستمر للسماء. ثانيًا ، جمالها. ثالثًا ، استمر في التحرك. رابعًا ، تغيير الأنوار ، أي أحيانًا سوادهم ، كما حدث في صلب المسيح ، وأحيانًا رجوعهم إلى الوراء ووقوفهم ، كما في أيام يشوع وحزقيا.

عن الأول ، يقول إشعياء: "من جعل السموات قوسًا" (نبوءة إشعياء 40: 22). وعن الثاني يقول: "من يصنع لها الحلي" (إشعياء 40: 26). عن الثالث يقول الجامعة: "السماء تضطرب" و "تشرق الشمس

وتغرب وتذهب إلى مكانها" 11 (جامعة 1: 5). وعن الرابع يقول داود: "خلق الظلمة فصار الليل" (مزمور 20: 103). ومن كل هذا من الضروري أن نفهم أن هناك خالقهم.

وتحدث أحد الرجال الفصيحين عن الفكرة الإرشادية للبدائية الأولى ، أن هناك من يحرك الأجرام السماوية. وهو الوحيد ، فهو غير مألوف مع قوة غير محدودة ،

بلا سبب ولا يعرف الخوف. إنه خالق كل الكائنات ويجب أن يُعبد.

هذا كل شيء عن هذا.

عن رؤية الله

سؤال. كيف يرى الله الماضي والمستقبل بشكل كامل في الحاضر ونحن لا نرى ذلك؟

إجابة: في أذهاننا عيان ، أي النسيان والجهل ، لأننا ننسى الماضي ولا نعرف المستقبل.

هذه النواقص لا وجود لها في الله.

بالإضافة إلى ذلك ، فإن أذهاننا تخضع للوقت ، وبما أن الجزأين من الوقت ليسا أمام أعيننا ، أي ضاع الماضي ، فلا مستقبل ، وبالتالي ، في غياب هذه الأجزاء ، فإن معرفة أذهاننا أيضا غائبة. وعقل الله يتجاوز الزمن ، وبفضله يرى الماضي والمستقبل أيضًا.

سؤال. كيف يرى الله ما لم يحدث وما لم يتحقق ونحن نرى الموجود والمتمم؟

إجابة: حكمة الله لانهائية ، ولهذا السبب يرى اللامتناهي ، أي اللامادي. و [عقلنا] تم إنشاؤه ، ولهذا فإننا ندرك فقط الطبيعي ، أي حيث لا تصل الطبيعة ، لا يصل عقولنا أيضًا.

يقال أن الله غير مخلوق لسببين. غير مخلوق - كونه الله ، و غير مخلوق الذي لم يكن بعد ولم يأتي إلى الوجود. هذان الغير المخلوقين لا يعلى عليهم إلا الله ، لأنه يعرف نفسه فقط ويعرف فقط ما لم يحدث بعد. ونحن البشر لا نستطيع الوصول إليهم.

سؤال. كيف يرى الله الكائنات إذا لم يكن لديه حواس ، لأننا ندرك الإدراك بحواسنا الداخلية ، ونرى المرئي بحواسنا الخارجية.

إجابة: إذا قلنا أن الله ليس له حواس ، فلا ينبغي أن ننظر إلى هذا على أنه نقص ، بل على أنه امتياز ، كما أنه لا يمكننا مقارنة بذكائنا ومعرفتنا ، فهذا يعني قوة عظمته. أو ضعفه على الصليب الذي هو

مرة أخرى عظمة قوته. وبالمثل ، فإن القول بأنه ليس له حواس يدل على تفوقه ، لأن لديه فكر وعبقريّة ، كما يقول سليمان: "لقد وضع الله أسس الأرض بالحكمة والعبقرية" (أمثال 3: 19). ويتحدث ديفيد عن الشعور الأسمى. "الذي خلق العين ألا يرى ولا يسمع؟" (مزمور 9: 93). "وفي يده تخوم الأرض" (مزمور 4: 94).

الآن ، رؤية العقل الإلهي له الخصائص الأربع التالية. كاملة ، حاضرة ، شاملة ، لا تتغير. أي أنه يرى الماضي والمستقبل على أنهما الحاضر ، لأنه يرى كل شيء في نفسه ، وهو نفسه الحاضر. أي بدون إفراط أو نقص ، ولا يتغير ، لأن رؤية الله هي نفسها دائماً.

وكل هذا مخالف لرؤيتنا ، لأننا نرى جزئياً ، واحداً تلو الآخر ، بمعرفة أكثر أو أقل ووفقاً للتغير الموضوع.

مرة أخرى ، من المميزات أن رؤية الله هي أولاً ، ثم فقط جوهر كل شيء يتبع رؤيته. ورؤيتنا تتبع الجوهر ، لأن الشيء أولاً ، ثم نحن نرى. في هذه الأثناء ، يرى الله قبل الفعل وقبل الإرادة وقبل الوجود: "عينك ترى ما لم أفعله" (مزمور 138: 16). ولا نرى إلا بعد أن نفعل ، نرغب ، أن نكون كما قلنا.

مرة أخرى ، يرى الله وفقاً للسبب ، لأنه سبب كل محتوى ، لأنه يمتلك كل شيء في نفسه والغاية النهائية ، لأنه نهاية كل نهاية.

مرة أخرى ، ترى المادة غير المادي والمركب بسيطاً ، والزمني أبدي ، والمتعدد والمقسوم على أنه موحد وغير قابل للتجزئة.

ونرى كل هذا في الاتجاه المعاكس ، والسبب في ذلك هو ما يلي. رؤية الله ليست خارجة عن نفسه ، فهو يرى فقط ما بداخله ، لأنه يرى نفسه في نفسه والآخرين ، وكذلك في نفسه ، وهو رؤية الله ، كما قلنا.

سؤال. لماذا ندعو الله كلي الرؤية؟

إجابة: يرى العليم الكل ، وهو عكس ما نراه ، بأربع طرق. فإن رؤية الله وسماعه وما إلى ذلك تتم في مجملها ، ويتم عملنا في أجزاء.

ثانياً ، يرى الجميع ، أي الصالحين والخطاة على السواء ، لكننا [نرى] واحداً.

ثالثاً ، يرى كل عمل من الداخل ومن الخارج - الأفكار والكلمات وما إلى ذلك. نحن [نرى] واحد.

رابعاً ، يرى الماضي والحاضر والمستقبل ، نحن لا نرى إلا الحاضر.

سؤال. كيف نرى الله - بالمعرفة أم بالحواس؟

Ելաբա: Ին յոհր իլհի , ձի հո թիբե , Ոճիև Մհի Եիև , լիՏ Մտա՛ լնա , լա Ֆի հա յալմ յո լա Ֆի աճրև . Մե ձկ , յնթր իլի "հո" ձիև թրիկտին , Աի թալմրև և յիլ , թալկիև Աո ինկար . Աոլա՛ [Մն յրրորի] յնթր իլի աճիկալ և թիճաթիալ յի հի տրիթ յալոկալ , Մն յալ Րոյթիա լոլոլոլ իլի յնոճ յոլի ձիև Մն յալև յի յնոճ յոլի լոլոլոլ , թալնալի յրի Ան ձիև հո թիթ . Մն կլ Ցիև .

Իրի ձիև Այճա՛ Ելի հա յալ . Ենձա յնփլ ձիևն Են յոհր յալոլի , Այճա՛ Են ձաթ , լա՛նև յոհր , թիթր յնփև , ֆա՛նև յիճ Մե յոլր իլհի , ձիև հո յոլր յիկա՛ լա յիկն ֆիլմիա . յիլ յրիալրիկև աոլի , և թալնիև յրի թիև ալնիև և Րիլ .

աոլի հի թրիկև թիբիկև լոլոլիև , և թալնիև հի Րոյև թիլմա ՄՑրկ և Տնտրև .

Տոլ . կիֆ տրի յալնկև?

Ելաբա: Ին Րոյթիև Միլ Րոյև ձիև , Աի թիթ Մտճ և Տալի .

Լա՛նև յիլոնա , յն յալիոն և յիկՏորոն , թիթաթև . Լա՛նև յիլոն Մն կա՛նև Եալիև , յնթրոն իլի Ալի յո յիկոն . յիհև թրիկև յիլոն ին ձիև Ֆի իլև և յալոկալ Ֆի ինև .

Լիհա թիթ , ֆա՛նև յիլոն թոլոլ յալաճա՛ , Միլ Տեոլո յոլր ձոն Ան յնիլոա Րիկև , յիլ ձա՛նա յիճոլոն թալրոյև .

հա հի Մերֆթիև թալՑիալ և յալև , լա՛ն Մերֆթիև Են ձիև յիճճ ձա՛նա կալՑիալ . Րոյև յալոկալ Ֆի ձիև , յիճճ յերֆ յալ յալոկալ ձիև կա՛ն [Իրար] յալև .

Են յիկիկև և իլիլմա

Տոլ . Մա հի յիկիկև?

Ելաբա: յիկիկև հի յնփ կալև իլհիկև թիթիև յի լա կճ Ֆիև յո Ցիև յիալֆա .

և հա հո Մլ յիլիլ թիլ յիկ և յիկ , Աի կճև կլի , Միլ ինՏան և ինՏանիև .

և կալև ինՏան կ և յիկ հո կալև իլհիկև . և յիկիկև Աիլա՛ յիճոլ իլի կճև , Միլ Ալոալ ֆալՏֆև , կն յիկիկև լա յիլիլ , Միլ յոլր իլիլմա , լա՛ն յոլր իլիլմա յիճա՛ Մն հա յիկիկև Ֆի Ել յոլմոն , յո յիլիլ , յիճ յոլմոն թալկ և յիկ Ֆիև .

ֆկա Ան յերֆև տոլ յիլիլ և յալոլմև , ֆա՛ն իլիլմա յոլ յիկ և յոլմոն .

سؤال. كيف يتم مقارنة وتمييز الفحص العقلاني ونظرية الإيمان؟

إجابة: إنهما متساويان في أن كلاهما لهما الحق كمعيار. لكنهم يختلفون في ذلك ، أولاً ، ينتهي العقل بحقائق أرضية والعديد من الحقائق ، بينما ينتهي الإيمان بحقيقة واحدة وإلهية.

ثانيًا ، يضلل العقل أحيانًا وينحرف عن الحقيقة ويختلط عليه الأمر. والإيمان معصوم من الخطأ والارتباك في الحق.

ثالثًا ، الانشقاق يتبع الفحص الفكري ، والأرثوذكسية تتبع الإيمان.

رابعًا ، يُخرج الفحص العقلاني الحق من العقل ، وفي [حالة] الإيمان ، يتبع العقل الحق

خامسًا: الفحص الفكري لا يكافأ ، بل الإيمان يكافأ ويمجد.

هذا كل شيء من أجل هذا.

عن غيرة الله وتعجبه

سؤال. كيف يتفاجأ الله؟

إجابة: نقول تعجب وإعجاب للحرمان وانسكاب الفكر. وهذا إما صادم أو مبالغ فيه. على سبيل المثال ، فإن حرمانك من الحواس يُدعى التخدير أو الذهول ، والحرمان من الذهن و الاندهاش وفقًا لبولس الذي اختُطف (كورنثوس الثانية 12: 2) ، وفقًا لداود ، الذي تفاجأ (مزمو 115: 11) ، بحسب آدم الذي ذهل (تكوين 2: 21).

الاندهاش تأتي من حب الحبيب ، لأن الحبيب يترك عقله وحياته وكل شيء ويعتبرهم من أحبائه.

كما اعتبر الرسول أن حياته هي حياة المسيح قائلاً: "لست أنا من أحيا بل يسوع المسيح هو الذي يحيا" (غلاطية 2: 20). وبنفس الطريقة ، يُطلق على محبة الله الممتازة للكائنات عجبًا ، أي الكشف عن الكائنات وتغمورها وتتحد مع طبيعتها التي لا تتغير. لهذا السبب ، سمي الله بطرق رائعة.

"يا لمعق العظمة" (رومية 11: 33) ،

"آه إنك أنت خالق المياه" (جوديث تي 17) ، إلخ.

سؤال. كيف الغيرة في الله حسب "أنا إله غيور" (خروج 20: 5) ، لأن الحسد هو المرض فينا.

إجابة: فكما يقال أن يقظة الله ، وغضبه ، ودهشه ، كذلك الحسد ، لأنه غير موجود ويقال.
مرة أخرى ، الحسد له نفس الاسم. الحسد هو حقد وبعث ، فبحسب ذلك "دخل الموت إلى العالم بحسد النقاش" (حكمة سليمان 2:24). المحبة والرغبة هي أيضًا حسد ، حيث: "كن غيورًا على النعم الصالحة" (كورنثوس الأولى 12:31). والمحبة والشوق يسمى حسد الله.

مرة أخرى ، يشمل الحسد بشكل طبيعي حب الذات وكراهية الآخرين. وغيره الله هي محبة للآخرين وليس كراهية ، لأن الحب هو أولويات الله ، مثل لهيب النار. وبما أن العجب هو ميزة للمعرفة ، فإن الحسد هو ميزة للإرادة.

إنه أيضًا غيور وحسود ، أي أنه يشعر بالغيرة كمحب ، وحسود مثل محبوب ، يجذبنا إلى حبه. كما أنه يشعر بالغيرة من نفسه ، لأنه لا يدفعه الآخرون ، مثلنا ، إلى الحب ، ولكنه مدفوع إلى الحب والمحبة بنفسه. و "أنا غيور ولا أريد مجدي لشخص آخر" - "مجده" يشير إلى الشخص الذي هو صورته ثم مجيد الله. و "الآخر" هو الشيطان ، التنين الثائر الذي أسر الناس. لهذا نزل إلى الجحيم وخطف النفوس من فم الوحش.

عن الحب و الخير

سؤال: كيف يُدعى الله محب ومحبة ومحبوب؟

إجابة: أولاً ، كسبب ووالد. فيما يتعلق بالثالوث ، يفسر البعض هذا على النحو التالي. الأب محب والابن محبوب والروح القدس محبة.

ثانيًا ، لأن جوهر الله هو المحبة (راجع يوحنا الأولى 4: 8 ، 16) ، وهو يدفعنا إلى الحب ويدفعنا إلى محبته.

ثالثًا ، لأنها تولد الذات تسمى المحبة. ولأنه لطيف وجميل يسمى محبوب. ويطلق عليه الحب ، لأنه يقودنا إلى نفسه. وهي قوة دافعة ، تظهر ، وتوحد ، وهذه هي آثار الحب. هذا هو سبب تسميته بالحب.

رابعًا ، المحبة كبدائية لنا ، والمحبة تأكيدًا لنا ، والحبيب باعتباره اكتمالًا لنا. وهكذا ، فإن بدايتنا ووسطنا ونهايتنا هي الخير ، لأننا أتينا قبل الخير ، وثبتنا في الخير ونحن مكتملون بالخير. إذن فالخير هو بدايتنا ونهايتنا.

والخير نفسه لا يبدأ ولا يعرف الخوف. وبنفس الطريقة ، الحب ، والصدق ، والحكمة ، إلخ.

سؤال: هل الخير أم المحبة هو الأول في الله؟

إجابة: في اللاهوت ، لم يقال هذان أولاً وأخيراً ، لأنهما فيهما قوى متساوية. ومع ذلك ، وفقاً لمعرفتنا ، فإن الخير أكثر عمومية من الحب ، لأننا نقول إن الحب خير ، والصدق خير ، وما إلى ذلك ، تمامًا كما نقول إن الإنسان حي ، والحصان حي ، وما إلى ذلك.

ومع ذلك ، في طريق خلق الكائنات ، فإن الحب يسبق الخير ، لأنه كان مدفوعاً بالحب لتحسين المخلوقات ورعايتها.

عن أفسس 3:18

سؤال. يقول الرسول بولس: "ما هو عرض الله وطوله وعمقه وعلوه" (أفسس 3:18)؟

إجابة: العرض هو الحكمة ، والطول قوة ، والعمق هو حقيقة غير معروفة ، والارتفاع هو حقيقة لا يمكن الوصول إليه.

يقول القديس ديونيسيوس: "كل جسم ثلاثي الشكل" ، أي ، [له] عرض وطول وعمق. العريض هو طريق الله الواسع ، وهو عنايته لجميع الكائنات. الطول ، الذي ليس عريضاً ولا شاسعاً ، ولكنه طويل فقط ، أي أنه يمتد بالقوة [يصل] إلينا جميعاً. والعمق الذي هو سر غامض وجهل لكل الكائنات أي أنه مستتر حسب العمق والعلو عند الجهل.

يقول آخرون أن اتساع الله هو المحبة ، ومع المزيد من المحبة فإنه يحفظنا من الأوهام. وطول الأناة هو الصبر الذي يحتمل به الشر ويغفر الذنوب بالتوبة. السمو حكمة تفوق أي فكر ، وكل شيء يقف أمامه عارياً. والعمق هو العدل الذي به يدين الشر ، حسب قوله: "ابتعدوا عني أيها الملعين إلى النار الأبدية" (إنجيل متى 25:41). ويقول داود: "برك مثل أعماق كثيرة" (مزمو 35:7).

يظهر هؤلاء الأربعة أيضاً في تدبير ابن الله. أي الطول هو حبه الثابت حتى نهاية [العالم] ، والعرض هو كل الأمم البشرية ، والعمق الذي نزل إلى الأرض والجحيم ، والارتفاع الذي رفعه إلى السماء.

ألفا وأوميغا

سؤال. ماذا يعني أنه قيل في الرؤية: "أنا ألفا والأوميغا" أي ألف ولأيا (رؤيا 17)؟

إجابة: الفكرة هي أن ألف هو الأول ، واللياً هو الأخير ، أي أنا الأول مع ألوهيتي ، وأنا الأخير مع إنسانيتي ، لأن الإنسان هو الأخير بين المخلوقات.

ثانياً ، أنا بداية ونهاية كل شيء ، لأن كل شيء جاء إلى الوجود من كلمة الله وسينتهي بنفس الكلمة.

ثالثًا ، أنا بداية الخلق والعناية الإلهية ، نهاية كل الكائنات.

رابعًا ، وبما أنها البداية والنهائية ، فهي أيضًا لا بداية لها وأبدية.

خامسًا ، إنها بلا بداية مع الألوهية والبشرية ، لأنه كما أن الألوهية ليس لها بداية ، كذلك ليس للبشرية نهاية.

سادسًا: بداية الكنيسة كأساس والنهائية كقبة وكملء.

سابعًا ، يقول أيضًا البداية والنهائية كمعرفة ، لأن بداية ونهائية الكائنات مدرجة في معرفته الأكثر نضجًا.

ثامنًا ، بداية الوعود ، نهاية النتائج.

تاسعًا: أول النعم في الحاضر ، ونهائية المجد في الآخرة.

عاشرًا ، بداية الشرائع ، نهاية الحق ، سواء في العهد القديم أو الجديد.

هذا كل شيء من أجل هذا

عن الحيوانات بأربعة أشكال

سؤال. ماذا تعني الحيوانات ذات الأشكال الأربعة التي رآها حزقيال (انظر حزقيال ١٠: ٢٠-٢٢)؟

إجابة: أولاً ، كانوا يرمزون إلى الصفات الطبيعية لأبناء الأرض ، أي الإنسان - الفكر ، الأسد - الغضب ، الثور - الرغبة ، النسر - العدالة ، وفقًا لـ [تخصص] الطيران عالياً.

ثانيًا: أن الجالس عليهم هو رب السماء والأرض والبحر ، لأن النسر سماوي ، والإنسان أرضي ، والحيوانات من البحر.

ثالثًا ، لأن الحيوانات الأربعة ملكية. النسر من الطيور ، والثور من البهائم ، والأسد من الوحوش ، والإنسان من جميع الحيوانات ، والجالس عليها هو ملك الممالك.

رابعًا ، يقصدون المخلص. الأسد لأنه ملك ، والثور لأنه كاهن وليتورجيا ، والرجل لأنه الله المتجسد ، والنسر هو الروح المعطى من فوق.

خامسًا ، قصدوا المبشرين الأربعة. الرجل ، متى ، لأنه أظهر إنسانية الكلمة ، الأسد ، مرقس ، لأنه بشر بالإنجيل بشجاعة ، [عن] قيل: "كان مع الوحوش" (إنجيل مرقس 1:13) . الثور ، لوقا ، الذي كتب قصة طويلة ، لأن الثور كان يُدعى أيضًا سمياً ، والنسر ، يوحنا ، الذي بشر بالكلمة من فوق.

سادسا ، إيرينوس يوثق بطريقة مختلفة. يرمز الأسد الملكي إلى يوحنا الذي أظهر أنه منذ البداية كان الكلمة الله وملكا أبديًا.

يرمز الثور المجتهد إلى وصف لوقا لبسط سلسلة نسب الرب الواسعة. النسر السريع لمقرس الذي أظهر البداية التي خلقتها نوبة الروح. الرجل ، ماثيو ، الذي أعلن الولادة الشرعية.

سابعاً ، الرجل فينا الكلمة ، والأسد غضب ، والثور رغبة ، والنسر يحلق بالمعرفة ، ودائماً يفكر في ما هو أعلى.

ترجمة

فارانت (اکوب) کوردموسیان

تدقيق و تصحيح

صونيا کوردموسیان

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

Աստուած, բարի, չար, Աստուածգիտութիւն, Աստուածտեսութիւն, սէր, բարութիւն, նախանձ, չորեքկերպեան կենդանիներ, առաքինութիւն, արդարութիւն, աստուածային էութիւն, Սուրբ Գիրք, Արարիչ, հրեշտակներ, ճշմարտութիւն, հաւատք, Գրիգոր Տաթևացի, Գիրք հարցմանց, Տաթևի վանք:

РЕЗЮМЕ

В тексте кратко излагаются некоторые биографические факты Святого Григора Татеваци. Некоторые вопросы и ответы из его «Книги вопрошений» были переведены на арабский язык: о добре и зле, о познании Бога, о том, чтобы видеть Бога, об истине и вере, о Божьем удивлении и ревности, о любви и доброте, Ефессянам 3:18, об Альфе и Омеге, о четырехликих живых существах.

SUMMARY

The text summarizes the biographical features of St. Gregory of Tatev. Some questions and answers from the «Book of Questions» written by him have been translated into Arabic: on good and evil, on the knowledge of God, on seeing God, on truth and faith, on God's wonder and envy, on love and kindness, on Ephesians 3:18, on Alpha and Omega and on living creatures with four faces.

ԼՈՒԻԶԱ ԳԱՍՊԱՐԵԱՆ

Բանասիրական գիտ. թեկնածու, ՀՀ ԳԱԱ ԳԻ

ԴԻՔԷՆՍԻ «ՍՈՒՐԲՄՆՆԴԵԱՆ ԵՐԿԵՐԸ» ԶԱՅ ԳՐԱԿԱՆ ԱԽԱՆԴՈՅԹԻ ԼՈՅՍԻ ՆԵՐՔՈՅ

Յօդուածը նուիրուած է ԺԹ. դարավերջի եւ Ի. հարիւրամեակի սկզբի ռուս եւ հայ գրական-մշակութային միջավայրում Չարլզ Դիքէնսի՝ «Սուրբ Ծննդեան պատմութիւնների» գրական ազդեցութեան վերհանմանը: Մշակութային փոխանցման լոյսի ներքոյ ուրուագծում են գեղարուեստական թարգմանութեան հայեցակարգին վերաբերող մի շարք հարցադրումներ՝ ի յայտ բերելով Դիքէնսի վէպերի ժառանգութեան եւ թարգմանութիւնների գործուն ընկալման իրողութիւնները Հայաստանում (յատկապէս Արեւելեան Հայաստանում): Ցաւով նկատուում է, որ հայերէն թարգմանութիւնները մեծաւ մասամբ կատարուել են ռուսերէն թարգմանութիւնների «միջնորդութեամբ»: Աւելին, ուսումնասիրութիւնը ցոյց է տուել, որ «Սուրբ Ծննդեան պատմութիւնների» վաղ թարգմանութիւնները ենթարկուել են զգալի ձեւափոխութիւնների՝ ելնելով ռուս եւ հայ լեզուամշակութային առանձնայատկութիւններից: Հիմնուելով Դիքէնսի ստեղծագործութիւններին՝ իբրեւ եզրակացութիւն նշում է, որ վաղ վիկտորիանական շրջանի Անգլիայի ընկերային-մշակութային համապատկերը գրեթէ հաւասարապէս հեռու է ռուս եւ հայ իրականութիւնից: Յարգինս ասուածի մշակութային փոխանցումը յանգեցրել է թարգմանութիւնների զգալի փոփոխութեան:

LUIZA GASPARYAN
Ph. D., Institute of Literature, NAS

DICKENS'S "CHRISTMAS CAROLS" THROUGH THE PRISM OF ARMENIAN LITERARY TRADITION¹

The popularity and evaluation of Charles Dickens's literary creativity in Armenia had a peculiar history, the specificity of which is determined by both historical, cultural and literary factors. Having been focused on the issues of existentialism and self-consolidation, the Armenian literary tradition took the path of the national-cultural heritage revival. One cannot fail to observe that the rapid changes in the world political-economic sphere and the implementation of industrialization led to reformulation of the literary tradition agenda. Those factors were not neglected by the Armenian literary realia of the XIX century, especially in Eastern Armenia, as a part of Russian Empire.

Many Armenian critics have repeatedly noted that the Armenian literature of the XIX–XX centuries was formed and developed under the beneficial influence of Russian classical literature and Russian translations of European classics. Many representatives of the Armenian cultural- literary elite studied Russian philology in the gymnasiums of the Russian Empire (Moscow, St. Petersburg, Astrakhan), and a profound knowledge of Russian literature made it possible embark into laborious work of translating not only the Russian classics, but also European authors – through the mediation of the Russian language and literary culture.

The translation process is perceived as an intertwinement of two cultures; the culture of original text and the translation text with the predominance of one or another. It is a process of original text "fraction" through the paradigm of contextual interpretation. Some theoretical approaches in the field of translation studies show that considerable attention is paid to the cultural aspect of translation, as well as the transmission of the cultural value of the source text. The pivotal factor of translation activity is cultural transfer, as a means of linguo-cul-

¹* Ստացուեի է՝ 10.10.2023, գրախօսուեի է՝ 15.10.2023; էլ. հասցէ՝ luisa.gasparyan83@gmail.com: Խմբագիր՝ Գէորգ Սարեան:

tural enrichment, which aims at triggering the cultural revival spectrum of the given nation².

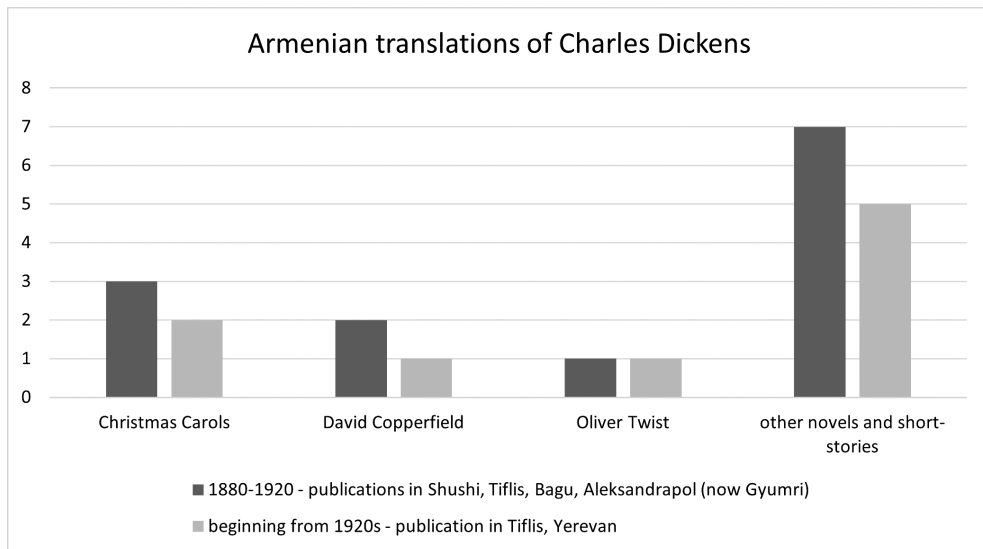
Based on historical testimonies and the travelogues of many diplomats, missionaries, scientists and merchants, many theorists underlined the role of Armenians in the Eurasian space and areal as a medium of cultural exchange between Eastern and Western civilizations.³

At the end of the XIX century, the Armenian cultural elite focused on the formation of education and cultural centers for common people and a special place was given to the education and upbringing of schoolchildren. In this regard a major role was given to the magazines and newspapers such as “Murch”, “Masis”, “Taraz” and others, which aimed at transferring poetic, moral, artistic (with the formation of a sense of ethics, morality, the desire for beauty) educational values. Armenian magazines, newspapers and private printing houses presented to the Armenian public the heritage of world literature,

Without deviating from the Armenian literary agenda of the time, the translations of Dickens’s creativity into Armenian led the target reader to the discovery of artistic anthropology and social romance with the shades of urban realism. One cannot fail to observe that the fate of Dickens’s works in Armenia was connected both with Russian (in Russian Empire Charles Dickens had popularity as a belletrist) and Western literary and translation traditions. His works were translated for both Eastern Armenian (published in Shushi, 1891, twice in Tiflis, 1897, 1904 journal “Murch” N 10, 11, Bagu, 1900, Aleksandrapol, 1894, Yerevan in different periods up to 2003) and Western Armenia (Constantinople, 1928) readers, as well as in the Armenian cultural centers and the Armenian Diaspora (Beirut, Athens, 1928, etc). On the cover of the publications in the Eastern Armenian the phrase – “permitted by censorship” is noticeable, which indicates that the translated or an abridged version was either intended for children (which is most likely), or assumed some censorship restrictions in terms of content.

² **М. Эспань**, История цивилизаций как культурный трансфер (пер. с франц.; под общ. редакцией Е. Е. Дмитриевой), Москва, 2018. **Д. Бахман-Медик**, Культурные повороты. Новые ориентиры в науках о культуре (пер. с нем. С. Ташкенова), Москва, 2017.

³ **В. Брюсов**, Об Армении и Армянской культуре: Стихи. Статьи. Письма. Ереван, 1963; **David M. Lang**, Armenia: Cradle of Civilization, Second edition, London, 1978; Archbishop **Mesrob Ashjan**, The Etchmiadzin Chronicles, Recorded by Missionaries and Merchants, Diplomats and Scholars, Yerevan, 2003.



In the Armenian social and cultural environment, Dickens's prose, its historical and literary specification (as related to romanticism or realism) became the subject of lively discussion and different interpretations. In the literary journal "Ardzagan" – «Արձագանք» (1892, N 100) an interesting commentary was given by an anonymous critic behind the initials "K.N." (presumably, the author of the comment was Nikoghayos Karamyan, a well-known literary critic, lecturer at the Gevorkyan Seminary of Etchmiadzin). Highly evaluating the Armenian abridged translation of "Martin Chuzzlewit" (in the Armenian version – "The School of Life") made from the Russian language by the priest Gyut Aganyan, the anonymous author indicated that Dickens's novels were efficient for education and upbringing of the younger generation in terms of psychological endurance and morality⁴. In the commentary there was a hidden critique of the realistic novels which unfolded the nuances of pessimism, social pragmatism and the harsh "side of life", which could be like "mortal blow" for humanity. The mankind, especially the young soul needed optimism and positive pathos. And it's not in vain that afterwards the translation of "Christmas Carols" entered as belletristic creativity into the festive lives of the Armenian readers.

⁴ «Արձագանք», 1892, N 100: See also Վ. Փարթամեան, Հայ-անգլիական գրական արձնություններ, Երևան, 1975, էջ 250–255:

In general, Dickens's series of "Christmas Carols" were of particular interest, as in the early and middle Victorian era the cult of family hearth and warm relations became a special tradition, and the author successfully integrated Christmas traditions and his own childhood memories of the holiday in his Carols.

According to the critic G. Bloom, the creation of "Christmas Carols" was largely the effect of some biographical and historical factors that were intertwined with each other. In 1843, when "Christmas Carols" was written and published, Dickens's literary career was in crisis. After a rapid success of such novels as "The Pickwick Papers" and "Oliver Twist" there was a decline in Dickens's literary popularity, which was noticeable after the publication of "Martin Chuzzlewit" as evidenced by the low readership (and, accordingly, the decline of writers' incomes). In despair, Dickens even intended to give up his literary career smoothly switching to writing travelogues, which after his journey to the United States brought him a certain success. If it were not for the above-mentioned life circumstances and external factors, "Christmas Carols" and most of the author's successful novels and works would probably never have been written⁵.

"Christmas Carols", published shortly before Christmas in 1843, had an instant success. The first edition of 6,000 copies was sold out in a few days. The social message of Christmas stories was also important – the connection of readers with the real source of human happiness and the rejection of selfish life. The parables from Christian teachings were vividly manifested in the narration, which became the basis for the revival of the celebration of Christmas. The atmosphere of Christmas in "Christmas Carols" is conveyed in such a paradigmatic way that it has become part of not only British literature, but also, through a process of cultural transfer, entered the literary traditions of some other nations of Christian religion and culture. In addition, there are many other interpretations and versions of the Dickens Christmas story illustrating in theater, cinema, comics, etc. In this connection, Paul Davies, proposes to put distinction between Dickens's "Christmas Carols" and other paraphrased or reinterpreted versions of the same motif. For example, the animated version of Disney, with the character of Scrooge McDuck, the stingy uncle of three comical duck nephews can be included as a paraphrased version⁶.

⁵ H. Bloom, Charles Dickens's A Christmas Carol, New York, 2011, pp. 16–19.

⁶ P. Davis, Critical Companion to Charles Dickens. A Literary Reference to His Life and Work, New York, 2007.

Gradually, the genre of Christmas stories entered the festive mood of people all over the world, and many periodicals were eager to publish amazing magical stories. In Russian reality F. Bulgarin, who in New Year editions of his newspaper “Northern Bee” («Северная пчела»), published funny stories revolving around “New Year’s visions” or “the spirits of the Old Year and the New Year”. Similar stories were published annually with the overtones of humor, magical predictions and moral-philosophical conversations⁷. The popularity of “Christmas Carols” in Russia was determined by another moment: in Russia, Christmas was merely a church feast and it was only until the middle of the 19th century when Christmas holidays were celebrated among the worldly people. In England the tradition of celebrating Christmas was much earlier, and Christmas holidays became family holidays, celebrated around the table or near the fireplace. According to Chesterton, through Christmas stories, Dickens revived the concept of warmth and solidarity between family members, shielding them from the outside world⁸.

Soon the popularity of Christmas stories spread throughout Russia, which also influenced on Eastern Armenia popular-literary realia. The first abridged and interpreted versions of “Christmas Carols” were published in Shushi (1891) and in Tiflis (1897). Later in 1904, the famous Armenian periodical “Murch” published the full literary translation of Dickens’s “Christmas Carols”.

In Western Armenia Dicken’s Christmas stories were translated from the original in 1928, Constantinople by N.K. Gontayan. It’s noteworthy to mention that novellas and short-stories dedicated to Kaghand (New Year) and Christmas were also widely spread in the Western Armenian literary sphere, especially in the end of the XIX century – Yeghia Termirchipanchyan, Yerukhan, Yervand Otyan, Gegham Barseghyan, Mari Svachyan, Sipil, Levon Shatrya and others were the vivid representatives of the subgenre, who published in various Christmas stories in Western Armenia literary periodicals. In this connection G. Hakobyan emphasized the underlying principles of the comprehensive illustration of Kaghand and Christmas customs and traditions in Armenian literary realia:

– Both Kaghand and Christmas in the Armenian literary works were sometimes illustrated identically through the paradigm of national-theological perception;

⁷ Е. Душечкина, Русский святочный рассказ. Становление жанра, Москва, 2023.

⁸ Г. Честертон, Диккенс. Календарные обычаи и обряды в странах зарубежной Европы. XIX – начало XX в. Зимние праздники, Москва, 1973, с. 86–91, 155.

- The theosophical-ontological aspect of the birth of Christ is always present in the texture of each Armenian literary creativity;
- The doctrine of Christian belief and ideology is the quintessential plot of the literary works;
- The strict maintenance of traditions and rituals is noticeable in each piece of verbal creativity⁹.

In the Russian and Armenian cultural environment, Dickens's "Christmas Carols" formed a bright and specific literary reputation which became stimulus for creating their own festive stories. An expressive and unique manifestation of the "cultural transfer" of Dickens's Christmas stories in the Russian social environment was made by the famous writer and Slavophile philosopher A.S. Khomyakov. The latter "transforms" Dickens's story "A Christmas Carol" in 1844 into a story called "Bright Sunday" («Светлое Воскресенье»). The action of the story is transferred to Russia, where the Christmas holiday is replaced by the Orthodox holiday of Easter – Christ Bright Sunday – Светлого Христова Воскресенья¹⁰.

The contextual adaptation or interpretation of Dickens's story by A. S. Khomyakov consistently met the requirements and expectations of the Russian linguistic and cultural realia, so that one can rightfully consider it as a Russified translation. The first thing we pay attention to in A. Khomyakov's translation/interpretation is the change in anthroponyms – the names of the characters and the main figures in accordance with the parameters of Russian culture, for example: Scrooge's sister Fen is translated as Katya, his sisters son *Dmitry*, *Scrooge* – *Skrug*, *Marley* – *Marlov*, *Krechet* – *Krichev*, *Little Tim* – *Styopa*. Other names are consistently Russified as well, such as *Petya*, *Ivan*, *Masha*, *Martha*, *Fedor Ivanovich*, *Matrena Vasilievna*, etc.

Dickens focused on the moral and ethical transformation of an individual, however unlike the main purpose of Dickens's original, some Russian and Armenian translators implemented the strategy of the contextual transformation, through the intense involvement of the biblical parables, moral and philosophical traditional specification in the Christmas stories. Thus, through the paradigm of the cultural transfer, the context of "Christmas Carols" passed the process of Russification and Armenianization.

⁹ For comprehensive perception of Kaghand and Christmas traditions in Western Armenian literature, see **Գ. Յակոբեան**, Ս. Էջմիածնի երախտաւորները (Ուսումնասիրութիւններ եւ յօդուածներ), Ս. Էջմիածին, 2007, էջ 385–393.

¹⁰ See http://az.lib.ru/h/homjakow_a_s/text_1844_svetloe_voskresenie.shtml

In Armenian literary tradition Dickens's "Christmas Carols" gave rise to about seven different Armenian translations or adaptations, which give us a solid background to prove that the interest towards the Christmas stories was high in the Armenian society. The translation and publication of Armenian Christmas stories had the same moral and ideological intentions as in Dickens's original.

One of the Armenian paraphrasis of "Christmas Carols" may have been made from an abbreviated Russian translation in Shushi in 1891 anonymously (the translator is marked with the Armenian letter "Մ. Տ-Դ" – English "M, T-D"). One cannot fail to observe that both translations (Russian and Armenian) are stylistically similar in the following parameters: 1. change in anthroponyms – the names of the main and secondary characters in accordance with Russian or Armenian culture. The names of the characters are transformed into Armenian based on the names of the holy book: Scrooge's sister Fen is translated as Մարիամ – Mary (p. 18), his school friend as Պօղոս – Peter (p. 18), his sister's son Յովհաննէս – John (p. 40), Little or tiny Tim as Մաթէոս – Matthew (p. 42).

If we compare the Russian translation of Rutzen with the Armenian anonymous translation done in Shushi, it becomes obvious that both translations are to a large extent similar to each other, which leads us to the conclusion that the Armenian translator took the Russian version (although there is no clear mention of that circumstance on the preface or in the front page of the Armenian translation). It is also possible that the translator's preface (if there was one) did not reach us.

Let's compare the epilogue of "Christmas Carols" with the Russian translation of Rutzen and the Armenian one (Shushi, 1891);

С тех пор Скрудж стал совсем другим человеком. Он всю остальную жизнь свою помнил учение Христа. И когда, бывало, вспоминал свою горькую одинокую жизнь, проведенную им в непосильных трудах и обременении себя неведомо для чего-то, восклицал: – Правду сказал Христос: «Придите ко мне все трудящиеся и обремененные, и Я успокою вас». Скрудж получил успокоение, как только бросил жить для самого себя (Рождественская сказка. М.: Посредник, 1887, с. 36)

Եւ իր ամբողջ կեանքում հետեւում էր Քրիստոսի Աւանդանին: Եւ հէնց որ երբեմն յիշում էր իւր անաշուայ կեանքը, երբ ծանրաբեռնուած զանազան գործերով ասշուում էր, ինքն էլ չիմանալով թէ՛ ինչու համար, միշտ բացականչում էր. «Ճշմարիտ է ասել Քրիստոսը. – «Եկա՛յք ան Իս ամենայն վատուկեալք եւ

բեռնատրք՝ եւ Ես հանգուցից զձեզ»: (Զ. Դիկկենս, Ծննդեան Պատմութիւն, փոխադրեց Մ. Տ.–Դ., Շուշի, Մահմէտի Յսկոբեանցի տպարան, 1891 թ., էջ 42)

Whereas the original has the following epilogue:

He had no further intercourse with Spirits, but lived upon the Total Abstinence Principle, ever afterwards; and it was always said of him, that he knew how to keep Christmas well, if any man alive possessed the knowledge. May that be truly said of us, and all of us! And so, as Tiny Tim observed, God bless Us, Every One!

One cannot fail to observe that there is a clear tendency to reverberate the form and meaning of narration to make it more accessible to target readers' world-view and for the natural smoothness of cultural-religious peculiarities. Needless to say, that by employing the method of cultural transfer the translator solved double challenge: input a piece of world literature into national agenda and juxtapose it with the local sociocultural realia by using the strategy of generalized contextual transformation.

One cannot fail to observe that Dickens's novels had an undeniable influence on famous Armenian authors, such as Perch Proshyan, who translated the novel "David Copperfield" (Tiflis, 1898) into Armenian. Reflecting on the features of realism as an artistic direction, the Armenian critics repeatedly turned to the creative experience of Charles Dickens. The Armenian literary agenda could not but react to the rapid world transformation – capitalism, prominent with the concentration of industrial production and capital in the large cities changing dramatically the social and cultural life. Well-known Armenian authors, in particular Shirvanzade, highly appreciated the objective description of city in Dickens's verbal creativity, and it was Shirvanzade who created in his works a miniature of industrial cities and revealed the characteristic features of the Armenian society and industrial elite.

The Armenian periodicals also had its own popular Christmas stories with the aim of creating something magical and optimistic. The "Oriental Press" – «Արեւելեան մամուլ»¹¹ published Sarkis Palapanyan's Christmas story for children and adolescents with similar philosophical and ideological messages in the framework of Armenian cultural narrative. The Christmas novella is accompanied by a brief commentary, which presented the purpose of the story and the essence of Christmas traditions in the world literary culture. Presenting the terminology of different countries, such as German – *Weihnachten*, Italian – *Natale*, French – *Noël*,

¹¹ «Արեւելեան մամուլ», 1895, N 3, էջ 70–75:

Russian – *Рождество Христа*, Sarkis Palapanyan sought to convey to the younger generation the profound significance of Christmas in the culture of other nations. Describing some Christmas traditions, such as decorating Christmas tree, preparing delicious food and sweets on Christmas eve and presenting gifts to relatives, the story-teller indicated that his goal was to create such novels for the Armenian children.

The action of the children's Christmas story took place in Smyrna, the main character of the work was Zarmair, the son of a wealthy businessman, who was joyfully riding a bicycle on the eve of the Christmas holiday (underlined on January 5th, according to the Armenian Church), when he suddenly ran into a child from a poor family and hurt him. The whole story then revolved around two children's judgments about the unfairness of life. The narrative of the story indicated three main holidays in the Armenian tradition: Kagand (New Year), Christmas, Easter. Returning home, the child entered into a dialogue with his rich father, asking why God created evil and good, rich and poor. Father's answer had a deep moral and philosophical context, thus;

«Նա մարդը բանական ստեղծեց, երկիր մը շնորհեց անոր որ իր աշխատութեամբ արգասաւորէ, ծառեր որ տան ծաղիկներ ու պտուղներ, բաշխեց նիւթական բարիքներ, որոնցմէ կը օգտուի մարդս իր տաղանդին չափովը: ...Թշուառութիւնը չարիք մ'է զոր մարդ իր սխալմունքներով կը բերէ իր վրայ: Թշուառութիւնը գրեթէ միշտ կը հալածէ պարսպորդները, ծոյլերը, շռայլները եւ ոնրագործները»¹².

The central idea of the context was the following: God created mankind as a rational being so that he could be useful to the earth with his diligence and talent. Misfortune, however, was the evil that a person might have brought upon himself because of his mistakes. The inactive, lazy people and those who sinned a lot often became unhappy and miserable. The Christmas story for children is to unfold the values: faith and diligence, welfare, the richness of human soul. The father convinced his child, that the person himself was the source of his troubles, illustrating examples from the Holy Script. Within the framework of the story, the young readers revealed important message – the difficulties of life can be overcome through faith and belief in the birth of Jesus Christ and the miracle of Christmas holiday (January the 6th).

¹² «Արեւելեան մամուլ», 1895, N 3, էջ 74–75.

If the work of Sargis Palapanyan finished with optimistic overtones (Zarmair gave his toys, clothes and holiday sweets to a poor boy), then Shirvanzade's story "Ako's Christmas Tree" – «Ակոյի տոնածառը» had a tragic ending. The drama of the worker Galoust, earning honestly all his life, had no money to buy a Christmas tree for his only son -Ako. In despair, Galouste committed a theft and bought a Christmas tree for the child. However, his spiritual world was in great turmoil, and his character was in decline. He had only one wealth – impeccable innocence and honor, which he lost. Analyzing his character, we can conclude that he is a deeply religious person. The simplicity and purity of Galust's character are revealed in the following context: 1. when the manager accused another person for theft, Galust voluntarily confessed his guilt; 2. since he was an honest and simple person, the manager left his home to his family, but deprived him of his job.

Five days later, Galust's body was found on the beach, in the sand, he committed suicide. The pivotal ideology of the story is Dostoevsky's philosophy of "crime and punishment" – each crime has its punishment¹³.

Thus, the Armenian literary culture revival can be manifested through the cultural transfer and the phenomenon of translation. The article sketches the reception of Dickens's heritage in Armenia in the late XIX century as a "classic", whose literary reputation had already been established in the Russian literary field. One cannot fail to notice that Russian translations of Dickens played "intermediary" role, especially in Eastern part of Armenia. The conclusion is made that the socio-cultural context of early Victorian England illustrated in Dickens's works are almost equally alien to the Russian and Armenian cultural realia. The cultural transfer led to the significant modification in translations for the purpose of smooth perception in significantly different socio-cultural and geopolitical usus.

¹³ See **Ալեքսանդր Ճիրվանզադե**, Երկերի լիակատար ժողովածու, հատոր ութերորդ, Երևան, 1934, էջ 329-338. see also **S. Freud**, Dostoevsky and Parricide, in J. Halliday/P. Fuller ed., The Psychology of Gambling, 1974, p 170; <https://pep-web.org/search/document/GW.014.0399A?page=P0399>

https://hy.wikisource.org/wiki/Ակոյի_տոնածառը

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

Գրական ասպարեզ, Չարլզ Դիքենս, Շուշի, Մահտեսի Միրիջան
Յակոբեանցի տպարան:

РЕЗЮМЕ

Статья посвящена исследованию литературной роли книги «Рождественские повести» Диккенса в русской и армянской литературной средах конца XIX и начала XX веков. Обозначается спектр вопросов касательно концепции художественного перевода в свете культурного трансфера. В анализе очерчивается ситуация активной рецепции наследия и переводов произведений Диккенса в Армении (особенно в Восточной Армении) конца XIX, которые, в большинство случаев, переводились через «посреднической» роли русских переводов. Исследование показало, что ранние переводы «Рождественских повестей» были видоизменены: наблюдаются определенные трансформации, обусловленные лингво-культурными особенностями как русской, так и армянской среды. Делается вывод, что социокультурный контекст ранней викторианской Англии (на материале работ Диккенса) практически одинаково чужд как русским, так и армянским культурным реалиям. Соответственно, культурный трансфер привел к значительной модификации переводов с целью более плавного восприятия контекста, в существенно отличающихся социокультурных и геополитических условиях.



ԳԵՈՐԳ ԷՆՁԱՑԵԱՆ

Բանասիրական գիտ. թեկնածու

ԱՆԻ ԽՈՒԴԱՎԵՐԴԵԱՆ

Բանասիրական գիտ. թեկնածու

ՄԱՅԵԱ ԳՐԻԳՈՐԵԱՆ

Բանասիրական գիտ. թեկնածու

ԱԼԵՔՍԱՆԴՐ ՇԻՐՎԱՆՉԱԴԵԻ ԹՂԹԱԿՑՈՒԹԻՒՆԸ ԲԱՔՈՒԻ ՀԱՅԿԱԿԱՆ ԹԵՐԹԻՆ

1877–1920 թթ. Բաքուում հրատարակուել է 60 անուն հայկական թերթ: Դրանց մեծագույն մասը կամ կորսուել է կամ դատապարտուած է: Ի թիւս այլոց կորստեան պիտի մատնուելը նաեւ Ալեքսանդր Շիրվանզադէի թղթակցութիւնը յիշեալ քաղաքի ռուսալեզու «Бакы» թերթին: Նրա թղթակցութեան բնագիրը մեզ չի հասել, ուստի հրապարակում է Սարիղամիշի ճակատամարտի սկիզբը վերտառութեամբ յօդուածի պատճէնը (մեքենագիր), որ պահպանուել է Գէորգ Մադոյեանի (1911–1990) արխիւում:

ГЕОРГ ГНДЗАЦЯН

Кандидат филологических наук

АНИ ХУДАВЕРДЯН

Кандидат филологических наук

МАЙЯ ГРИГОРЯН

Кандидат филологических наук

КОРРЕСПОНДЕНЦИЯ АЛЕКСАНДРА ШИРВАНЗАДЕ В БАКИНСКОЙ АРМЯНСКОЙ ГАЗЕТЕ¹

Долгое время на последней странице журнала «Эчмиадзин» печаталось объявление о начале работ по составлению Армянского научно-информационного портала². Совместными усилиями Национальной библиотеки Армении и Фундаментальной библиотеки Академии Наук РА была сформирована обширная цифровая библиотека. Особой оценки, по нашему мнению, достойны те разделы портала, благодаря которым в однокликовой доступности оказались армянские первопечатные, редкие книги и издания³. Несомненно, в этой области проделана огромная работа, но сделать предстоит еще больше. Речь, в частности, об иноязычных армянских изданиях, которые в силу географических, политических и других особенностей по месту издания оцифрованы

¹* *Ստացուել է՝ 13.01.2024, գրախօսուել է՝ 16.01.2024: էլ. հասցէ՝ targmanich1@mail.ru, a_khudaverdyan@mail.ru, grigoryan_maya@mail.ru: Խմբագիր՝ Հրազդան Մադուրեան:*

² Следует отметить, что сегодня, наряду с работами по оцифровке, большое внимание уделяется также изучению печатного наследия армянской письменности и арменоведения, что имеет важное значение для специалистов. Иноязычная пресса, издаваемая в Баку, нуждается в изучении, поскольку Баку был одним из армянских центров Кавказа, и события лучше всего интерпретировались в местной печатной продукции. Однако, к сожалению, такие издания, как «Баку» (о которой идёт речь в статье), невозможно оцифровать или исследовать, поскольку сохранившиеся экземпляры дают лишь смутное представление о содержании газеты. Их полные коллекции, вероятно, сохранились в библиотеках и архивах Баку, но их изучение невозможно в нынешних условиях.

³ **Տ. Չարգարեան, Հ. Ղազարեան, Մ. Գրիգորեան**, Հայ տպագիր ժառանգությունը ւսումնական հոլովոյթում, «Կանն» (Գիտական յօդուածների ժողովածու), 2017, էջ 459–470, (Т. Заргарян, О. Казарян, М. Григорян, Армянское печатное наследие на протяжении веков, «Качар» (Сборник научных статей), 2017, с. 459–470)

Как было упомянуто выше, из периодической печати прошлого может узнать много интересного, и это не только статьи, очерки и иные материалы, но и сами названия изданий, их количество, тиражи, имена авторов и т. д. Как считает Л. О. Гаджиева: «К началу Первой мировой войны в Баку проживало около 215 тысяч человек. Большую часть населения составляли, как ни странно, не коренные жители – азербайджанцы, а пришлое с конца XIX в. население из разных губерний России на заработки в нефтепромышленный город. Больше всего в Баку проживало русских, затем азербайджанцев и чуть меньше армян. Численное соотношение населения отражалось и на периодической печати города. Наиболее разнообразно были представлены газеты на русском языке. Газеты «Каспий» (1881–1919), «Баку» (1902–1918) и «Кавказская копейка» (1910–1916) выходили ежедневно, «Бакинец» (1907–1920) и «Кавказский телеграф» (1910–1916) еженедельно, а журналы «Нефтяное дело» (1899–1920) и «Джигит» (1907–1918) издавались два раза в месяц. На азербайджанском языке выходили три газеты: «Садаи-Хагг» («Голос истины» – 1912–1915), «Игбал» («Благодеяние» – 1912–1915) и с недавних пор «Игдам» («Начинание» – 1914–1915). На армянском языке выходили газеты [«Գործ»] «Горц» («Дело» – 1914), за недостатком средств очень скоро прекратившая свое существование, и [«Արև»] «Арев» («Солнце» – 1914–1919), «неоднократно менявшая своё название и редакторов» (Государственный исторический архив Грузии. ф. 480. оп. 2. д. 956. л. 20.). Ни одна из этих газет, как отмечалось в агентурном отчете Кавказского цензурного комитета, не являлась носителем российских интересов. «И в Баку периодическая печать, – говорилось в отчете, – носит тот национальный отпечаток, хотя он не так рельефно выступает, как в Тифлисе и Кутаиси. Русских газет в буквальном смысле этого слова в Баку нет»⁸.

По поводу демографических сведений автора приведём маленький абзац из статьи Saadat Karimi «The industrialization of oil and the secured place of Баки»⁹, которая, в свою очередь опирается на другого исследователя; и как бы странно это ни казалось с точки зрения современной азербайджанской и не только пропаганды, этноним “азербайджанец” там не встречается ни разу: «Far from being the mere backdrop to any number of sociological developments–

⁸ Л. О. Гаджиева, Там же, с. 65–66.

⁹ См. <https://www.diva-portal.org/smash/get/diva2:1703843/FULLTEXT01.pdf>.

industrialization, socio-economic stratification, the diffusion of nationalism— the oilfields and the industry they housed brought together a diverse array of people— British bankers, Iranian drillers, Russian carpenters, Armenian entrepreneurs—and bound them together (Lund 2013:12)»¹⁰.

Поскольку мы не задавались целью исследования бакинских изданий, вышедших в свет к началу Первой мировой войны, особо сосредотачиваться на этом не будем, а лишь приведём некоторые цифры и факты: в 1877–1920 гг. в Баку издавалось 60 наименований армянских газет, из которых к указанным Л. О. Гаджиевой армянским «Арев»-у и «Горц»-у следует добавить: «Բարի լուր» («Бари лур» «Благовест» 1906–1917), «Թաւրոն եւ ցրաշիտստյոն» «Театр и музыка» 1910–1917), «Ծիւղ» («Цил» «Побег» 1914–1915). «Մեր կեանքը» («Мер Кянкэ» «Наша жизнь» 1914), «Նաւակ» («Навак» «Кораблик» 1914), «Շաւիք» («Шавих» «Тропа» 1914), «Արեգ» («Арег» «Солнце» 1915), «Ներքին» («Нвер ворберин» «Подарок сиротам» 1915)¹¹. Естественно, как уже было сказано, это далеко не полный список.

Одним лишь упоминание, а тем более поименное перечисление 60 изданий уже свидетельствует, каких масштабов потеря грозит армянской периодике и какие нужно приложить усилия, чтобы спасти хотя бы крупницы из этого гигантского наследия изданий, выходивших за пределами Армении.

Упомянутая корреспонденция Александра Ширванзаде, увидевшая свет в бакинской газете «Баку», лишь в малой степени может заполнить эту нишу. Основой нашей публикации послужила машинописная копия из личного архива Геворка Мадояна.

Публикуется без изменений, за исключением орфографии, которая приведена в соответствие с нынешней.

¹⁰ Там же, с. 2.

¹¹ Библиография армянской периодической печати (1794 — 1967), Сводный указатель, Составитель: А. Киракосян, Редакторы и авторы предисловия: Г. К. Костикян и А. Г. Сильванян, Ереван, 1972, с. 486–492, на арм. яз.

НАЧАЛО САРЫКАМЫШСКОГО БОЯ (от нашего корреспондента)

Мы приехали в Сарыкамыш за два дня до начала отныне знаменитого боя. После более чем трёхнедельного пребывания на боевых позициях левого фронта, нам нужно было для нашей цели попасть на правый фронт.

Нас было 6 человек с епископом Хореном Мурадбекяном¹² во главе. Троих из нас, в том числе и меня, приютил у себя местный купец Татевос Мелик-Степанянц, а остальные нашли себе место у какого-то зажиточного поселянина.

Решено было один день посвятить Сарыкамышу. Я 12-го числа рано утром отправился в Мижинкерт¹³ и оттуда на турецкую территорию. О том, что в этот день должно было начаться крупнейшее из всех бывших до того времени сражений с турками, мы ничего не знали, а потому легли спать совершенно спокойно.

Кажется, не было ещё шести часов утра, по крайней мере, на дворе было совершенно темно, когда двери моей комнаты с шумом распахнулись и туда вошли товарищи наши, ночевавшие в другом месте.

—Проснись, турки идут,— сказал один из них.

Я не спал. Бесперывный вой собак у моего окна всю ночь не давал мне покоя. Кстати сказать, везде, где происходили или происходят военные действия, собаки ночами поднимали страшный вой. Особенно интенсивен этот вой в покинутых курдских деревнях и производит он гнетущее впечатление.

Раз в одном селении я заметил следующее. Вечером каждая собака поднималась на плоскую крышу дома своего хозяина и, сев на задние лапы, начинала выть протяжно. Затем ночью все они собирались в одну кучу. Одна из них вставала в середину и продолжала выть, а остальные окружив её, лаляли в унисон хором. Точь-в-точь так, как в старину в азиатских домах женщины оплакивали покойников.

¹² Впоследствии Католикос Всех Армян— Хорен I Мурадбекян Тпхисеци (1932—1938).

¹³ Մճինկերտ, Միջինկերտ — село в Каринской (Эрзурумской) губернии.

На передовых позициях волей-неволей привыкаешь ко всяким неожиданностям, а потому известие о приходе турок в Сарыкамыш меня ничуть не удивило.

Я оделся и решил отправиться на станцию железной дороги. Я полагал, что только там можно добиться более или менее верных сведений.

Пока мы ждали рассвета и заказанного каждому фаэтона, является к нам офицер Д...в, который тоже должен был с нами ехать в Мижинкерт. Он нам объяснил, что случилось то, что допускалось только немногими, а именно, что турки с огромными силами надвигаются на Сарыкамыш и что цель у них - устроить нашему главному отряду нечто вроде Седана¹⁴.

— По моим разведкам, чорохские¹⁵ бои не были простой авантюрой, — продолжал он, — как то полагали и полагают многие, а прологом грандиозной трагедии, которая вот теперь начинает разыгрываться в своевременном получении помощи со стороны Карса.

— Наше счастье, что мы имеем под рукой железную дорогу, — заметил кто-то.

— Которую турки могут отрезать с часу на час, — послышался незнакомый голос. Я повернулся к нему. У дверей сидел пузатый армянин в полинялом пиджаке и широких, как мешок, шароварах. Никто не заметил, как он вошёл в комнату.

— А вы откуда знаете, что они нападут на железную дорогу? — спросил его офицер, несколько озадаченный.

— Нетрудно предположить. К станции Чатах¹⁶ ведёт тропинка, которая очень хорошо известна местным лазам и курдам. Вот они и покажут её турецким войскам. Ведь уже не подлежит сомнению, что здешние наши мусульмане оказывают явную поддержку своим единоверцам.

Как известно, предположение это отчасти оправдалось обстреливанием станции Чатах и взятием в плен нашего санитарного поезда.

Вошёл к нам молодой парень в форме армянского добровольца. Оказалось, что он из дружины К...ч, только что прибыл в Сарыкамыш с поля сражения. Он не был ни ранен, ни контужен, но имел вид полумертвого, до того был

¹⁴ Битва при Седане (1–2 сентября 1870) закончилась разгромом французов и пленением императора Наполеона III прусскими войсками.

¹⁵ Շորիճի — село в Каринской (Эрзурумской) губернии.

¹⁶ Չաթաճի — село в Каринской (Эрзурумской) губернии.

истомлён. Бедняга после долгого боя, весь день и всю ночь без еды и отдыха шёл пешком по горам и ущельям, покрытым глубоким снегом.

Задыхаясь и еле переводя дух, он нам рассказал вкратце о сражении, начавшемся при Иде¹⁷ и закончившемся при Бардосе¹⁸, т.е. в двадцати верстах от Сарыкамыша.

— Значит, турки близко? – спросил кто-то.

— Теперь они должны быть в восьми или в десяти верстах.

— А что стало с партией К...

— Она разбилась на три части. Одна часть погибла, другая с ранеными прибыла сюда, а третья с К... скрылась в горах.

— А много турок?

— Не могу знать, но должно быть очень много, ими покрыты Бардосские горы и ущелья.

В нашем распоряжении был всего один фаэтон, а нас было 11 человек, считая и встревоженную семью приютившего нас купца, которую мы решили взять с собой. К тому же станция железной дороги отстояла от нас в трёх верстах. Так или иначе, мы перебрались туда поочередно в течение трёх часов. Когда я проезжал по местечку, не было заметно никакой паники. Рынок был переполнен местными жителями и солдатами, спокойно покупающими провизию. Очевидно, никто ещё ничего не знал о надвигающейся опасности.

На станции мы встретили массу офицеров и докторов всех чинов. На перроне спокойно гуляли высшие начальники... Сёстры милосердия оживлённо беседовали с офицерами за чаем, Те сёстры, некоторым из которых суждено было попасть в руки турок и несколько дней томиться между жизнью и смертью.

На полотне стоял пустой пассажирский поезд. Его огромный паровоз маневрировал, пыхтя и пуская пар в безоблачное небо. Был замечательно ясный солнечный день с легким приятным морозом. Покрытые белым саваном окрестные холмы и ущелья с особенной яркостью выделяли бархатные ковры тёмно-зелёных еловых рощ. Некоторые отдельно стоящие деревья казались исполинами, сторожащими покой местечка. Свежий снег ослепительно сиял миллиардами бриллиантовых звездочек, точно свадебное одеяние царской не-

¹⁷ Իդ—Село в Карсской области.

¹⁸ Բարդոս— Село в Карсской области на территории исторического селения Պարտեզ (Партез) (Сад).

весты. Красота оригинальная, поразительная, могущая затмить блеск самых роскошных пейзажей зимней Швейцарии.

Да, здесь есть чем восторгаться до опьянения художнику. Можно только удивляться, что до сих пор ни один из кавказских пейзажистов, набивших нам оскомину своими «Араратом», «Казбеком», «Эльбрусом» и «Севанским озером», не додумался воспроизвести на полотне Сарыкамыш в зимнее время.

Разговор кругом шёл о самых обыкновенных вещах. Не было и намёка о приближении неприятеля. Величавое спокойствие, свойственное, быть может, только русскому духу, царствовало всюду. Молодые, почти безусые офицеры с раскрасневшимися от мороза щеками, весело расхаживали на платформе. Нескольким откуда-то появившихся элегантных дам были окружены группой серых шинелей и беспечно беседовали с ними.

Всё было обычно, тихо, спокойно. Только по временам гудок паровоза острым, пронзительным свистом нарушал тишину.

Тем временем там, недалеко от станции, шла таинственная работа русского солдата. Быстро, но бесшумно одна из запасных дружин готовилась к предстоящему бою. Молодой прапорщик запаса раздавал ей патроны. Пришли представители бакинцев и просили его раздать солдатам доставленный из вагона ящик папирос.

По временам, находящийся в конце платформы генерал М... поднимал к глазам огромный походный бинокль и смотрел вдаль, а окружающие его офицеры внимательно следили за выражением его лица. Высокий, стройный, он своим спокойным видом внушал доверие всем.

На склоне горы, отделяющей Верхний Сарыкамыш от Нижнего, показалась длинная лента. На белом фоне она казалась серовато-чёрной гигантской змеей, спирально извивающейся вниз.

— Турки! — шепнул кто-то из бакинцев.

— Да нет же, — улыбаясь сказал молодой прапорщик, — это наши идут на встречу им.

Через четверть часа змея сползла со склона и исчезла налево от нас в ущелье. Остался на виду её широкий хвост. Это был обоз. Он так и застрял там до тёмного вечера.

Около четырёх часов вечера раздался за горой первый залп. Все, находящиеся в станционных комнатах, выскочили на платформу и начали смотреть по направлению к Верхнему Сарыкамышу, где и начался знаменитый бой.

Вначале перестрелка была слабая, но чем дальше, тем она делалась сильнее. Стреляли, как называется, пачками. Сражающихся не было видно, т.к. их заслоняла от нас небольшая гора. Но чувствовалось, что сражение, чем дальше, тем больше приближается к нам.

— Бесспорно, хотят скорее занять станцию, чем местечко,— говорили офицеры.

Не прошло и часа, как на горе, под последними лучами солнца показались первые раненые. Вели их под руки, держа с обеих сторон. По-видимому, снег на горе был покрыт ледяной коркой, ибо как раненые, так и ведущие их по временам соскальзывали и падали.

Женское рыдание отвлекло моё внимание от кровавого зрелища. Я повернулся назад.

Одна из элегантных дам средних лет прощалась с сыном, совершенно безусым блондином, офицером. Юный воин старался успокоить свою мать, но та, всё рыдая, повторяла:

— Я знаю, всё знаю. Это не разбойничья шайка какая-нибудь, а целая регулярная армия. У них пулеметы и пушки, напрасно утешаешь меня...

— Ну, хотя бы пушки, что же из этого,— говорил офицерик.

— Понятно, нечего оплакивать живого человека. Ну, прощай. Меня зовут.

И быстро обнявшись с дамой, он исчез в толпе.

По платформе провели толпу курдов и аскеров, взятых в плен, кажется, под Бардосом и загнали в товарные вагоны. Один из них, в серой шинели с блестящими пуговицами и в длинных сапогах с папиросой во рту, точно герой-победитель, бросал в публику презрительные взгляды. Остальные были оборванцы, укутанные в обычные курдские короткие одеяла, но люди здоровые, крепкие. Было среди пленных 7 турецких армян. Они на ходу просили нас хлопотать об освобождении их. К сожалению, мы не могли исполнить тут же просьбу их. Нужно было доказать прежде, что они действительно армяне. Нам было известно, что часто курды, большинство которых прекрасно владеет армянским языком, вводят в заблуждение офицеров и солдат и тем спасаются.

При всём нашем любопытстве нам, разумеется, нельзя было оставаться в Саракамыше, а тем более ехать дальше. По перестрелке чувствовалось, что сражение всё приближается, а на станции стоял один-единственный поезд, быть может, последний, думали мы. Между тем, паника уже сделала своё

дело: весь Саракамыш бежал к станции и уже вся платформа была покрыта женщинами и детьми.

По приказанию генерала М... нам с представителями города Баку дали особый вагон и мы распорядились вынести наши вещи на платформу, чтобы быть готовыми к отъезду.

В это время кто-то сообщил мне, что приехал из Мижинкерта сын мой, прапорщик запаса, состоящий при штабе корпуса. Я пошёл искать его в сутолоке. Ему дали знать, что я в Мижинкерт ехать не могу, поэтому он сам приехал на автомобиле повидаться со мной. Признаться, это обстоятельство не особенно обрадовало меня, т. к. я опасался, что турки вскоре отрежут путь к Мижинкерт, и ему невозможно будет вернуться туда. Впоследствии оказалось, что моё предположение отчасти оправдалось...

Ровно в 6 с половиной часов вечера перестрелка прекратилась.

— Турки с наступлением темноты обыкновенно перестают сражаться,— объяснили нам офицеры.

На этот раз вышло не так.

Мы выехали из Сарыкамыша в семь часов вечера, а в полночь сражение возобновилось. Пошли греметь пулеметы и пушки...

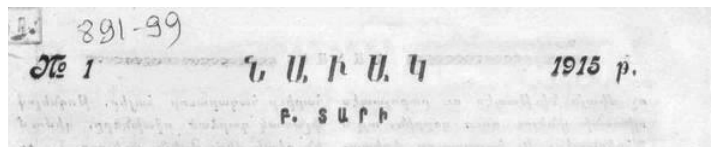
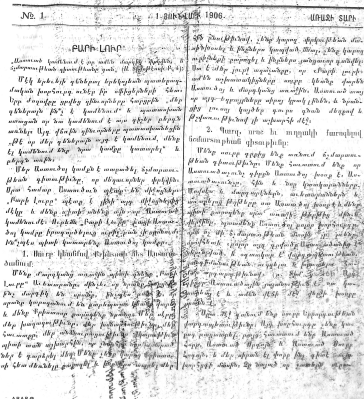
АЛЕКСАНДР ШИРВАНЗАДЕ

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

Ալեքսանդր Շիրվանզադե, Գեորգ Մադոյեան, Բաքուի հայկական մամուլ:

SUMMARY

From 1877 to 1920, 60 Armenian newspapers were published in Baku. Most of them were either lost or doomed to disappear. Among others, is Alexander Shirvanzade's feature article for the Russian-language Armenian newspaper "Baku" about the beginning of the battle of Sarighamish. The original of this report has not reached us, so we publish a copy (typewritten) of the article on the beginning of the Sarighamish battle, preserved in the archive of Gevorg Madoyan.



ՔԱՆԱՔԱՐԱ ՀԱՅՐԱՊԵՏԵԱՆ
Գաւառի պետական համալսարան

ԱՄԵՆԱՅՆ ՀԱՅՈՑ ԿԱԹՈՂԻԿՈՍ ԽՈՐԷՆ Ա. ՍՈՒՐԱԴԲԵԿԵԱՆԻ ՍԱՀՈՒԱՆ ԱՌԵՂՍՈՒԱԾԻ ՇՈՒՐՋ

Պատմագիտութեան ասպարէզում Ամենայն Հայոց կաթողիկոս Խորէն Ա. Մուրադբէկեանի մահուան հետ կապուած տեսակէտները տարբեր են. Ամենայն Հայոց կաթողիկոսը սրտի կաթուածից է մահացել, թէ՛ խեղդամահ է արուել, արդեօք կաթողիկոսի բռնի մահը Մայր Աթոռ Ս. Էջմիածնում պահուող զինամթերքի, թէ՛ գանձերի հանգամանքով է բացատրելի: Ամենայն Հայոց կաթողիկոսի մահուան առեղծուածի բացայայտումը կարևոր է ոչ միայն Հայոց Եկեղեցու պատմութեան, այլ նաեւ տուեալ ժամանակաշրջանի Խորհրդային Հայաստանի եւ առհասարակ 1930-ական թուականներին խորհրդային իրականութեան հասարակական-քաղաքական յարաբերութիւնների եւ իրավիճակի ուսումնասիրութեան ու լուսաբանման, հայ հոգեւորականութեան հանդէպ՝ խորհրդային քաղաքական վերնախաւի իրականացրած քաղաքականութեան՝ բիրտ ու դաժան միջոցների կիրառման տեսակէտից:

Ներկայացուող յօդուածն ունի ոչ միայն գիտական, այլև գործնական նշանակութիւն: Ներկայ փուլում կրկին Հայ Առաքելական Եկեղեցու առջև ծառացած օրակարգային հարցերից է եկեղեցի-պետութիւն փոխյարաբերութիւնների կարգաւորումը: Հետևաբար՝ անցեալի փորձի ուսումնասիրումն ու հետազօտումը հնարաւորութիւն կստեղծի ոչ միայն նշուած հիմնախնդրի կարգաւորմանը միտուած համապատասխան քայլերի, ուղենիշների մշակման համար, այլև առկայ քաղաքական, հանրային, կրօնական մարտահրաւէրներին դիմակայելու կարողութիւնների ձևաւորման:

KANAKARA HAYRAPETYAN
Gavar State University

ON THE MYSTERY OF DEATH OF KHOREN I MURADBEKIAN — CATHOLICOS OF ALL ARMENIANS¹

In historiography, the views related to the death of Catholicos of All Armenians Khoren I Muradbekian are different: did the Catholicos of All Armenians die of a heart attack or was he strangled? Was his death caused by the ammunition or treasures stored in Mother See of Holy Etchmiadzin? The discovery of the death mystery of the Catholicos of All Armenians is important not only for the history of the Armenian Church, but also from the perspective of the study and coverage of the socio-political relations and situation of the Soviet Armenia of the given period and in the 1930s in general, as well as from the perspective of application of brutal and cruel methods inherent to the policy implemented by the Soviet political elite towards the Armenian clergy.

The presented article has not only scientific, but also practical significance. At the current stage, one of the agenda issues facing the Armenian Apostolic Church is again the regulation of church-state relations. Therefore, the study and research of the past experience will create an opportunity not only for the development of appropriate steps and guidelines aimed at the settlement of the mentioned issue, but also for the formation of capacities to face the existing political, public and religious challenges.

THE HYPOTHESES ON THE DEATH MYSTERY OF THE CATHOLICOS OF ALL ARMENIANS— KHOREN I MURADBEKIAN

On the night of April 5–6, 1938, the 65-year-old Catholicos of All Armenians Khoren I Muradbekian passed away under unknown circumstances.

¹* Ստացուեի է՝ 9.11.2023, գրախօսուեի է՝ 11.11.2023: էլ. հասցէ՝ q.hayrapetyan@gsu.am: հմբազիր՝ Գէորգ Սարեան:

The news of the Catholicos death immediately spread abroad: according to these news, he was strangled in the patriarchate residence².

According to the official message of the Supreme Spiritual Council; however, it was announced that the Catholicos died of a heart attack and was buried in St. Gayane Monastery. The reports by Archbishop Arsen addressed to the Supreme Spiritual Council of Etchmiadzin and his letter addressed to the Patriarch of Constantinople Mesrop Naroyan have been preserved³ as facts confirming the statement of the Supreme Spiritual Council.

It was impossible to speak up about the death and the hasty burial of the Catholicos in the Soviet Union; however, in the Diaspora⁴ and nowadays also in Armenia, there are a number of hypotheses about the death of the Catholicos, which were once put forward by Torgom Vehapetyan, Bishop Pargev Gevorgyan, Professor Stepan Stepanyants, Armenak Manukyan, Catholicos Vazgen A and Catholicos Khoren A's sister's grandson – Alexander Mikayelyan.

Thus, Torgom Vehapetyan considers the treasures kept in the Mother See to be the cause of the death of the Catholicos and immediately mentions someone named Piruz as the murderer, who killed the Catholicos with a strong blow from an electric current wire. Torgom Vehapetyan's research makes it clear that the body of the Catholicos was not buried the day after his death, but remained in the room for two days, and then the soldiers tried to bury the Catholicos somewhere far away in order to cover up the tracks, but the virgins of the monastery covered the body of the Catholicos and buried it in the cemetery⁵ of St. Gayane Monastery.

Stepan Stepanyants (Stepan Kertogh) has also presented his hypothesis regarding the death of the Catholicos of All Armenians, and in his work puts forward the

² **G. Avagyan**, *The Martyr Catholicos*, Yerevan, 2008, pp. 116–117. **G. Lazean**, *Armenia and Armenian law. In the light of Armenian and Russian relations*, Yerevan, 1991, 389–342:

³ **К. Hayrapetyan**, *The Analysis of the Mystery of the Death of the Catholicos of All Armenians Khoren I Muradbekian in historiography*, **Etchmiadzin**, E, St. Etchmiadzin, 2018, pp. 138–139.

⁴ **Н. Tchilingirian**, *In Search of Relevance: Church and Religion in Armenia since Independence*, Paris, 2007, p.5. **F. Corley**, *The Armenian Church Under the Soviet Regime, Part 1: The Leadership of Kevork, Religion, State & Society*, Vol. 24, No. 1, 1996, p. 9. **Е. Oganessyan**, *The Armenian Church in the USSR, Religion in Communist Lands Volume 7*, Sidney, 1979, p. 239. **А. Багдасарян**, *Армянская апостольская церковь и Советское государство: особенности взаимоотношений*, Вестник Моск. ун-та, сер. 8, История, 2018, № 1, стр. 77.

⁵ **К. Hayrapetyan**, the mentioned work, pp. 139–140.

hypothesis that the Catholicos was strangled by the hands of Cheka because of the weapons and treasures⁶ kept secretly in the monastery.

S. Stepanyants notes that the documents testifying the presence of weapons in the Mother See are stored in the National Security Archive of Armenia, according to which the Catholicos and bishops were aware of the weapons located in the Mother See. The state security officers were assigned a difficult task: to remove the monastic weapon from the monastery, and in order to forget the secret about the weapon forever, according to S. Stepanyan, on the night of April 5–6, 1938, the Chekists strangled the Catholicos⁷.

In his another work, S. Stepanyants mentions the name of Gegham Klekchyan, a shatir /scepter-bearer/ from Nor Bayazet serving the Catholicos, as a witness to the death of the Catholicos, according to whose testimony, a woman named Piruz and other employees of the Cheka had ordered him and other clergymen of the monastery to stay away from the Catholicos⁸. It should also be noted that Pargev Gevorgyan⁹ also presented this hypothesis at one time.

Thus, while bathing the Catholicos before placing him into the coffin, Gegham Klekchyan noticed that his face was bruised, and there were long blue lines on his neck with small spots of blood. On the same day, Hayk Yeghiazaryan, personal physician of the Catholicos, came to Etchmiadzin. The doctor, examining the body of the Catholicos, declared: “There is no doubt, the Catholicos was strangled¹⁰”.

S. Stepanyants notes that the day after the death of the Catholicos, the state security authorities confiscated the monastic weapons and the riches of treasury. At the beginning of June, 1938, at the 11th Congress of the Communist Party of Armenia, People’s Commissar of Internal Affairs V. Khvorostyan declared that the Catholicos died of a heart attack because he witnessed the end of his life and Patriarchate. It was mentioned at the assembly that 2.5 kg of gold, 15 pounds of silver and many precious jewels were seized from the monastery. The report also stated that the treasures were kept under the soil at a depth of 2.5 m, and a concrete floor

⁶ In the same place, p. 141.

⁷ In the same place.

⁸ In the same place, pp. 141–142.

⁹ **P. Gevorgyan**, What happened to you, man of God?/“Homeland”, Yerevan, 1991, number 7, p. 36. П. Георгян, Епископ Армянской Апостольской Церкви. В борьбе за существование, Журнал Московской Патриархии. М., 1994. №4 (ЖМП). с. 49.

¹⁰ **К. Hayrapetyan**, the mentioned work, p. 142.

was built on top and sacred books were placed on it. The Assembly, however, made no mention of weapons being kept in the Mother See¹¹.

Armenak Manukyan has also tackled the issue of the causes of the Catholicos death. He draws attention to the fact that the main witness Gegham Klekchyan, had been arrested and detained a week before the death of the Catholicos on March 29, 1938, and his testimony regarding the examination of the body of the Catholicos is groundless. Therefore, he considers the death of the Catholicos a consequence of the negative influence of the oppressive political atmosphere during 1937–1938¹².

Catholicos of All Armenians Vazgen the First also wrote down what he had heard about the death of the Catholicos, according to which Catholicos Gevorg VI Chorekchyan told him that the commissar of the National Party of Armenian SSR was guilty of the death of the Catholicos; however, a few months after the death of the Catholicos, for some unknown reason, V. Khvorostyan was also arrested and shot, but during the conversation, Catholicos Gevorg VI did not give a clear answer to the question addressed to him what the Catholicos had died of. Catholicos Vazgen A also mentioned that in the autumn of 1955, after his election as Catholicos, he hired Gegham Klekchyan, the former shatir of Catholicos Khoren I, who had just returned from exile. Gegham Klekchyan told that he had been arrested during the days of the Catholicos' murder and heard the bad news in prison. Vazgen A. Palchyan gives another testimony, according to which he accidentally met the former secretary of Etchmiadzin regional committee in Arzni, who told that the death of the Catholicos happened by the hands of Beria¹³.

From the records of Catholicos Vazgen I, we can assume that the murder of Catholicos Khoren I took place by the orders of Beria, and Gegham Klekchyan, who was considered an eyewitness to the murder, had already been arrested before the death of the Catholicos.

Alexander, the grandson of Catholicos Khoren I's sister Satenik, also has a publication about his death, which states that during one of the family gatherings, a few days before his death, the Catholicos announced: «I am ready for any resolution at any time.» According to Mikayelyan, the fact of the brutal murder of the Catholicos was never doubted in their family, even his father, Hrant Mikayelyan, remembered that his uncle looked twisted in the coffin, as if he had been electrocuted. In 1966

¹¹ In the same place, 143:

¹² “**Nation**”, 1996, number 220, November 20, p. 4.

¹³ **K. Hayrapetyan**, the mentioned work, pp.144–145.

Alexander Mikayelyan met the academician Suren Yeremyan to clarify the circumstances of the death of the Catholicos, and it turned out that Beria had demanded from the Catholicos Khoren to hand over the keys to the treasury of the Etchmiadzin shrine, but in response he had received a refusal, which was the reason for killing¹⁴ the Catholicos.

Thus, there are three hypotheses regarding the death of Catholicos Khoren I:

1. The Catholicos died of a heart attack.
2. The Catholicos was strangled with an electric wire.
3. The Catholicos was killed by a blow from an electric current wire.

As for the motives of killing the Catholicos, there are two points of view: the murder of the Catholicos happened because of the treasures or ammunition kept in the Mother See.

PRESENTATION OF NEW FACTS ON THE MYSTERY OF THE DEATH OF THE CATHOLICOS OF ALL ARMENIANS KHOREN I MURADBEEKIAN

Thus, through the comparison and examination analysis of all the hypotheses and viewpoints related to the mystery of the death of the Catholicos, our study, as well as the events of the last years during the lifetime of the Catholicos, we can draw the following conclusions:

1. The elite of the Soviet government, practically being convinced that it is not possible to finally destroy the Armenian Apostolic Church even through widespread anti-church propaganda and repression, adopted the policy of minimizing the activities of the Armenian Apostolic Church, making it serve only the purpose of extracting material and financial resources from the Diaspora.

This is evidenced by the numerous letters and kondaks (official written statements made by Catholicos) of Catholicos Khoren I addressed to the Diaspora with a request to help Soviet Armenia¹⁵ and contribute to its reconstruction. This is also

¹⁴ **А. Микаэлян**, «Для него католикосат был боевым постом», Новое Время, АРХИВ 201126/07/2011 https://nv.am/dlya-nego-katolikosat-by-l-boevym-postom/?fbclid=IwAR3Vqm9kZw5Hr2rNnRma4GZwdtM7oW8OjRrTh9FpN8NPylYHdi_Qru7tFN0 entry: 29.03.2023

¹⁵ Documents on the history of the Armenian Church, Book B, Khoren I Muradbekian — the Catholicos of All Armenians (spiritual activity in 1901–1938, compiled by **S. Behbudyan**, Yerevan, 1996, number 273, pp. 412–414, number 359, pp. 511–512.

confirmed by the publications¹⁶ in the press regarding the aid and donations sent by Diaspora Armenians to Soviet Armenia.

The efforts of the Catholicos aimed at the regulation of church-state relations in this way were in vain, because in 1937–1938, the persecutions by the authorities against the church reached their peak.

2. Catholicos Khoren I, disappointed and disheartened by the open harassment and humiliation of the church by the authorities of Soviet Armenia, from then on refused to turn to the Diaspora for material and financial resources, as most of the money and donations received in his name were either immediately confiscated by the authorities or a small amount was allocated to the Mother See, which was not even enough to cover the daily wants of the monks in the congregation. Khoren I wrote about it in the letter¹⁷ addressed to V. Khvorostyan on December 4, 1937.

It should be noted that during the time of Khoren A. Muradbekian being a Catholicos, thanks to the efforts of the Armenian Patriarch of Jerusalem Archbishop Torgom Hovsepyan and the plenipotentiary and delegate of “Illuminator’s dime” initiative and the Catholicos, patriarch Archbishop Garegin Hovsepyan, a fund collection was organized to repair the Mother See and improve the bankrupt economic situation, as a result of which the financial funds collected were kept in the Diaspora¹⁸ at the will of the Catholicos, in order to be used in case of need. From these funds regular allocations were made to the Patriarchal Sees of Constantinople¹⁹, Jerusalem and Cilicia²⁰ to rebuild and maintain Armenian churches and schools, to provide material assistance to emigrants and orphans.

¹⁶ «Turkey», 1935, number 128, July 23, p. 4.

¹⁷ Documents on the history of the Armenian Church, Book A, (1921–1938), compiled by **S. Behbudyan**, Yerevan, 1994, number 186, p. 324.

¹⁸ It refers to the deposit under the control of the London Central Commission of the “St. Etchmiadzin” Foundation. See Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 332, p. 480, number 396, pp. 551–552, number 397, pp. 552–555, Book A, number 183, pp. 318–319. **A. Hatityan**, A brief overview on the history of M. See of St. Etchmiadzin (1920–1967) «The issues of the renovation of the Mother Cathedral and the improvement of the Armenian Church, during the period of Khoren I the Catholicos», **Etchmiadzin**, D, St. Etchmiadzin, 1968, p. 20.

¹⁹ Documents on the history of the Armenian Church, Book D, Sahak B. Khapayan – Catholicos of Cilicia 1891–1940, compiled by **S. Behbudyan**, Yerevan 1997, number 241, p. 539–540, number 242, p. 541–542, number 247, p. 545, number 254, p. 552: Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 392, pp. 546–547.

²⁰ Documents on the history of the Armenian Church, Book D, Sahak B. Khapayan – Catholicos of Cilicia 1891–1940, compiled by **S. Behbudyan**, Yerevan 1997, number 241, pp. 539–540, number 242, p. 541–542, number 247, p. 545, number 254, p. 552: Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 392, pp. 546–547.

The Catholicos of All Armenians believed that if these funds were sent to Soviet Armenia, they would be immediately confiscated by the authorities, therefore he considered it more appropriate to use them in the Diaspora for the needs of the Patriarchal Sees, the needs of the Armenian community, as well as cultural and national events²¹.

3. The authorities of Soviet Armenia were certainly aware of the money kept in the Diaspora in the name of the Catholicos of All Armenians, so they raised an issue according to which the Mother See of St. Echmiadzin should be taxed. The amount²² of tax liabilities of the Mother See for four years, about 220,000 rubles, which was equivalent to 41,500 US dollars, was presented to the Catholicos. According to the authorities, it was not a large amount compared to the money²³ kept abroad. In addition, it should be mentioned that as of 1936 there was about 580,625 US dollars in the deposit account of the “St. Etchmiadzin” Foundation under the control of the London Central Commission.

We believe that the goal of the representatives of state authorities regularly visiting the Catholicos was not to take out the «munitions and treasures» stored in the Mother See, but to transfer the money kept in the Diaspora to Soviet Armenia through the Catholicos at any cost, even if it meant threatening the Catholicos, or intimidating and arresting people close to him.

3. As for the versions of the death of Catholicos of All Armenians – dying of a heart attack, being killed or strangled, it should be noted that as a result of studying the above mentioned references, we do not rule out the version of the Catholicos being killed with indirect intent. However, we cannot assert any version of the death of the Catholicos and deny the others, because we did not find any documents proving these facts in the National Archives of Armenia, nor in the archives of the civil status acts registration services of the Republic of Armenia (see references No. 1, 2), despite the fact that according to Archbishop Arsen Ghlthchyan’s report, a protocol was drawn up after the autopsy of the Catholicos.

4. Due to the lack of direct facts, it is difficult to prove any of the hypotheses of death, but we consider it important to clarify whether the isolation of the Cath-

²¹ Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 375, pp. 530–531, number 378, pp. 533–534:

²² As of 1938, 1 dollar was equivalent to 5.3 rubles https://forbes.kz/news/2014/12/04/newsid_74373_սուսը_10.03.2023_թ.

²³ Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 332, p. 480.

olicos was planned by the authorities or not. In the course of our study, we came to the conclusion that it was not planned by the Soviet authorities in advance. Let us mention the following as an argument: in the minutes of the session of August 4, 1938 of the Communist Party of Armenia, it is stated: “Considering that the existing materials expose the active struggle of the Catholicosate against the Soviet government, an order was issued to close the Etchmiadzin monastery, turning it into a museum, not to hold the election of a new Catholicos, and to liquidate the Armenian spiritual center, the Catholicosate of Etchmiadzin”²⁴. Although Grigor Harutyunyan, the secretary of the Central Committee of Communist Party of Bolsheviks of Soviet Armenia, who was in charge of the session, signed the note, he sent a message with the same content to Joseph Stalin²⁵ on the same day, delaying any decision regarding the Armenian Apostolic Church. At his suggestion, in the letter sent to Stalin on August 4, in opposition to People’s Commissar of Internal Affairs of the USSR Viktor Khvorostyan, a line was added: “Requesting the Central Committee of the All-Union Communist Party of Bolsheviks to confirm”. On this occasion, we read in Grigor Harutyunyan’s memoirs: “Khvorostyan wanted to counter-speech, as if it is a matter of local significance; we will handle it ourselves”, but in response, Grigor Harutyunyan said: “Echmiadzin, as the spiritual center of Armenians, has international weight and importance. That is why this issue should be agreed with the Central Committee of the All-Union Communist Party of Bolsheviks”²⁶. The first secretary of the Central Committee of Soviet Armenia hoped to gain time. His worry was not in vain. In his memoirs we read: “Not a month passes when Stalin contacts him with a special connection:

— Comrade Arutinov, do you still insist on closing the Catholicosate?

The manner in which the question was set already suggested the answer to Arutinov.

— No, Joseph Vissarionovich, I do not insist.

— Well then, good.

Thus, the question of dissolving Etchmiadzin is closed”²⁷:

²⁴ In the same place, number 413, pp. 570–571.

²⁵ In the same place, number 414, pp. 571–572.

²⁶ Grigor Shinarar (the Constuctor). Memoirs about the 1st Secretary of the Communist Party of Armenia G. A. Harutyunyan (Arutinov) in 1937–1953, compiled by **N. Mikoyan**, Yerevan, 2016, p. 131.

²⁷ In the same place. Also see **Friar T. Asoghik Karapetyan**, State and Motherland of the Church, Soviet Armenia 100. the church and the state, articles, documents and photos, St. Etchmiadzin,

5. Summarizing the abovementioned, we can state that the elite of the Soviet power never set the goal of killing the Catholicos of All Armenians and dissolving the Mother See, on the contrary, despite the open distrust in Church, they were well aware that Catholicos Khoren I still had great authority in the Diaspora and his assassination could undermine the authority of the Soviet government among the Diaspora Armenians. Therefore, we believe that the Diaspora factor was much more important for the Soviet authorities, because it provided a huge financial flow to Soviet Armenia through the Catholicos. Moreover, it was not ruled out that in the event of the liquidation of the Catholicos by the authorities and the closing of the Mother See, the Armenian Apostolic Church would not disappear; instead the spiritual center would be transferred abroad, and the Soviet Union would lose the last important leverage it had on Diaspora Armenians. Therefore, it was no coincidence that in 1932 the authorities allowed the convening of a National Church Assembly to elect a Catholicos, even though the Russian Orthodox Church had not had a leader since 1925.

6. As for the views stating that the main reason for terrorizing and killing the Catholicos was the weapons and treasures kept in Etchmiatsin, we do not find them very convincing, because the authorities, without the permission of the Catholicos, could use any opportunity to enter the Mother See and confiscate both the weapons and the treasures, as it, for example, happened after the adoption of the decree of December 17, 1920, when, without the permission of Catholicos Gevorg E, they confiscated the property of Etchmiadzin seminary, the Matenadaran (library), the southern and northern altars of the Cathedral, the dormitory of the Mother See, Hripsime Monastery²⁸, as well as demanded the Catholicos to hand over the valuables (gold, silver, precious stones, other household and artistic items) and furniture²⁹ kept in the Mother See. It should be noted that according to the decision of the Central Committee of the Russian Communist Party of Bolsheviks on March 20, 1922, it was ordered to immediately carry out inventory and confiscation of valuables, especially targeting the clergy. On April 8, 1922, the Central Committee of the Armenian Communist Party of Bolsheviks, discussing this request, noted that it cannot be applied in Armenia due to the small number of such items³⁰. Regarding

2020, pp. 40–41.

²⁸ In the same place, pp.146–147.

²⁹ Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 74, p.146.

³⁰ V. Ghazakhetsyan, *Armenia in 1920–1940*, Yerevan, 2006, pp. 336–337. National Archives

the weapons kept in the Mother See, we can mention that back in 1914 Etchmiadzin was given a limited amount of weapons by order of Viceroy of the Caucasus Vorontsov-Dashkov to protect Armenian churches from Turkish terrorists. However, it was certain that most of the weapons were distributed to border churches and monasteries, and only 60 Mannlicher rifles were sent to St. Etchmiadzin³¹, which was not enough to organize any rebellion or disobedience. Thus, we can state that the Mother See, as such, did not have enough treasures and weapons, therefore we consider it unjustified to kill the Catholicos for weapons and treasures.

7. Let us also try to clarify the circumstances of the hasty burial of the deceased Catholicos. According to the traditional order, the funeral of the deceased Catholicos takes place 10 days after his death, with the participation of diocesan leaders³². However, in the case of Catholicos Khoren I, the testimonies are unequivocal: he was buried immediately after his death, without proper ceremony, accompanied by a limited number of people. This uncertainty in historiography immediately causes many people to think that the authorities aimed to hide the real facts related to the murder of the Catholicos. However, we think that in this way the Soviet authorities tried to keep the news of the sudden death of the Catholicos away from public discussions and wrong interpretations, meanwhile not allowing gatherings³³ of religious people at the Mother See which, according to the census data in 1937, were still a large number³⁴. Let us not forget the fact that the participation of the diocesan leaders in the funeral ceremony of the Catholicos was also associated with big problems: In Soviet Armenia, almost all the diocesan leaders were arrested and shot, and the arrival of Diaspora diocesan leaders was almost impossible; for example, during the election of Catholicos Khoren I in 1932, many of them were not able to come to Soviet Armenia for political reasons, and especially in this case, in the days of rampant Stalinist violence, their presence at the funeral ceremony of the Catholicos was excluded.

of Armenia, fund 113, contents 5, case 3, paper 24:

³¹ Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 20, p. 37.

³² **Deacon Varuzhan Terteryan**, From the bright pages of the past, The life and activities of the Catholicos of All Armenians Muradbekian, **Etchmiadzin**, D-E, St. Etchmiadzin, 1994, p. 76.

³³ As, for example, the authorities behaved after the death of Gevorg E. Surenyants, ordering to activate the mass works in the villages in order to divert the attention of the villagers from the funeral procession and to prevent gatherings. See А. Вирабян, Документы о выборах католикоса армянской церкви (1930–1932 гг.) / **News on Social Sciences**, number 1, Yerevan, 1996, p. 137.

³⁴ **В. Жиромская**, Религиозность народа в 1937 году (По материалам Всесоюзной переписи населения), «Исторический вестник», №5, 2000, стр. 107–108.

On April 8, 1938, the archbishop Gevorg Chorekchyan³⁵ returned to Etchmiadzin from Tiflis. Archbishop Arsen Ghltchyan immediately handed over to him the kondak No. 620, dated April 18, 1936³⁶, found in the room of the late Catholicos on April 6. According to the Kondak, Archbishop Gevorg Chorekchyan was appointed deputy Catholicos of All Armenians³⁷. Reverend Gevorg, actually taking over the leadership of the Armenian Apostolic Church, telegraphed the death of the Armenian Catholicos to Patriarch Torgom of Jerusalem on April 10, 1938: “It is with sadness that I announce that Catholicos Khoren died of a heart attack. Please manage to report properly to all places”³⁸.

Following the message of Archbishop Gevorg received in the early morning of April 11, the Patriarch of Jerusalem immediately communicated the death sentence of the Catholicos to all the dioceses of the Diaspora: “It is with immense sorrow that we announce the death of the Catholicos of All Armenians from a heart attack, according to April 10 telegram of Deputy Archbishop George”³⁹. Based on this report, as well as the announcement⁴⁰ published in the “Zion” magazine, the Diaspora Armenian press by mistake mentions April 10 or 11⁴¹ as the day of the Catholicos’ death.

The news of the untimely death of Catholicos of All Armenians Khoren I caused great sorrow and pain to all Armenians⁴². Patriarch of Jerusalem Archbishop Torgom wrote in the article entitled “The Great Mourning” that the death of the Catholicos was a sudden, merciless and terrible blow that fell on “the head of the sacred Armenian church and the heart of the nation”⁴³.

In 1941 (also mentioned in 1943⁴⁴), by order of Archbishop Gevorg Chorekchyan, the remains of Catholicos Khoren I were moved from the cemetery of Gayane

³⁵ G. Avagyan, mentioned work, p. 139.

³⁶ Documents on the history of the Armenian Church, Book A, number 189, pp. 327–328.

³⁷ Documents on the history of the Armenian Church, Book B, number 405, pp. 562–563: Also see F. Corley, *The Armenian Church Under the Soviet Regime, Part 1: The Leadership of Kevork, Religion, State & Society*, Vol. 24, No. 1, 1996,

³⁸ «Zion», 1938, number 5, May, p. 138.

³⁹ In the same place.

⁴⁰ In the same place, p. 130.

⁴¹ “Go ahead”, 1938, number 3761, April 13, p. 1.

⁴² “A Volume Novels”, 1938, number 4–5, April-May, pp. 181–184, “Hask /Crop/”, 1938, May, p. 66, “Armenian Speaker”, 1938, number 1, October, pp. 5–6, «The Republic of Armenia», 1996, number 44, March 7, p. 2.

⁴³ “Zion”, 1938, number 5, April-May, pp. 131–134.

⁴⁴ P. Gevorgyan, the mentioned work, p. 36.

monastery and buried on the north side of the central entrance of the church. During the pontificate of Catholicos Vazgen A. Palchyan, a corresponding tombstone⁴⁵ was also placed on the grave of the late patriarch. After the declaration of independence of the Republic of Armenia on September 7, 1996, at 11.00 in the morning, after the liturgical ceremony, in a special procession and under the chairmanship of Catholicos Garegin I, the remains of Catholicos Khoren I were transferred from St. Gayane Monastery to the Mother Cathedral, taking its rightful place next to the late All Armenian Catholicoses⁴⁶.

CONCLUSION

Regarding the death of All-Armenian Catholicos Khoren I Muradbekian, as a result of studying and analyzing the hypotheses in historiography, as well as comparing direct and indirect facts, we came to the conclusion that the goal of the representatives of the state bodies who regularly visited the Catholicos was to transfer the money kept in the Diaspora to Soviet Armenia through the Catholicos at any cost, even by threatening the Catholicos or terrorizing people close to him. The elite of the Soviet government did not set a goal to kill the Catholicos of All Armenians and dissolve the Mother See. It was not ruled out that in the case of the neutralization of the Catholicos by the authorities and the closing of the Mother See, the Armenian Apostolic Church would not disappear, but simply the spiritual center would be transferred abroad, becoming a base to fight against the government of Soviet Armenia.

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

Ամենայն Հայոց Կաթողիկոս Խորեն Ա. Մուրադբեկեան, գանձեր, զէնքեր, վարկած, Սփիւռք, հիմնադրամ, սովետական իշխանութիւն, սպանութեան վարկած, Հայ Առաքելական Սուրբ Եկեղեցի:

⁴⁵ **Deacon Varuzhan Terteryan**, The life and activities of the Catholicos of All Armenians Muradbekian, p. 77.

⁴⁶ The remains of the Catholicos Khoren I were laid to rest in the yard of the Mother Cathedral, “Echmiadzin”, September, 1996, pp. 25–26.

РЕЗЮМЕ

Годы патриаршества Католикоса Всех Армян Хорена I Мурадбекяна (1932–1938) совпали с неимоверно сложным периодом в истории армянского народа, когда сталинское насилие и антицерковная политика достигли своего апогея.

В этих обстоятельствах глава Армянской Апостольской Церкви Католикос Хорен I, учитывая историческую роль Армянской Апостольской Церкви в деле сохранения нации, а также принимая во внимание, что на родине церковь мало-помалу теряет свой авторитет и вес в общественной жизни, выдвинул на первый план задачу урегулирования взаимоотношений между диаспорой — Церковью — государством, но преимущественно между Церковью и диаспорой, то есть Первопрестольным Святым Эчмиадзином и Патриаршими престолами, а также проблему повышения авторитета Армянской Апостольской Церкви в диаспоре.

Следовательно, было не случайным восстановление поста патриаршего посланника в диаспоре в 1934 году, а также вовлечение Патриарших престолов — Иерусалимского, Константинопольского патриархатов и Киликийского католикосата в программе разработки Конституции Армянской Апостольской Церкви, торжественного празднования в диаспоре 1500-летнего юбилея перевода Библии на армянский язык и формирования армянской литературы.

В результате Католикосу Хорену I Мурадбекяну удалось не только установить теплые братские отношения между Первопрестолом и Патриаршими престолами, но и прочно связать армянство всего мира и два престола вместе с Киликийским католикосатом с Родиной и Святым Эчмиадзином.

Представляемая статья имеет не только научное, но и практическое значение.

Одним из актуальных вопросов, стоящих перед Армянской Апостольской Церковью на данном этапе, является продолжение урегулирования взаимоотношений между армянской диаспорой-Церковью-государством, Первопрестольным Святым Эчмиадзином и Патриаршими престолами. Следовательно, изучение прошлого опыта может создать возможность не только для разработки соответствующих ориентиров, направленных на урегулирование вышеуказанных проблем, но и для формирования возможностей противостояния существующим геополитическим, общественным и религиозным вызовам.

REFERENCE 1.

ON THE REGISTRATION OF THE DEATH ACT FROM THE RA CIVIL STATUS ACTS REGISTRATION AGENCY

ՁԱ N 8

Տեղեկանք

Քաղ. _____ ԽՈՐԷՆ ԱՆՔՍԱՆԴԻ ՄՈՒՐԱԴԻԲԷԿԵԱՆ
(անուն, հայրանուն, ազգանուն)

Ծնվ. _____ 1876թ. _____, Վերաբերյալ _____ ՄԱՀ
(անրի տնտանի անվանումը)

անկտի գրանցում
ՔՎԱԳ _____ ՎԱՐԱՐՇԱՐԱՅ տարածքային բաժնի

արխիվում չի հայտնաբերվել:

Ստուգված է _____ 1937թ. _____ ից _____ 1939թ. _____ -ը

ՔՎԱԳ _____ ՔՎԱԳ ԳՈՐԾԱԿԱՆՈՒԹՅՈՒՆ

տարածքային բաժնի
պետ _____ ՄԱՐԻՆԵ ՑԱՏԱԽԱՆՑԱՆ
(անուն, հայրանուն)
_____ (տարածքային)

Ստան վստաստողի վավերականությունը կարող է ստուգվել www.e-registry.am կայքում միացնալով **СЕР-8856-8308-0550** հսկվել համարը:

REFERENCE 2

THE REGISTRATION OF THE DEATH ACT FROM THE RA CIVIL STATUS ACTS REGISTRATION AGENCY

ՁԱ N 8

Տեղեկանք

Քաղ. _____ ԱՆՔՍԱՆԴԻ ՄՈՒՐԱԴԻԲԷԿԵԱՆ
(անուն, հայրանուն, ազգանուն)

Ծնվ. _____, Վերաբերյալ _____ ՄԱՀ
(անրի տնտանի անվանումը)

անկտի գրանցում
ՔՎԱԳ _____ ՎԱՐԱՐՇԱՐԱՅ տարածքային բաժնի

արխիվում չի հայտնաբերվել:

Ստուգված է _____ 1 ՀՈՐԷՎԱՐԻ 1938թ. _____ ից _____ 31 ԴԵԿՏԵՄԲԵՐԻ 1939թ. _____ -ը

ՔՎԱԳ _____ ՔՎԱԳ ԳՈՐԾԱԿԱՆՈՒԹՅՈՒՆ

տարածքային բաժնի
պետ _____ ՄԱՐԻՆԵ ՑԱՏԱԽԱՆՑԱՆ
(անուն, հայրանուն)
_____ (տարածքային)

Ստան վստաստողի վավերականությունը կարող է ստուգվել www.e-registry.am կայքում միացնալով **СЕР-8856-8308-0550** հսկվել համարը:

ՎԱՉԱԳԱՆ ԱԻԱԳԵԱՆ

Բանասիրական գիտ. թեկնածու, դոցենտ, ԵՊՀ

**Գ. ՍՈՒՆԴՈՒԿԵԱՆԻ «ՎԱՐԻՆԿԻ ՎԵՉԵՐԸ» ՊԱՏՄՈՒԼԾՔԸ
ԳՐԱԿԱՆԱԳԻՏԱԿԱՆ ՀՈԼՈՎՈՅԹՈՒՄ
(ակադեմիկոս Էդուարդ Ջրբաշեանի ծննդեան 100-ամեակի առթիվ)**

Հայ անուանի դրամատուրգ Գաբրիել Սունդուկեանի (1825–1912) գրական ժառանգութեան մէջ առանձնակի հետաքրքրութիւն է ներկայացնում «Վարինկի վեչերը» պատմուածքը, որը ոչ միայն հեղինակի ստեղծագործական նուաճումներից է, այլեւ մէկն է հայ գեղարուեստական արձակի կատարեալ գործերից, որ անհրաժեշտ ուշադրութեան չի արժանացել սկզբնապէս: Յօդուածում քննուած են տարբեր գրականագէտների եւ յատկապէս ակադ. Էդուարդ Ջրբաշեանի կարծիքները ներկայ ստեղծագործութեան վերաբերեալ:

ՎԱՇԱԳԱՆ ԱՎԱԿՅԱՆ

Кандидат филологических наук, доцент ЕГУ

РАССКАЗ Г. СУНДУКЯНА «ВАРИНЬКИН ВЕЧЕР»
В СВЕТЕ АРМЯНСКОГО ЛИТЕРАТУРОВЕДЕНИЯ
(К 100-летию академика Эдуарда Джрбашяна)¹

О творчестве Габриела Сундукяна много написано и сказано. В армянском литературоведении неоднократно изучались различные аспекты его творчества. Много внимания уделялось литературным задумкам, различным деталям наследия великого драматурга, создана сравнительно богатая научная литература². Практически все литературоведы, так или иначе в своих трудах касавшиеся творчества Г. Сундукяна, особое место отводили единственному чисто прозаическому художественному произведению писателя – рассказу «Варинькин вечер»³. В предисловиях к изданиям его произведений, а чаще в отдельных публикациях исследователи высказывали своё мнение об этом рассказе⁴.

Так, ещё в 1944 году одним из первых к анализу этого рассказа обратился известный литературовед и критик Айк Гюликевхян. В своей монографии он писал: «Варинькин вечер» по своим литературно-художественным достоинствам не уступает самым блестящим произведениям нашей художе-

¹* Ստացուել է՝ 2.12.2023, գրախօսուել է՝ 26.12.2023: Էլ. հղացել՝ avagyan.vachik@yandex.com: Խմբագիր՝ Հրազդան Մանդեան:

² См. А. Бабян. Творчество Габриела Сундукяна, Ереван, 1988, с. 4, на арм.:

³ Как отмечает Эд. Джрбашян, хотя у Г. Сундукяна есть и другие произведения в прозе: «Беседы Амала», «Беседы Адида» (оба 1912), знаменитое «Завещание (Моя смерть и погребение)», но «упомянутые произведения имеют публицистический-комментативный характер и не относятся к художественной прозе в подлинном, буквальном смысле слова». Эд Джрбашян, Единственный рассказ Сундукяна, «Историко-филологический журнал», Ереван, 1981, № 4, с. 32, на арм.: В дальнейшем выдержки из этой статьи указаны в скобках: инициал автора и номера страниц.

⁴ Так, С. Базян в своей обширной (около 25 страниц) статье, посвящённой Сундукяну, лишь пару раз упоминает «Варинькин вечер», оценивая его как выражение близости автора к народу, проявившейся в реалистическом отображении действительности, а «честный и чистый характер Макако является его наиболее типичным выражением». С. Базян, Творчество Сундукяна, «Вестник АН Арм ССР. Общественные науки», Ереван, 1950, № 8, с. 59, на арм.

ственной прозы». Критик делает вывод, что «этот уникальный опыт нашего драматурга в области художественной литературы даёт основание предполагать, что он мог бы быть таким же великим прозаиком, как и великим драматургом»⁵. Не оспаривая выводов литературоведа, отметим лишь, что его «энтузиазм» ограничивается кратким пересказом сюжета и заключением, что «в рассказе «Варинькин вечер» Г. Сундукян вновь затрагивает проблему взаимоотношений между теми, кто живёт честным трудом. и теми, кто приобрёл богатство обманным путём» (Г, 76). Чтобы быть беспристрастным, считаем нужным заметить, что Айк Гюликевхян обращался и к образу Макако, отмечая следующее: «Возможно, швея изображена несколько более наивной и невежественной, но в целом изменения в её душевных переживаниях, просветление её сознания, её взросление изображено с удивительной правдивостью». Однако уверенность А. Гюликевхяна преувеличена: «Читатель убеждается, что Макако, при второй встрече с вариньками, могла бы выступить с настроениями Пепо (герой одноимённой пьесы Г. Сундукяна — В. А.)» (Г, 77–78).

Кажется, в исследовании, посвящённом рассказу, А. Гюликевхяна больше занимало авторское описание женщин и девиц, собравшихся в доме Вариньки, которых он охарактеризовал как «паразиток», напоминающих многоголовое чудовище, валяющееся в вонючей грязи и вызывающее отвращение, действительно описанное с высоким артистизмом (Г, 78–79). В оценках ясно и однозначно проявляется отношение литературного критика к женщинам данного сословия.

Геворг Абов также, словно следуя предыдущему исследователю, сравнивает «наглую, самоуверенную, бездарную, жадную, безнравственную» среду «дам-генералов» со стаей, на сей раз, «дармоедок», и пишет, что «борьба с ним трудна для Макако, но с которыми никогда не примирятся последние»⁶.

В своей монографии, посвящённой Г. Сундукяну, Г. Абов также кратко пересказывает сюжет, приводит обильные выдержки из текста,⁷ периодически пе-

⁵ А. Гюликевхян, Габриел Сундукян, Ереван, 1944, с. 73, на арм.: В дальнейшем выдержки из эссе будут указаны в кавычках: инициал автора и страница.

⁶ Г. Абов, Габриел Сундукян, Ереван, 1953, с. 256, на арм.: В дальнейшем выдержки из эссе будут указаны в кавычках: инициал автора и номера страниц.

⁷ Кстати, пересказывая сюжет рассказа, Г. Абов ошибается, говоря, что Макако уезжает тайно от мужа по приглашению Вариньки: см. Г. Абов, с. 246. Муж не только знал, но и вручил

ремежая пересказ аналитическими комментариями, чаще социального содержания, после чего приходит к убедительному для себя выводу о том, что героиня рассказа «та же Кекель из «Пепо». Однако на следующих страницах постепенно появляется мысль, что живущие честным трудом угнетены, а Бог защищает тех, кто наслаждается нетрудовыми доходами... В душе Макако просыпается ропот, протест против божьей несправедливости; она начинает освобождаться от предрассудков, вызванных религиозным мракобесием...» (А, 250–251).

Выводя из содержания рассказа надуманную мысль о том, что Г. Сундукян этим произведением пытался разжечь ненависть к врагам трудового народа среди рабочих, Г. Абов, тем не менее, считает недостатком автора то, что при таком построении и решении сюжета он «не добивается осознания необходимости последовательной классовой борьбы и свержения существующего общественного строя путём революционной борьбы рабочих» (А, 250–251).

В своих дальнейших оценках Г. Абов приводит цитаты из трудов Ленина и Сталина о борьбе за свободу личности. Методологический подход, идейно-политические постановки вопросов, взгляды и термины автора свидетельствуют, что исследование находится под идеологическим влиянием своего времени, следовательно, морально устарело и во многих аспектах неприемлемо.

В монографии (1960 г.) литературоведа, театроведа С. Арутюняна, посвящённой Г. Сундукяну, анализ рассказа гораздо более емкий и подробный и повествование подчёркнуто позитивное, нет даже мелких замечаний. Однако это не означает, что С. Арутюнян искусственно поднял оценку. Его примечания вполне обоснованы и аргументированы.

В 1934 г. С. Арутюнян как редактор подготовил к публикации полное собрание сочинений Г. Сундукяна в одном томе. В аналитическом обзоре книги, посвящённом жизни и творчеству автора, С. Арутюнян уже имел возможность оценить «Варинькин вечер», выведя его из «потаённых мест». Следует сказать, что многочисленные замечания и комментарии С. Арутюняна, будучи сделанными впервые, стали отправной точкой и во многом не потеряли своего определяющего значения в глазах последующих литературоведов. Несомненно, есть и спорные и нежелательные взгляды и мнения, как, например, следующие мысли: «Целью рассказа «Варинькин вечер»... было художественное воспроизведение влияния буржуазии на разлагающийся слой мелких произ-

водителей и рабское отношение упомянутых к буржуазному образу жизни»⁸. Или: «Рабское отношение к обществу Варинек приводит Макако к полной трагедии»⁹, и т. д. Однако подобные оценки теряют своё значение, если учесть, что в дальнейших исследованиях С. Арутюнян пересмотрел и отказался от подобных рассуждений.

В данной статье особый интерес представляет сравнение двух героев Г. Сундукяна и Н. Гоголя, в частности, Макако и Акакия Акакиевича Башмачкина из «Шинели»: «Разве Макако не была Акакием армянской действительности?», — задаёт вопрос литературный критик и указывает на сходство психологических переживаний двух героев, пренебрежительного отношения богатых, и перенесённых Акакием и Макако оскорблений. «Рассказ «Варинькин вечер» — один из примеров влияния Н. Гоголя на Г. Сундукяна. И не случайно Г. Сундукян неоднократно упоминал об этом обстоятельстве»¹⁰, — заканчивает своё рассуждение по поводу рассказа С. Арутюнян.

Возвращаясь к монографии (1960 г.) литературного критика, следует сказать, что, не желая вдаваться в подробности содержания рассказа, он справедливо полагает, что «кистью гениального художника» и с «беспрецедентной наблюдательностью» Сундукян сумел изобразить реальную картину общества того времени, описав сотканный искусством целый мир деталей¹¹. Именно эту особенность когда-то заметил Аршак Чопанян (хотя свою оценку он приписывал всему творчеству Г. Сундукяна): «Одними из особенностей... были характер и талант автора (Г. Сундукяна — В. А.), наблюдательность, способность чёткого и точного понимания жизни»¹².

С. Арутюнян в рассказе также занимали упоминания архитектурных стилей Тифлиса 1870-х годов, авторские описания фасадов сооружений, местного

⁸ Г. Сундукянц, ПСС в одном томе, Ереван, 1934, с. XLII, на арм.: В том же году это предисловие было опубликовано отдельной брошюрой: см. С. Арутюнян, Жизнь и творчество Габриела Сундукяна. Аналитический очерк, Ереван, 1934, с. 144, на арм.

⁹ Г. Сундукянц, там же, Ереван, 1934, с. XLIII.

¹⁰ Г. Сундукянц, там же, Ереван, 1934, с. XLIV.

¹¹ С. Арутюнян, Габриел Сундукян, Ереван, 1960, с. 358, на арм.: В дальнейшем будем указывать в скобках: инициал автора и номер страницы.

¹² А. Чопанян, Труды, Ереван, 1988, с. 733, на арм. Статью, посвященную памяти Г. Сундукяна, А. Чопанян написал по поводу смерти драматурга и напечатал в газете «Բիզնեսի լուր», издававшейся в К-поле (1912, # 4717): Впоследствии та же статья была перепечатана в первом томе его книги «Личности» «Դիմաքեր» в 1924 г.:

быта и особенно диалекта, что действительно является одной из особенностей этого произведения, но не самой существенной, поскольку «как и «Пепо», «Варенькин вечер» меньше всего относится к быту, а прежде всего это произведение, раскрывающее социальные проблемы» (СА, 358), справедливо замечает автор.

Оценку В. Белинского, данная творению Н. Гоголя, о простоте идеи, популярности, совершеннейшей жизненной правде, комической вдохновенности и т. д. С. Арутюнян распространяет и на искусство Г. Сундукяна, тем самым признавая армянского автора «поэтом реальной жизни» (СА, 359), и в этом нет преувеличения. Основываясь на эпизодах, мыслях, вещах и предметах, а так же на эмоциях и размышлениях из рассказа, литературовед раскрывает идеи и чувства героев, в частности, Макако. В своём анализе он даёт оценку внутренним и внешним особенностям персонажей, указывая на то, насколько Г. Сундукяну удалось, применяя различные средства и методы, воссоздать не только характеры, но и изобразить социальный класс и типичную среду, представляющую каждого из них. Подобно тому, как Г. Сундукян шаг за шагом сопровождает свою героиню и раскрывает различные стороны её ума и мыслей, С. Арутюнян пристально следит за развитием персонажа и показывает процесс роста её мировоззрения: от наивности до всестороннего познания действительности. Верно замечено: «Воистину, автор страдал вместе с героиней, считал ее страдания своими страданиями, он плакал и рыдал вместе с ней» (СА, 369).

Обзор С. Арутюняна заканчивается кратким и убедительным обобщением: «Рассказ представляет собой законченное, совершенное творение, в котором нет отрывков, которые можно оставить без внимания. Трогательная идея произведения пронизывает всю его структуру, делая его собранным, целостным организмом по своему реалистическому содержанию, убедительной форме и структуре. Истинная идея породила художественно правдивое творение, насыщенное реальными образами жизни» (СА, 370).

В главе «Габриэл Сундукян» (в 3-м томе «Истории новой армянской литературы» (1964 г.) того же автора, подраздел, посвящённый прозе драматурга и, в частности, «Варинькиному вечеру», ничего не добавляет к уже сказанному; по сути, эта публикация является кратким пересказом упомянутой монографии¹³.

¹³ См.: «История новой армянской литературы», т. 3, Ереван, 1964, с. 211–215, на арм.:

Хронологически следующим исследованием рассказа является труд Левона Асмаряна. В своей монографии, посвящённой Г. Сундукяну, он также отделил отдельную главу этому рассказу, по его определению представляющему «исключительный интерес». Вступление очень выразительно: «Варинькин вечер,— пишет он,— был контрмерой сентиментально-романтическим сочинениям того времени». В них было очень много слез. В «Варинькинском вечере» тоже. Однако эти слёзы автор утирает гоголевским смехом. Этот смех переплетается со слезами и превращает произведение в драму, достигающую жизненной глубины, где рассмотрены все социально-психологические слои жизни»¹⁴.

Начиная своё исследование с этой отправной точки, Л. Асмарян очень кратко, в нескольких строках, излагает сюжет и констатирует, что этот рассказ с его основными линиями уже присутствовал в пьесе «Разрушенный очаг», написанной, как известно, в 1872—1873 гг.¹⁵ Следовательно, это означало бы, что предмет рассказа не давал покоя и занимал мысли Г. Сундукяна долгое время, вплоть до 1877 года, когда был опубликован в январе-феврале того же года в более развитой и углублённой форме¹⁶. «Мы не знаем, задумал ли Г. Сундукян «Варинькин вечер» ещё в 1873 году, или идея написать посетила его позже. Но рассказ со своим сюжетом и характерными персонажами является естественным продолжением «Разрушенного очага» и вообще художественного реализма, приверженцем которого стал Г. Сундукян»¹⁷,— пишет А. Бабаян.

Л. Асмарян так же подчёркивает душевную, погружённую в себя чуткость авторского текста, эмоциональную насыщенность характера Макако, которые являются абсолютными ценностями для этого рассказа. Пересказав отдельные эпизоды сюжета, литературный критик изображает героев, показывает сущность их души, обуславливая её социальным положением и окружением. В отличие от своих предшественников критик утверждает, что одним из желаний и стремлений, если не главным, приведшим Макако в Сололак на «Варинькин вечер», было простое и, может быть, понятное честолюбие бедной женщины — находиться в окружении богатых дам, быть похожей на них, что, кстати, неисполнимо. «Запретный плод казался сладким и желанным. С психологической точки зрения это очень убедительно, — объясняет Л. Асмарян. — Человек

¹⁴ Л. Асмарян, Габриел Сундукян, Ереван, 1980, с. 82, на арм..

¹⁵ См. третье действие комедии «Разрушенный очаг»:

¹⁶ Печатался в газете «Մշակ» («Мшак») в 1877 году, №№ 1, 2, 5, 8, 11 и 14.

¹⁷ А. Бабаян, Творчество габриела Сундукяна, Ереван, 1988, с. 135, на арм.:

стремится и мечтает о том, чего у него нет. Когда героиня звонит в дверь дома Алеко, она испытывает глубокие чувства и желает, чтобы её соседка Кекель, или кто-то ещё стал свидетелем того, как она входит в столь почётную усадьбу. Даже несмотря на некоторые внутренние амбиции, она стремится, чтобы её увидели знатные жители округа»¹⁸.

Л. Асмаряна в рассказе занимали и впечатляющие авторские образы мещанок — женщин и девушек, которые действительно изображены очень ярко и с большим чувством, предложениями, полными сарказма и сатиры. После нескольких цитат из оригинала литературовед, не скрывая свою неприязнь и презрение к мещанам, приходит к выводу, что Г. Сундукян использовал «отрицательную направленность гоголевского реализма». «Эти примеры являются армянскими образцами колоритно-гротескных типов «Мёртвых душ»...»¹⁹, — пишет он.

Остальное, по существу, не повторяется, хотя почти приближается или отождествляется с сочинениями предшествующих критиков. Методом совершенно самостоятельного и независимого разбора Л. Асмарян добился примечательных результатов.

После всего сказанного создаётся впечатление, что сказать хоть сколько-нибудь существенное новое слово о рассказе Г. Сундукяна нереально. Но в 1981 году, проявив литературное мужество, Эдуард Джрбашян опубликовал своё новое исследование, тем самым убедив и доказав, что такая возможность всё-таки существует. Основной целью нашего исследования является показать значение труда Эд. Джрбашяна.

Какие новшества с точки зрения литературоведения привносит известный литературный критик, в чём заключается ценность его вклада в сферу нарративного анализа, особенно если сравнивать его заключения с предыдущими оценками?

На двадцати пяти страницах журнала Эд. Джрбашян представляет «судьбу» издания рассказа «Варинькин вечер» — начиная с публикации на страницах газеты «Մշակ» («Мшак») и до 1934 года, спустя примерно шестьдесят лет, когда оно было переиздано в однотомном полном собрании сочинений писателя и удостоилось внимания литературных критиков.

¹⁸ Л. Асмарян, Габриел Сундукян, с. 87–88, на арм.

¹⁹ Там же, с. 90.

Излагая ранее созданный и уже знакомый аналитический материал (хоть и всего одним абзацем, очень кратко, в виде сноски) Эд. Джрбашян «выдаёт» свою научную приверженность как литературный критик: не пренебрегать и не упускать из виду ни одно исследование, ни один более или менее значимый текст, в котором говорится о рассказе. Иногда оспаривая, иногда ссылаясь на предшествующие оценки, Эд. Джрбашян приводит свои дополнения, не довольствуясь лишь частичными ссылками. Он развивает уже сказанное, аргументирует и обосновывает свои слова убедительными научными аргументами. Так, например, ссылаясь на Л. Асмаряна и констатируя, что сюжетное ядро «Варинькиного вечера» уже присутствовало в пьесе «Разорённый очаг», Эд. Джрбашян, однако, находит, что сохранившаяся в архиве заметка о рассказе свидетельствует не только о прототипах одной героини повести- Вариньки, как полагал С. Арутюнян (СА, 369), а касается в целом всех персонажей и основ сюжета произведения (Дж, 35).

Рассматривая художественный конфликт «Варинькиного вечера» в контексте предшествующих ощутимых достижений Г. Сундукяна в драматургии, Эд. Джрбашян справедливо полагает, что как в развитии действия, так и в контрасте повествования «много пепоизма», на что очень сдержанно намекали и предшественники исследователя. Если в пьесах «Хатабала», «Ещё одна жертва», «Разрушенный очаг», как поясняет литературовед, «конфликт начинается и заканчивается внутри класса буржуазии, между старым и новым поколениями, их идеями, психологией и поведением», то в «Пепо», а затем и в «Варинькином вечере» непосредственно противопоставлены буржуазия и рабочий человек, показан контраст нравственных обликов, желаний и мечты. И хотя Макако не достигает уровня сознания Пепо, её не посещают идеи о социальной борьбе, мы уверены, что рассказ выигрывает от этого, потому что героиня остаётся в своём естественном состоянии.

Охарактеризовав «Варинькин вечер» как «классическое произведение настоящей социально-психологической прозы», Эд. Джрбашян, однако, считает, что это не обычное повествовательное произведение: оно подвергнуто определенным принципам речевой стилизации, что сделало его одним из исключительных произведений нашей прозы. Здесь речь литературоведа обретает больше теоретическое содержание, и он, как отмечает сам, рассматривает конкретно «внутренний механизм повести» (Дж, 40). В широком спектре теоретических проблем особое место отводится ха-

рактору рассказчика. В связи с этим рассматривая вопрос взаимодействия автор — произведение в целом и указывая на различия на примере прозаических произведений армянской литературы — от описания фактов, существующих независимо от автора, до беспрепятственного «вторжения» в ход истории и «судьбы героев», Эд. Джрбашян констатирует, что в «Варинькинском вечере» основной образ — сам рассказчик: конкретное лицо, имеющее психологическую определённую, отчётливость, его контуры всплывают как «ососяемого персонажа» со своими идеями и взглядами. В его образе творчески отражены неоднозначные настроения и впечатления, переживания героя. Здесь заслуживает внимания одно наблюдение литературного критика: если по поводу многих персонажей своих пьес Г. Сундукян признавался, что этот герой он сам (Масисянц, Микаел, Пепо), то в «Варинькинском вечере» у него не было похожей цели, поскольку здесь он имел возможность действовать от своего лица и со своей речью²⁰, с речью, которое звучит на тифлисском диалекте армянского языка. Почему же Г. Сундукян, излагая эту историю, не использовал литературный армянский язык? Однако в таком случае рассказ утратил бы свой «эпический характер» и непосредственность, простоту, живость и иллюзию «задушевного разговора», как замечает сам литературный критик. «Заставив» своих персонажей говорить и думать на диалекте, автор обеспечил предполагаемую естественность и непринуждённость.

В многослойной структуре речевой стилизации Эд. Джрбашян особо выделяет слой внутренних размышлений Макако, душевных терзаний и страданий героини, связанных с тревогами — приятно терзающими, но и ужасающими ожиданиями. Этому творческому слою, поистине непревзойдённому по своей психологической насыщенности, по формулировке Эд. Джрбашяна, «могут завидовать» многие произведения нашей литературы, в том числе известные романы и рассказы» (Ջ, 43).

В структуре произведения особое место отводится также безответному, замкнутому и «безмолвному» диалогу рассказчика с героиней. Автор становится советчиком своей героини, спутником и сочувствующим во всех её деяниях и душевных чувствах. Он волнуется и страдает вместе с ней: обстоятельство, которое делает произведение тёплым и живым, трогательным и

²⁰ См. Г. Сундукян, ПСС в 4-х тт., т. 3, Ереван, 1952, с. 465, на арм.:

сильным. Чувства и мысли Макако, словно проникая в сознание автора, порой превращают рассказ в монолог, наполненный сильными эмоциями. Однако если в произведениях других писателей, например, в «Ранах Армении» Х. Абовяна эта стилистическая особенность оценивается как лирическое отступление, как выражение мыслей и настроений писателя, то в «Варинькином вечере» это играет качественно новую, важную роль, благодаря чему «произведение, наделённое классическими чертами социально-психологической, аналитической прозы приобретает также черты лирической поэмы», — пишет Эд. Джрбашян (Дж, 45).

Однако это обстоятельство не означает, что литературный критик лирически отождествляет характер рассказчика с характером Макако или наоборот — вовсе нет. Как пишет он сам: «Они предстают перед нами носителями двух совершенно разных степеней и уровней миропонимания и сознания. В этом смысле можно сказать, что по всему рассказу непрерывными линиями проходят два параллельных потока сознания. Один принадлежит рассказчику, другой — Макако» (Дж, 45).

Анализы персонажей повести часто становятся близкими, иногда даже кажущимися похожими на оценки предшественников, особенно С. Арутюняна, что очень естественно. Однако при этом анализ Эд. Джрбашяна более глубок, свеж, осязаем с точки зрения рассмотрения различных вопросов, с заслуживающими внимания интересными литературоведческими наблюдениями.

Становится понятно, что литературный критик обратился к материалу по зову сердца и души, не ограничивая свою свободу уже известными оценками, мыслями, предположениями. Психологические переживания, размышления Макако о богатстве и бедности, процесс развития её общественного сознания интерпретируются с помощью глубоких научных наблюдений. Метко замечено, что «акцент в рассказе делается не на внешнем действии, а на анализе внутренних душевных страданий» (Дж, 46). Литературовед заметил главное — пережитую драму, индивидуальные душевные страдания героини, их истоки.

В отличие от своих предшественников, Эд. Джрбашян отвёл более весомое место изучению образа мужа Макако, который хоть и эпизодичен, но, как отмечает литературовед, «играет очень важную идеологическую и структурную роль» (Дж, 46). Примечательно сравнение с персонажем Пепо.

Как Пепо презрительно швыряет в лицо Зимзимову пять туманов (денежная единица), полученных от него в качестве «сочувствия», так и муж Макако бросает свои кровно заработанные, обстиранные и раздавленные купюры в «лицо всем» присутствующим. Эта сцена действительно является идеологической вершиной рассказа. Однако остаётся открытым вопрос: почему Г. Сундукян оставил этого героя без имени? Говоря о нём, Сундукян обычно употребляет сочетания: «бедняга», «муж Макако», «бедный трудяга». Конечно, сложно дать однозначный ответ. Однако, по нашему мнению, эта загадка, возможно, связана с отношением автора. Сундукян ценит своих смелых и решительных героев, таких как, например, Масисьянц, Микаэл, и, особенно, Пепо. А «муж Макако» — это, по сути, человек, который может смириться и приспособливаться. Он «беден», однако, не только в жизни и по социальному положению, но и по характеру и поведению. На первых же страницах рассказа автор косвенно или саркастически даёт понять своему читателю, что своего богатства Алеко добился обманным путём, присвоив деньги своего покойного брата, можно считать, мужа Макако. А что сделал последний, чтобы добиться справедливости, получить причитающееся ему наследство? Ничего, разве что отвернулся с презрением. Иными словами, он лишь личным поведением выразил свою обиду, а это уже указывает что он не «бедный», а жалкий, как говорит известная героиня Гр. Матевосяна²¹. Размышляя в этом направлении, мы считаем, что подобное равнодушие Г. Сундукяна также можно считать методом и критерием формирования характера героя.

Создаётся впечатление, что Г. Сундукян не испытывает особой симпатии к «мужу Макако» из-за одной «черты его характера»: «при необходимости» он всё «доказывал» руками и кулаком... «не затруднял» и «не томил язык»²². Такая же излишняя суровость к жене видна в последнем эпизоде рассказа, когда он выводит потерявшую сознание супругу из дома Алеко: «...ухватил Макако за руку и с криком потащил бедняжку вниз ...»²³.

²¹ Гр. Матевосян, СС в 2-х тт, т. 2, Ереван, 1985, с. 242, на арм.

²² Г. Сундукян, Сочинения, Ереван, 1984, с. 836, на арм.

²³ Там же, с. 863. В связи с этим эпизодом Л. Асмарян написал: «Он (муж Вариньки.— В. А.), видя угнетение и эксплуатацию себе подобных, злится на весь мир, но направляет свой гнев не по верному адресу, а на Макако»: Л. Асмарян, Габриел Сундукян, Ереван, 1980, с. 92, на арм.

Возможно, многое стало бы яснее в упомянутом вопросе, если бы автор смог осуществить своё желание: переделать последнюю сцену, о чём свидетельствуют записи, сохранившиеся в его бумагах (Дж, 49).

В своей статье Эд. Джрбашян особо выделил также стилистические средства рассказа и в этой системе подчеркнул две противоположные линии: лирическую и сатирическую, которые, как он замечает, «представляют собой весомые и равносильные факторы: они возникают вместе и присутствуют на протяжении всего рассказа» (Дж, 49); свойство, что также делает «Варинькин вечер» уникальным явлением в армянской литературе.

Наряду с размышлениями, переживаниями, мечтами, разочарованиями Макако, а также событиями и непосредственным эмоциональным отношением рассказчика, литературный критик больше акцентирует внимание читателя на другой линии, на юморе, где он выделяет только один тип: «беспощадная и бескомпромиссная сатира». И здесь он абсолютно прав. Отрывки, рассказывающие об отношениях Вариньки и её мужа, о горячем, но ложном благочестии последнего, и особенно описания внешности, одежды, а также сплетен и клеветы, лицемерия и напускной вежливости женщин, собравшихся в доме у Вариньки, на первый взгляд могут показаться юмористическими и сатирическими, в то время как они гротескны, наполнены убийственным сарказмом. В этом произведении Г. Сундукян действительно добился абсолютного художественного успеха, разительно подчеркнув противоречие между внешней формой и содержанием. «Это гоголевский стиль...» (СА, 367), — как в своё время заметил С. Арутюнян.

Хотя и вкратце, однако Эд. Джрбашян сделал предметом рассмотрения и другие элементы художественной структуры рассказа: композицию, сюжет, жанровые и языковые особенности. Об этом мы не будем подробно говорить, поскольку наш отзыв имеет лишь ознакомительный характер. Отметим лишь, что литературовед представляет последовательные этапы проявления содержания произведения, начиная от завязки и заканчивая решением, и находит, что оно выходит за рамки простого повествования функциональной прозы и имеет более лирическое дыхание, наполненное глубоким психологическим смыслом, что делает сюжет оригинальным и неповторимым.

В череде литературоведческих разборов отдельным предметом рассмотрения становится вопрос о жанровой принадлежности произведения. Несмотря на то, что сам Г. Сундукян «Варинькин вечер» охарактеризовал как «малень-

кий роман», по содержанию он целостное творение жанра романа. Эд. Джрбашян, тем не менее, считает правильным называть произведение рассказом, поясняя, что «оно далеко от резкой сжатости новеллы, сгущения событий, сюжетных разветвлений, подробностей и деталей романа или повести, и, в конце концов, их обширного объёма» (Дж, 49). Как можно увидеть, доводы литературоведа не оставляют места для споров. Однако надо сказать, что, ограничив себя жанром рассказа, Г. Сундукян в то же время вышел за его рамки, создав свой личный тип, который не является обычным повествовательным произведением: в нём присутствуют «ещё и яркие черты лирической поэмы», — отмечает Эд. Джрбашян (Дж, 45).

Один из важных художественных принципов, использованных в рассказе, Эд. Джрбашян считает ограничение описываемых действий всего одним днём от раннего рассвета до позднего вечера, в котором Сундукян, однако, сумел «показать прошлое и настоящее героини и намекнуть на будущее» (Дж, 53). И, несмотря на то, что литературовед особо подробно не рассматривает этот вопрос (как и следовало ожидать), признаем, что это действительно настоящее художественное изобретение, одно из сильных художественных свойств произведения, где автору удалось в столь узких временных рамках зримо воссоздать психологическую конкретность, живые черты, убедительный жизненный характер, целую человеческую трагедию, а также осязаемо продемонстрировать непримиримую социальную противоположность общества того времени. И не случайно, что «Варинькин вечер», с однодневной длительностью описанных в нём событий Эд. Джрбашян сравнивает например, с «Артистом» Ал. Ширванзаде, «Гикором» Ов. Туманяна, «Чаху» Р. Патканяна, в которых события разворачиваются на протяжении периода времени от одного года («Артист», «Гикор») до нескольких десятилетий («Чаху»). И хотя, литературный критик не отдаёт предпочтение ни одному из них, не оценивает одно в ущерб другому, что, конечно, было бы неуместно, но, думаем, в этом структурном вопросе можно угадать скрытую симпатию исследователя к «Варинькиному вечеру».

От взгляда литературоведа не ускользнули великолепные описания контрастов пространственной и предметной среды в богатой визуальной системе повести. С одной стороны, бедный и непривлекательный Сейидабат, с другой стороны, богатый и роскошный Сололак; с одной стороны, внешнее и внутреннее великолепное убранство дома Алеко и особенно богатство «будуара» Вариньки; с другой стороны, неприглядный дом Макако — убогое «помещение

с тоном» стали не только эталонами высокой художественности повести, но и важнейшими выражениями, обеспечивающими её социальное содержание. И вовсе нельзя считать преувеличением оценку Эд. Джрбашяна, что «в истории армянской прозы трудно указать другое произведение, где описание пространственной и предметной среды столь активно участвовало бы в раскрытии социального содержания» (Дж, 54).

В статье Эд. Джрбашяна интересен и теоретический анализ, связанный с художественным мышлением и принципами, идейно-структурными связями рассказа с повестью «Шинель» Н. Гоголя. Мы упоминали уже, что о некотором сходстве этих рассказов писал и С. Арутюнян²⁴. Этот факт констатирует и Эд. Джрбашян в своих сносках (Дж, 56). Однако, если при сравнении произведений С. Арутюнян в основном акцентировал внимание на сходстве двух главных героев — Акакия Акакиевича и Макако, презираемых и высмеиваемых в их жалком социальном положении, то наблюдения Эд. Джрбашяна больше относятся к тесным связям идеологических пафосов, художественной структуре и различным особенностям. В связи с первым в рассказах литературовед подчёркивает гневное недовольство унижением «маленького человека». Вторым общим моментом является авторская особенность изложения описываемых реалий посредством живой речи, создающей иллюзию беседы, которая в «Варинькином вечере» ещё более усиливается за счёт стилизации с применением диалекта, как отмечает Эд. Джрбашян (Дж, 56). При сравнении двух произведений, несмотря на старания литературоведа держать творчество Н. Гоголя в центре внимания, детали, всплывающие из «симпатии», скорее относятся к «Варинькиному вечеру». И заметно, что он больше стремится оценить и выявить достоинства творчества Г. Сундукяна, конечно, не прибегая к знакам равенства или неравенства, отмечая, что весьма значительным явлением было уже и то, что Г. Сундукян творчески воспринял и развил художественную традицию Н. Гоголя.

Автор заканчивает статью очередной высокой, но беспристрастной оценкой рассказа: «Варинькин вечер» — это не только одно из высших творческих достижений Габриэла Сундукяна, но и одно из самых глубоких и совершен-

²⁴ См.: Г. Сундукяни, ПСС в одном томе, Ереван, 1934, с. XLIV, на арм.: С. Арутюнян упоминал некоторое сходство двух произведений также в своей монографии 1960 г., посвящённой Г. Сундукяну.

ных произведений армянской прозы. Спустя более чем столетие после своего создания оно не утратило ни на йоту своего очарования и влияния» (Дж, 57). Можно добавить, что и сегодня оно сохранило как литературную, так и теоретическую значимость и ценность.

Таким образом, исходя из проблемы и целей нашего исследования, рассказ Г. Сундукяна «Варинькин вечер» мы рассмотрели на хронологической оси последовательности затронувших его произведений²⁵, уделяя особое внимание на журнальную статью заслуженного литературоведа, академика РА Эдуарда Джрбашяна.

Мы постарались показать особое литературное чутьё известного учёного, обратившего надлежащее внимание на это произведение, подвергнувшего его тщательному анализу, прокомментировавшего его структурные особенности, повествовательные пласты, выявившего и прояснившего многие творческие проблемы, подчеркнувшего связь эстетических принципов Г. Сундукяна с русским классиком Н. Гоголем, с его реалистической системой, особо подчёркивая тесную связь «Варинькиного вечера» с «Шинелью».

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

Գաբրիել Սունդուկեան, ակադեմիկոս Էդուարդ Ջրբաշեան, «Վարինկի վեչերը», պատմուածք, Գօգօլ, ժառանգութիւն, ռեալիստական համակարգ, «Ծիւնը»

²⁵ Рассказ лаконично упоминал и С. Агабабян в предисловии к изданию «Сочинений» Г. Сундукяна (1984 г.). Он на двух страницах высказал оценку рассказа, по сути не привнеся ничего нового: см. Г. Сундукян, Сочинения, Ереван, 1984, с. XIX–XXI, на арм.: Значимых новостей по поводу этого рассказа не сообщает также и А. Бабаян, который, в монографии, посвящённой творчеству Г. Сундукяна, сужая границы своего исследования лишь рассмотрением драматических произведений автора, оценки касательно «Варинькиного вечера» в основном приводит из статьи Эд. Джрбашяна. см. А. Бабаян, Творчество Габриела Сундукяна, Ереван, 1988, с. 134–137, на арм.

SUMMARY

In the literary heritage of the famous Armenian playwright Gabriel Sundukian (1825–1912), the short story «Varinki Vecher» is of exceptional interest, which is not only one of the author's creative achievements, but also one of the perfect works of Armenian fiction that initially did not receive proper attention. The article examines the works of various literary experts, especially Eduard Jrbashyan's opinions on this work.



ԹԱՄԱՐԱ ԱՆ ԴՐԷԱՍԵԱՆ
Բանասիրական գիտ. թեկնածու

ԿԵՐՊԱՐԱԿԵՐՏՄԱՆ ԱՌԱՆՁՆԱՅԱՏԿՈՒԹԻՒՆՆԵՐԸ ԼԵՒՈՆ ԲԱՇԱԼԵԱՆԻ ԱՐՁԱԿՈՒՄ

Յօդուածն անդրադարձ է Լեւոն Բաշալեանի կերպարակերտման առանձնապատկութիւններին: Կերպարների հոգեբանական, խորքային վերլուծութիւններ իրականացնելու համար կիրառուել է վերլուծական հոգեբանութեան փորձը՝ վկայակոչելով Զ. Ֆրոյդի, Կ. Եունիգի կարծիքները:

Աշխատանքում շատ հարցեր բացատրուել են գրականագիտական ժամանակակից փորձով: Նորավէպերում եւ պատմութեան գիտական հարցերի հոգեկերտութեան յատկանիշները քննուել են մի քանի եղանակներով:

- հասարակական յարաբերութիւններում ընկճուած, մեկուսացած բնաւորութեան գծեր ցուցաբերող կերպարների գործողութիւնները պատճառաբանուել են ընկերային միջավայրի դերակատարութեամբ ու անձնային յատկանիշներով:

- կերպարների վարքագծային վերլուծութեան համար կիրառուել է դիմանկարը՝ ընկերային-հոգեբանական, ազգային շերտերով, որն օգնել է ամբողջացնելու բնաւորութեան հոգեբանական նկարագիրը:

- կարեւորուել են առարկայական միջավայրի, բնութեան երեւոյթների նկարագրութիւնը, որոնք միջոց են հանդիսացել հոգեբանական թափանցումներ կատարելիս:

TAMARA ANDREASYAN

Candidate (Ph.D.) in Philology

PECULIARITIES OF CHARACTER DEVELOPMENT IN THE PROSE OF LEVON BASHALIAN¹

The Western Armenian literature of the 1980s revolved around human beings and their complex and multi-layered relationships with the inner world and society, transforming the various manifestations of public life into the material of the fictional prose. Fictional characters from this period undergo diverse psychological and behavioral transformations, shaped by their social roles, within the realm of intricate human relationships.

In the limited number of his literary creations, Bashalian also delved into the exploration of individuals within various social dimensions and life conditions, as well as their inner world. The author occasionally utilizes descriptive imagery to establish comparisons and contrasts between the surrounding environment and the character's inner world. Characters in Bashalian's fictional prose often embody individuals who, for diverse reasons, have become alienated from society – some seek solace in solitude, while others, burdened by harsh social conditions, have succumbed to a loss of resilience. Nevertheless, we also come across characters who opt for the path of resilience and refuse to surrender. In certain works, the author attains profound generalizations by delving into personal feelings and experiences, revealing intricate psychological nuances, particularly through vivid descriptive imagery.

In the author's debut novel, "Disenchanted", the character of Gevorg serves as an illustration of how a lack of positive personal characteristics and self-doubt can fragment an individual's identity, rendering them susceptible to a range of social influences. The narration also provides a specific attitudinal-evaluative perspective on the environment in which the protagonist lives and works. However, it emphasizes that the consistent failures experienced by Gevorg are primarily attributed to his personal traits, irrespective of the external environment and other factors. Regardless of the environment and external factors, Gevorg either withdraws into solitude,

¹* Ստացուել է՝ 14.11.2023, գրախոսուել է՝ 18.11.2023:

էլ. հասցէ՝ tamaraandreyan@gmail.com: Խմբագիր՝ Գէորգ Սարեան:

immerses himself in contemplation or his preferred pastime, reading, or his attempts to integrate into society are so uncertain that they only elicit boredom and laughter from those around him. Wherever Gevorg appears, he remains the same silent and reserved person. The author also constantly alters the environment surrounding the character. In the novel's opening, we observe Gevorg studying in school, where despite being the oldest among students, he cannot evade being "tormented" and becoming the target of "all the mischief conceived by these young minds". In the second setting, again a school, and despite the shift in the character's role—now as the teacher—persecution persists. The reason lies not with the students. "During the first months, the students did not deviate much from that respectful attitude they typically show to each new teacher."² The weak character of the teacher gradually pushed them towards "embracing audacious behaviors".

The author seeks to completely expose the character of the protagonist through the third setting, Ziumpiulian's apartment, where Gevorg works as a private tutor. Prominent among the character's behavioral traits are shyness, distrust, and timidity. The consistent behavior of Gevorg, lowering his head and avoiding eye contact every time he encounters Mrs. Ziumpiulian, implies that a change in milieu does not bring about a substantial shift in Gevorg's inner world. Certainly, close interaction with the lady instills a certain boldness in him, the consequence of which is a confessional letter that ultimately proves detrimental to Gevorg. The traits emphasized in the character, as mentioned earlier, are also evident in the part where, after much hesitation, he opts to submit one of his compositions to "Arevelk"³, not under his real name but under a pseudonym. It turns out that the milieu does not play such a significant role in his failures. In this context, personal characteristics take precedence, impeding his integration into the social milieu.

The Swiss psychiatrist and founder of analytical psychology, C.G. Jung, who coined the terms **extroversion** and **introversion** in psychology (the emphasis is ours—*T.A.*), argues that these concepts characterize the personal characteristics of an individual. Jung posits that the extrovert is oriented toward external content, while the introvert is focused on the internal. The distinction between inner and outer experiences is solely defined through consciousness, and only through consciousness

² **L. Bashalian**, Yerker (Writings), Yerevan, 1962, page 16. Subsequent references to quotes from this book will be provided in the essay, denoted by the page number in parentheses.

³ *Arevelk* (in English – *Orient*) was a widely circulated and read Armenian newspaper published and circulated throughout the Ottoman Empire.

can an individual recognize whether they are more aligned with external content to the detriment of the internal or vice versa. According to Jung, the conscious extrovert values their connection with external content and fears their inner content, while the introvert fears not themselves, but the object, which they attribute with incredible horrors⁴.

Gevorg's distinctive personal traits enable us to classify him as an introvert, marked by characteristics such as finding satisfaction in solitude and wholeheartedly delving into his thoughts, which manifests in his creative pursuits. Simultaneously, he faces various obstacles at different societal levels.

Even the external description provided for the character, centered around the portrait, already unveils the weak-willed traits of Gevorg: "The face, truth be told, had the utmost bitterness of Millevoeye. The eyes shone with the color of glass, which represented not a specific shade but a reflection of the color of the surrounding object" (p. 6). While the mention of Millevoeye⁵ might be justified by the author's intent to underscore the "harmful" impact of romantic literature on generations, the allusion to the indistinct color of the protagonist's eyes implies that we are dealing with an individual possessing a weak, indecisive character.

The literary critic Z. Avetisyan, regarding the portrait as a fundamental element in the poetic structure of artistic creation, contends that, unlike in painting, a literary portrait is a protracted sequence of perpetually shifting states that undergo continuous evolution, assuming cinematic expressions. Analyzing the matter within the context of the historical novel, particularly in works like D. Demirchyan's "Vardanank" and Raffi's "Samvel," the literary critic astutely observes that the portrait serves as a compilation of layered information. This includes physical, psychological, and national aspects, along with diverse elements of historical and social symbolism⁶. Certainly, the genre-specific peculiarities of the novel or short story do not always allow Bashalian's prose to fully reveal the multi-layered meanings of the literary portrait and the changes observed in the development of a character. However, the author often turns to the literary portrait in the course of character development with the aim of achieving psychological insights.

⁴ **K. Jung**, Lectures at the Zofingia Club. Analytical psychology. Seminars, Moscow, Club Castalia, 2018, Art. 210.

⁵ Charles Millevoeye (1782–1816) is a French poet who became famous for his romantic poems at the beginning of the 19th century.

⁶ See **Z. Avetisyan**, Psychology of Literary Creation, Yerevan, 2011, p. 81–84.

If Gevorg's portrait leads us to presume in advance that we are dealing with a person of weak character, in another work, the novel "The Circle of Galatia", the portrait of Armenak suggests that the character possesses a strong personality. "It was a remarkable face, entirely different from those peaceful and indecisive faces I was accustomed to seeing there. His eyes were round and deep, but so deep that the glitter of the eye-pupils burn there, like a cigarette butt in the darkness of the night" (p. 33–34). Here, too, the depiction of the eyes is at the center of the portrait. In Gevorg's case, the indistinct color associated with his character; here, the repeated emphasis on the "depth" of the eyes and the presence of beard stubble already suggest overemotional and a fiery character.

In Bashalian's prose, the literary portrait encapsulates social-psychological content. For instance, the depictions of two women in the work "Two Women (From the Paved Streets of Galatia)" not only showcase a shared social environment but also construct entirely contrasting images when the author briefly delves into the national identity of the characters.

Z. Avetisyan also discusses the "background of the portrait," which serves to complement, adorn, and enrich the portrait. According to the literary critic, the material world that envelops the character not only signifies the setting and spatial movements but also helps reveal the character's inner world⁷.

In this work by Bashalian, the setting remains the same: the noise and bustle of the paved streets of Galatia. Both women were compelled to go out onto the street for the same reason – necessity, but their methods of action were different. In the portrait, the author particularly emphasized the role of nationality, from which other characteristics of the portrait seem to emanate. Describing the first wife, the author writes: "The place of origin, whether from a corner of Bologna or Hungary, remained unknown to me. The woman appeared to be in her thirties, possessing a face that held no remarkable beauty or ugliness, rather, one easily dismissed." (p. 155). Shortly thereafter, Bashalian portrays the second woman. "She was a provincial refugee from the Plain of Mush, if I am not mistaken. A red fabric covered her entire face up to the mouth. Only her sunny cheeks and small black eyes were visible, revealing a glimpse of courage." (p. 156). Certainly, the writer's subjective stance and the intention to underscore origin, genetics, and national pride are evident here. In Bashalian's prose, we also encounter depictions of

⁷ See Z. Avetisyan, mentioned work, p. 52.

the transformations occurring in an individual's inner world due to the weakening or rupture of the individual-society relationship. The factors contributing to an individual's detachment from society are varied, and the ways in which this separation becomes evident also display diversity. For example, in the chapter "Turtle" from the diary "Mediterranean memories", the author presents the character of the hunchback with quite interesting characteristics. This unnamed protagonist, marked by an outward melancholy that captures the writer's attention amidst the monotony of the deck, alleviates his loneliness and fulfills his psychological need for love and companionship through a mute turtle. Unlike humans, who are higher beings, the turtle does not remind of his comical and unattractive appearance. Bashalian manages to describe the changes happening in the inner world of the hunchback when he takes a small, mute creature in his hands. "And he took the animal of the ground and began to kiss the shell on its back, lick the belly with the tongue, sticking out through the hole on the side of the head, and licking. He then unbuttoned his jacket, placing it inside, and threw both sleeves over it with an infinite intensity of passion." (p. 129). This individual, alienated from society throughout his life, releases the emotions accumulated within him, directing them towards the speechless turtle, which, in turn, cannot reciprocate his feelings in any manner. It is interesting that for the final revelation of the psychology of the hunchback, the author asserts that instead of the turtle, he could have chosen a cat or a dog, which were capable of moving independently and taking what they wanted. However, it seems he consciously chose the turtle, which he took out of the trunk, let it breathe, and put it back. Here, Bashalian aims to underscore that the hunchback, who had not sensed the need for his own Self in many years, now sought to fulfill it with the assistance of a turtle.

In the novel "Pigeons", we deal with a slightly different reality. However, the similarity in these two cases lies in the fact that, akin to the hunchback in this scenario, the old man also attempts to fill the void left by his lost family through pigeons. He dedicates crumbs of love and passion that have accumulated within him to these birds. The author places significant importance on the physical environment in character development, considering it an auxiliary tool for unveiling the psychological aspects of the characters. "The environment is more than just surroundings; it is an integral part of the character. This is particularly true for the home interior, which can be viewed as a symbolic or metaphorical extension of the character. A person's home is a reflection of themselves. By envisioning it, one can also envi-

sion its owner.”⁸ Similarities can be seen between the external description of the old house and the old man. The red color of the house, already acquiring “moldy cherry shades,” evokes a connection with the “boiled earth-colored” and “plump” cheeks of the old man, and against the backdrop of antiquity, the always “closed” shutters of the house stand out with “long, black coat” and the fez of “ancient solid” form. The door of the old house holds particular symbolism, characterized by “large iron hinges and a massive rattle.” It appears to serve as a connection between the external and internal worlds. When the door swings open, it marks the only interaction the old man and his sisters have with the outside world—a visit to the church. Conversely, when the door closes, the existence of the external world ceases. “There before them began a private world, a life constructed with yearning, silence, prayer, destruction, the distant echoes of which scarcely emerged occasionally and reverberated in the village.” (p. 216).

M. Arnaudov, in the book “Psychology of Literary Creativity,” discussing the literary prowess of Honoré de Balzac, emphasizes that while the author observes life keenly and swiftly he grasps various human conditions, it doesn’t imply that he never indulges in descriptive styles. Reading the preface to “Father Goriot,” with its spatial depictions of streets, houses, furniture, and clothing, illustrates how the realist, renowned for dissecting passions, adeptly makes characters influenced not only by their social environment but also by the circumstances of life in a relevant manner⁹.

If the old man’s connection with the external world was so feeble that it couldn’t fill his “empty and devastated” heart, then two “white and soft” doves, unintentionally entering through the window of the house, bridged this gap with their innocent presence. Similar to the hunchback described earlier, this old man, isolated from the entire world and its people, undergoes a transformation in the company of these mute beings. The initial external portrayal of the character in the work served as a means of depicting the old man’s inner world. In this section, the writer revisits the same scenario, revealing the internal joy stemming from the alteration in the old man’s countenance and gaze. “And surrounded by birds, enveloped in their midst, his heart would swell with delight, his gaze shedding the stern and austere expression of an antiquated and discontented man, now softened by bewilderment.” (p. 217).

⁸ Welleck R., Warren O., *The Theory of Literature*, Yerevan, 2008, p. 327.

⁹ See M. Arnaudov, *Psychology of literary creativity*, Moscow, 1970, p. 77.

The political and social persecutions experienced by individuals in the Ottoman Empire, especially Armenians, had inevitable consequences. In Bashalian's prose, characters grappling with complex social situations often undergo a loss of personal and national dignity, surrender easily, abandon the fight, and reevaluate their lives. These individuals, including pilgrims, craftsmen, and small traders residing in damp and dark inns of Istanbul, lose the will to resist, succumbing to adaptation and compliance. Such characters can be found in Bashalian's works like "Soft People", "Free of Charge" and "The Neighbor Woman". To portray the oppressed mental state of these characters, Bashalian eschews a focus on depicting clothing or other symbols with social significance. Instead, he employs body language and uncertain movements as a means of unveiling the internal experiences of the characters.

"- What do you want?" the old man asked the newcomers again with a solemn voice, standing at the door as the newcomers removed their boots, bowed their heads, and clasped their hands together." (p. 202) ("Soft People").

"Recently, I've frequently witnessed the poor man in a state of profound melancholy. His head was consistently bowed..." (p. 196) ("Free of Charge").

"The following day, he was once again in his place, laboring incessantly, never raising his head." (p. 45) ("The Neighbor Woman").

In the given examples, a common characteristic among the protagonists is "having their heads bowed", indicative of inferiority and uncertainty. The weight of poverty and burdensome cares made them appear smaller and more fragile externally. However, their inner worlds assumed rigid and unyielding forms.

In addition to the characters mentioned, Bashalian's prose also features energetic and combative individuals endowed with strong willpower. These characters can be found in works such as "The Circle of Galatia", "The Vow of a Priest", and later in "Voice of the Tribe".

"The Vow of a Priest"¹⁰ stands out as one of the enduring works of the writer. Despite varying assessments from literary critics, the novel is noteworthy for its diverse artistic images, narrative depth, and comprehensive psychological characterization of the characters.

¹⁰ In 1964, based on Bashalian's "The Vow of a Priest," the "Hayfilm" film studio produced a short film directed by Henrik Margaryan. The film was showcased at the Cannes Film Festival. (Source: <http://www.irates.am/hy/1453443893> / 26.09.2020).

Hakob Oshakan, in his reference to L. Bashalian, observes that despite its compactness, the novel carries a “heavy atmosphere.” According to the theorist, within this work, a “poet,” a “researcher of morality,” an “artist,” and a “thinker” are in a struggle. Oshakan determines the weight of the material by the influence of the “mutual” pressure stemming from these four or five intentions¹¹.

A. Arpiaryan, reflecting on Bashalian and his contributions years later, identifies several significant features in works such as “Khachakhchi” and “The Vow of a Priest.” Arpiaryan notes, “Bashalian, despite positioning himself as an adversary to the old Armenian faith, wrote about its victory in the moral war. Simultaneously, he expressed concern about the anticipation of other wars. Through his stories, Bashalian envisioned and celebrated the nation’s physical strength. “Khachakhchi” and “The Vow of a Priest” succeed one another, praising those adept in handling weapons, an uninformed youth skilled in combat, and an Armenian priest who never forgets his rifle. According to Arpiaryan, these individuals represent the Armenians of the future, and Bashalian’s literature was offered to people before they even witnessed it.”¹²

The spirit of struggle and rebellion mentioned by Arpiaryan is indeed noticeable. However, in our opinion, in addition to the call for the Armenian people to achieve freedom through weapons, there were also expressions about natural human needs to indulge in passions and lively sensations, to be closer to nature, and to act freely.

The central figure of the narration, Torosents Akob, embodied the spirit of a free child of nature, a source of pride for the province. This young man, dedicating his conscious life to adventurous exploits, didn’t engage in clandestine, nocturnal battles but rather confronted danger boldly, seemingly with the sole aim of showcasing the supremacy of his strength and his disdain for peril. The author underscores this aspect when noting Akob’s descent from a relatively affluent family, highlighting the character trait that drove him to seek not profit but peril in his pursuits. In other words, for Akob, the engagement in conflict wasn’t a compelled action, as in the case of Harutyun in the novel “Khachakhchi,” but a natural compulsion to exert his strength and display courage.

¹¹ See H. Oshakan, Overview, no. 5, Jerusalem, 1952, pp. 95–96.

¹² “Newsletter of Literature and Art”, Book B, S. Petersburg, 1904, Page 175–176.

Akob's favorite activity was hunting, during which he appeared to disconnect from reality, wholly surrendering to his passions and emotions. To underscore Akob's internal and spiritual bond with hunting, the writer likens it to a religious service, with gunpowder serving as incense, "he would bring the strength of it as an offering to that sanctuary." Bashalian, in describing the hunting scene and the character's emotional encounters, seeks to accentuate Akob's inseparable connection with nature during these moments, a connection deepened by his inner sentiments.

The freedom-loving Bashalian envisions Akob far from civilization and humanity, amidst snow-covered mountains and forests, where the expansive whiteness serves to further evoke the wild instincts of man. "In this snow-covered expanse, under the fierce wind that powdered his face with snow and adorned his mustache and beard with icicles, he himself would resemble an untamed and familiar child of nature, a creature from the earliest centuries, entirely removed from humanity. Free from the influence of civilization, he could continue his life as a free and noble animal, wild and untamed, on the earth with one beat that came out of it." (p. 115).

However, Akob didn't solely channel his strength and energy into satisfying his innate senses; he also served as the protector of his fellow villagers, assuming the role of the guardian of the village. The only dissatisfied parties with Akob were his parents. The profound love they harbored for their son, coupled with the anxiety stemming from his adventurous life, led them to persistently attempt to distance him from weapons. The church emerged as a potent force capable of achieving this. "What a woman couldn't accomplish, the church did." (p. 117).

In the context of archetypes of the collective unconscious identified by Carl Jung in his work "Analytical Psychology," Yu. Hovakanyan examines the archetype of the Shadow among others. Citing the opinion of the Swiss psychoanalyst, he writes that the awareness and acceptance of one's own Shadow are desirable and pleasant, not because it further emphasizes internal contradictions and evokes a sense of inadequacy. According to him, the analysis shows that we attribute to others all the characteristics that we do not want to attribute to ourselves. This happens not only with individuals but also with nations¹³. Hovakanyan gives the example of the Armenian people, noting that, having lived in the Ottoman Empire for six hundred years, Armenians judged themselves the same way Turks did. "An Armenian is

¹³ See **Yu. Hovakanyan**, *Psychoanalytic philosophy* (Freud, Jung, Fromm), Yerevan, 2001, p. 65.

a slave, a rayah, incapable and unworthy of carrying weapons, unworthy of freedom and independence, unworthy of having their own state,” said a Turk, and the Armenian repeated the same¹⁴.

In the prolonged efforts of Akob’s parents to separate their son from weapons, one can see not only parental concern but also a universally formed psychology that has long lived in terror under the Turkish sword, against which Bashalian also protested.

Akob, who was ordained as a priest against his will Akob, now known as Ter Mesrop, bore no resemblance to his former self. Initially, Father Mesrop might have experienced internal rebellions, but over time, even these dissipated, leaving the once robust young individual transformed into a “sad and insignificant person.”

However, Bashalian’s intention was not to deepen the psychology of a character resigned to his slave status but rather to rekindle the fighting spirit of the nation. Therefore, the Priest rediscovers his former feelings, and his dedication to the weapon surpasses the commitment to the church pillar and the vow he took. As K. Danielyan aptly observes, “In the insane ecstasy and insane passion of Father Mesrop, there was a many-sided secret of the prolonged expansion of the spirit of freedom, the joy of rebellion, the enjoyment of power, the joy of victory, and the ardor of a great feeling giving birth to the desire for freedom.”¹⁵ The “foolish cry” of the Priest, newly embarking on the hunt, resonates in the silence of the night, serving as a poignant symbol of the last attempt to break free from the chains of slavery and confinement—a subtle hint skillfully woven by Bashalian.

The theme of struggle and survival through the power of weapons is also explored in Bashalian’s work “Khachahchi.” Bashalian, in his works, endeavors to depict the emotional states of characters through the description of natural phenomena. While in the portrayal of Akob’s character, the emphasis was on the inseparable connection between man and nature, influenced by the awakening of primal human instincts, in “Khachahchi,” the writer employs the image of nature to convey the character’s emotional state.

The narration commences with a portrayal of a chilly and restless December night, where the howling of the “spicy wind” serves as a vibrant prelude, and the “monotonous” beats, echoing the hour of the night, intensify the image, creating

¹⁴ Ibid., page 68

¹⁵ K. Danielyan, *Literary Cultivators*, Yerevan, 1977, p. 377.

an impressive and uneasy atmosphere. The flock's "runs" transform into the "bottomless cry" of nature, and the night's rhythm morphs into a haunting "howl." The elemental force of nature seems to mirror the emotional state of the youth who seeks refuge in the churchyard, with "muttering of curses" between the teeth every half hour underscoring this unease. Hambardzum is restless because he views cross-dressing not as a right but as a necessary step to ensure his own survival and that of his family. In Bashalian's works, such as Akob and Zohrab's Hakobos, different perspectives are brought to the issue. An important aspect of the case is the emphasis on the necessity of not succumbing to captivity and resorting to weapons, a notable characteristic already present in Bashalian's works from the 1890s.

Previously, Bashalian addressed another form of resistance, rooted in the preservation of religion and national identity. In the story "The Circle of Galatia," it is intriguing how a young man, lacking extensive and diverse religious beliefs and guided solely by his father's guidance, chooses to endure extreme poverty rather than seek assistance from his affluent yet Protestant uncle. Despite having been under his uncle's protection for an extended period (four years) and physically participating in Protestant prayers on Sundays, Armenak vehemently rejects his uncle's offer because he always remembers his father's words: "Hold on to your grandfather's faith!" (p. 37).

It might seem easy for a twelve-year-old boy to stray from his faith, especially given the absence of his father, and his uncle's gradual attempts to adapt him to this new situation. However, Armenak proves to be a strong and sincere character. These traits become evident at the beginning of the novel when the author contrasts the youth with the audience gathered in the Protestant cafe. The clientele of "Resd" includes unemployed teachers, clerks, and "Protestant preachers aspiring to office," who exhibit exemplary behavior but succumb to the "fat and intoxicating" atmosphere of the cafe. They speak in hushed tones, uncertainly glance at newcomers, and display hesitancy in their movements. In contrast, Armenak is sociable, with fast and nervous movements, a sharp and penetrating gaze, and a careless and indifferent attitude toward his surroundings. Bashalian further emphasizes the contrast in clothing, noting that while others try to conceal "a lack of a button or a feather on the shirt" by buttoning up their coats to the collar, Armenak casually displays his dirty and untucked shirt. The author adds, "This young man was a blasphemy among these meek people" (p. 34). This initial external description, outlining certain aspects of the character, is later affirmed by Armenak's story. Even after being ex-

pelled from his uncle's house, the youth's will remains unbroken in the face of need and poverty. While Armenak may not be a Protestant, he represents a unique "protest," vociferously denouncing human injustice within the temple of Protestantism.

In analyzing the peculiarities of character development in Levon Bashalian's works, several distinctive features emerge:

- The author adeptly captures the psychology of individuals navigating diverse societal arenas, establishing a nuanced link between the external milieu and their inner worlds.
- Seemingly inconspicuous external details play a pivotal role in unraveling the psychology of the characters. Across various works, the author achieves profound depth by skillfully describing objects and the surrounding environment.
- Bashalian assigns significant importance to the utilization of literary portrait, imbuing them with not only psychological depth but also social relevance.
- There is a notable emphasis on the preservation of national identity, with the author creating contrasts between the psychological traits and life experiences of the people who have endured centuries of slavery.

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

իրապաշտութիւն, հոգեվերլուծութիւն, գեղարուեստական կերպար, էքստրաէրսիայ, ինտրովերսիայ, դիմանկար, նախատիպ (archetype), առարկայական միջավայր, օտարում:

SUMMARY

The article touches upon the peculiarities of character development in the works of Levon Bashalian. Drawing on the insights of analytical psychology, we have conducted a psychological and profound analysis of characters, as evidenced by the works of Z. Freud and K. G. Jung.

The article delves into numerous issues, shedding light on them through the lens of contemporary literary studies. Various approaches have been employed to examine the psychological traits of the protagonists depicted in novels and short stories:

- The actions of characters demonstrating depressive and isolated traits in social relationships were elucidated through an examination of the impact of the social environment and individual characteristics.
- For behavioral analysis of characters, the portrait with a socio-psychological and national layer was employed to enhance the comprehensive psychological depiction of the character.
- Special attention was given to the description of the physical environment and natural phenomena, serving as a means to gain psychological insights.

РЕЗЮМЕ

В статье затрагиваются особенности создания образов Левона Башаляна. С целью глубокого, психологического анализа образов нами был использован опыт аналитической психологии, ссылаясь на взгляды З. Фрейда, К. Юнга.

Многие вопросы в статье трактуются исходя из современного литературоведческого опыта. Черты душевного склада героев, встречающихся в новеллах и рассказах, были рассмотрены по нескольким методам:

- Действия образов, которые в общественных отношениях демонстрируют подавленные, изолированные черты характера, обусловлены ролью социальной среды и личностными свойствами.
- Для поведенческого анализа образов был использован портрет — с национальными, социально-психологическими слоями, что помогло обобщить психологическое описание характера.
- Подчеркивается значимость описания социума, окружающей среды, природных явлений, через которые возможны психологические проникновения.



LITERARY REVIEW



Doi: 10.56737/2953-7843-2023.13-97

ԱՐՄԷՆ ՅՈՎԱԿԻՄԵԱՆ

Բանասիրական գիտ. թեկնածու, ԵՊՀ

ՔՐԻՍՏԻՆԷ ԲՈՅԱՋԵԱՆ

ՄԱՍԷ

ԳՐԻԳՈՐ ՄԱՐԱՇԵՏԻ. 900-ԱՄԵԱՅ ԹԱՏԵՐԳՈՒԹԵԱՆ ՆՈՐ ԿԵԱՆՔԸ

Հեղինակներն ընթերցողին են ներկայացնում Մայր Աթոռ Սուրբ Էջմիածնի հերթական հրատարակությունը՝ Գրիգոր Մարաշեցու «Բան գովեստից Մարիամու Աստուածածնին» երկը, որ հայ իրականության մէջ մեզ հասած առաջին ամբողջական, ինքնուրույն «թատերային» ստեղծագործությունն է:

GRIGOR MARASHETSI THE NEW LIFE OF NINE HUNDRED-YEAR-OLD DRAMA¹

Unlike many nations that had no literature at all in the Ancient or Middle centuries or have been satisfied with the proportionality of one author-one small creation, the Armenian past is rich with noticeable figures and literary heritage. In consideration of the contents of our article let's remember some prominent medieval poets such as Grigor Narekatsi (951–1003), Nerses Shnorhali (1102–1173), Grigor Anavartzetsi (about 1240–1293), Arakel Syunetsi (1350–1425), authors who left immortal creations after them surpassing their time.

¹* Ստացուել է՝ 13.11.2023, գրախօսուել է՝ 20.11.2023:

Էլ. հասցէ՝ ovakimyan1969@mail.ru, boyajyankristine-10@aspu.am: Խմբագիր՝ Գէորգ Սարեան:

But if Nerses Shnorhali or Grigor Narekatsi are known to Armenian readers, there are many Armenian poets whose works are not known not only to the foreign reader but also to the Armenian reader, as they rest closed in manuscripts remaining inaccessible to those who don't know Grabar (old Armenian) or Cilician (middle Armenian).

The name of Grigor Marashetsi can be added to the above-stated names who have not found his present reader not because he has created in classic Armenian but because his works have not had any new edition.

We have little information from his biography. It is certain that this author occupying his unique place in the 12th century Armenian literature, founded the Hesvants Monastery in Cilician Armenia in the vicinity of Marash² province of Adana state and died after 1149.

Grigor Marashetsi was popular in Cilicia and the neighboring areas as a scientist and philosopher and it is not in vain that in various manuscripts he is often referred to as “Grigor the Philosopher”. One of the scribes of his works has written the title of the book as follows: “The Book of Alas of Laments that was confessed to God by the invincible scientist (Vardabed) and Monk Grigor Hesuatsi³.

The first person to talk about the writings of Grigor Marashetsi was the Priest of the Mekhitarist Congregation, Father Ghevond Alishan. Concerning the poem called “Lamentation” Ghevond Alishan has written that the poem “contains passages and repetitions resembling simple or ordinary speech but there are also many selected descriptions and moral reflections, for which Grigor deserved to be called Grigor the Philosopher. However, it is more likely that Grigor wrote a separate philosophical work”⁴. After Ghevond Alishan many scientists have studied the works of Marashetsi. In the beginning, they confused him with Grigor Mashkevor, and only in 1960 did H. Melyan find the answer to the dispute, showing the difference between Mashkevor and Marashetsi⁵. The next important reference to Marashetsi's work was in 1980, when Arshak Madoyan brought together all the important in-

² In 1065 this city for a short time became the residence of the Armenian Patriarch, see Թ. Յասկոբեան, (T. Hakobyan, et alias), Հայաստանի եւ յարակից շրջանների տեղանունների բառարան (Dictionary of Toponyms of Armenia and Adjacent regions), vol. 3, Yerevan, 1991, p.721.

³ See Mesrop Mashtots Research Institute of Ancient Manuscripts, manuscript N 8323, p. 164, cp. manuscript N 38, p. 61b.

⁴ Գ. Ալիշան (Gh. Alishan), Ծնոթալի եւ պարագայ իւր (Shnonrhali and His Circumstances), Venece, 1873, p. 219.

⁵ See «Էջմիածին» («Etchmiadzin»), 1960, N 6. p. 37.

formation about Marashetsi in an article, highlighting Marashetsi's most important literary writings summarizing them in the following way: "Grigor Marashetsi is a writer who left his unusual mark in the bibliography of the 12th century, whose legacy is rather interesting and original. If his poem "Lamentation" belongs to the school of Grigor Narekatsi, then with his other poem "Word of Praise" he stands on the individual ground, bringing his contribution to the development of Armenian literature"⁶. As we know Arshak Madoyan is a devoted literary critic of medieval Armenian literature. He is the grandson of Seylan (Arshak Madoyan)⁷, the chronologer of the Sassoon liberation struggle, and the son of literary scholar Gevorg Madoyan⁸, who has educated many generations of pedagogues in Javakhq. Many of his 600 works and monographs are about medieval poetry and poets in particular so Arshak Madoyan's opinion about Marashetsi deserved special attention. However, the literary heritage of Marashetsi has remained inaccessible to the reader for many years, only a small part of the writer's works were published. Not long ago, the Mother See of Etchmiadzin through the hard work of Arshak Madoyan, published Grigor Marashetsi's poem "Praise be to the Most Holy Virgin Mary"⁹ and the lines from the pages of the ancient manuscript returned to the hands of the Armenian faithful reader with a new breath and life, glorifying again and again the Holy virgin who gave birth to the Savior. Perhaps it can be said that this book was the reason for the emergence of new publications on Marashetsi¹⁰, which is perhaps one of the goals of every scientific publication.

⁶ «Բանբեր Երեւանի համալսարանի» ("Herald of Yerevan University", 1980, N. 3, pp.190–196.

⁷ About Seylan, see «Սասուն» («Sasun») (Historical Overview), Yerevan, 1990, pp. 3–24; cp. «Ով Ով է. (Հայեր)» («Who is Who? (Armenians)» Encyclopedia, vol. 2, Yerevan, 2007, page 447, cp. «Հայ գրատպություն եւ գրքարուեստ» («Armenian Printing and Book Arts») Encyclopedia, Yerevan, 2015, p. 955.

⁸ About Gevorg Madoyan see Գ. Ստեփանյան (G. Stepamyan), Կենսագրական բառարան (Biographical Dictionary), vol. 2, Yerevan, 1981, p. 262, cp. «Գեւորգ Մադոյան. Անդրադարձ» («Gevorg Madoyan: Return»), Compilation and Preface by A. Khudaverdyan, Yerevan, 2012, p. 3 and ff.

⁹ Etchmiadzin, 2017, 92 pages.

¹⁰ See Յ. Քեոսեյան, Ներածություն հայ եկեղեցական մատենագրության (H. Qyoseyan, Introduction to Armenian Ecclesiastical Literature, Yerevan, 2018, pp. 358–362, also G. Terzyan's article: «Գրիգոր Մարաշեցու մատենագրական վաստակը» (Literary Heritage of Marashetsi) in («Բանբեր Մատենադարանի») («Banber Matenadarani», N32, 2021, p. 78 and ff.), and poems of Marashetsi published in one book in 2020: Գրիգոր Մարաշեցի, Վայեր, Ողբեր, Մեղաներ (Grigor Marashetsi, Laments, Mourning, Regrets)

In addition to publicizing the medieval poet's originals, the book of the Mother See is also valuable with a rather voluminous (37 pages) preface ("Grigor Marashetsi and his work") where Madoyan comprehensively presents the author and his work. We'd like to end our speech regarding this poem by Grigor Marashetsi with the following assessment given by Madoyan, who makes its value and significance more explicit: "However, we would like to note that Marashetsi's poem is the first complete, self-contained "dramatic" work that has reached us in Armenian reality, which perhaps has the character of a mystery and is interesting in many ways¹¹.

ARMEN HOVAKIMYAN
Ph.D. YSU

KRISTINE BOYAJYAN
ASPU

ՀԻՄՆԱԲԱՌԵՐ

Գրիգոր Մարաշեցի, քերթուած, թատերգութիւն, բանք, Մարիամ Աստուածածին

РЕЗЮМЕ

Авторы представляют читателю очередное издание Первопрестольного Святого Эчмиадзина: творение автора XII века Григора Марашеци «Хвалебное слово Пресвятой Богородице», что в армянской действительности является первым самостоятельным и полным духовно-поэтическим произведением, текст которого дошел до наших дней в целостности и сохранности.



¹¹ See the «Word of Praise», p. 42.

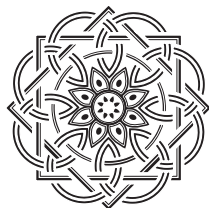
СОДЕРЖАНИЕ

ИСТОРИКО-ФИЛОЛОГИЧЕСКИЕ ИССЛЕДОВАНИЯ

АРМЕН САРКИСЯН — Св. Нерсес Шнорали. Загадки <i>(на китайском)</i>	5
ВАРАНД (АКОП) КОРТМОСЯН — Св. Григор Татеваци (Краткий биографический очерк, перевод на арабский некоторых фрагментов «Книги вопрошений») <i>(на арабском)</i>	10
ЛУИЗА ГАСПАРЯН — «Рождественские повести» Ч. Диккенса в свете армянской литературной традиции <i>(на английском)</i>	26
ГЕОРГ ГНДЗАЦЯН, АНИ ХУДАВЕРДЯН, МАЙЯ ГРИГОРЯН — Корреспонденция А. Ширванзаде с армянской прессой, издаваемой в Баку <i>(на русском)</i>	38
КАНАКАРА АЙРАПЕТЯН — О загадочной смерти Католикоса Всех Армян Хорена I Мурадбекияна <i>(на английском)</i>	51
ВАЧАГАН АВАГЯН — Повесть Г. Сундукияна «Варенькин вечер» в литературоведческой традиции (приуроченный к столетию со дня рождения академика Эдуарда Джрбашяна) <i>(на русском)</i>	66
ТАМАРА АНДРЕАСЯН — Особенности создания образов в прозе Левона Башаляна <i>(на английском)</i>	83

РЕЦЕНЗИИ. БИБЛИОГРАФИЯ

АРМЕН ОВАКИМЯН, КРИСТИНЕ БОЯДЖЯН — Новая жизнь 900-летней драматургии <i>(на английском)</i>	97
--	----



CONTENTS

HISTORICAL-PHILOLOGICAL STUDIES

ARMEN SARGSYAN — Nerses the Graceful. Riddles (<i>in Chinese</i>)	5
VARAND (HAKOB) KORTMOSYAN — St. Gregory of Tatev (biographical features; the Arabic translation of some parts of the “Book of Questions”) (<i>in Arabic</i>)	10
LUIZA GASPARYAN — Dickens’ “Stories for Christmas” under the light of the Armenian literary tradition (<i>in English</i>)	26
GEORGE HNDZATSYAN, ANI KHUDAVERDYAN, MAYA GRIGORYAN — Alexander Shirvanzade’s correspondence to the Armenian newspaper of Baku (<i>in Russian</i>)	38
KANAKARA HAYRAPETYAN — On the mystery of the death of Khoren I Muradbekian, Catholicos of All Armenians (<i>in English</i>).	51
VACHAGAN AVAGYAN — Gabriel Sundukian’s short story “Varinki Veche” in Literary Studies (on the 100 th birth anniversary of the Academician Eduard Jrbashyan) (<i>in Russian</i>)	66
TAMARA ANDREASYAN — Peculiarities of character development in Levon Bashalian’s prose (<i>in English</i>)	83

LITERARY REVIEW

ARMEN HOVAKIMYAN, CHRISTINE BOYAJYAN — Grigor of Marash: the new life of the 900-year-old dramaturgy (<i>in English</i>)	97
--	----



ԲՈՎԱՆԴԱԿՈՒԹԻՒՆ

ՊԱՏՄԱՐԱՆԱՍԻՐԱԿԱՆ

ԱՐՄԷՆ ՍԱՐԳՍԵԱՆ — Ներսէս Ծնորհալի. Հանելուկներ (*չինարէն*) 5

ՎԱՐԱՆԴ (ՅԱԿՈԲ) ԲՈՐԹՄՈՍԵԱՆ — Սուրբ Գրիգոր Տաթևացի.

(Կենսագրական գծեր, «Գիրք Հարցմանց»ի որոշ հատուածների արաբերէն թարգմանությունը) (*արաբերէն*) 10

ԼՈՒԻՉԱ ԳԱՍՊԱՐԵԱՆ — Դիքէնսի «Սուրբծննդեան երկերը» հայ գրական աւանդոյթի լոյսի ներքոյ (*անգլերէն*) 26

ԳԷՈՐԳ ՀՆԶԱՅԵԱՆ, ԱՆԻ ԽՈՒԴԱՎԵՐԴԵԱՆ, ՄԱՅՅԱ ԳՐԻԳՈՐԵԱՆ —

Շիրվանզադէի թղթակցութիւնը Բաքուի հայկական թերթին (*ռուսերէն*). . . . 38

ՔԱՆԱՔԱՐԱ ՀԱՅՐԱՊԵՏԵԱՆ — Ամենայն Հայոց Կաթողիկոս Խորեն Ա.

Մուրադբէկեանի մահուան առեղծուածի շուրջ (*անգլերէն*) 51

ՎԱԶԱԳԱՆ ԱԲԱԳԵԱՆ — Գ. Սունդուկեանի «Վարինկի վեչերը» պատմուածքը

գրականագիտական հոլովոյթում (*ակադեմիկոս Էդուարդ Ջրբաշեանի ծննդեան 100-ամեակի առթիւ*) (*ռուսերէն*) 66

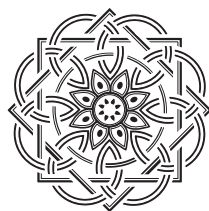
ԹԱՄԱՐԱ ԱՆԴՐԷԱՍԵԱՆ — Կերպարակերտման առանձնայատկութիւնները

Լեւոն Բաշալեանի արձակում (*անգլերէն*) 83

ԳՐԱԽՕՍՈՒԹԻՒՆ. ՄԱՏԵՆԱԳԻՏՈՒԹԻՒՆ

ԱՐՄԷՆ ՅՈՎԱԿԻՄԵԱՆ, ՔՐԻՍՏԻՆԷ ԲՈՅԱԶԵԱՆ — Գրիգոր Մարաշեցի.

900-ամեայ թատերգութեան նոր կէտնքը (*անգլերէն*). 97



ISSN 1829-4243
eISSN 2953-7843

Հրատարակում է
Գէորգեան հոգեւոր ճեմարանի
(աստուածաբանական համալսարան)
գիտխորհրդի երաշխատրույթեամբ եւ որոշմամբ

Հրատարակչական բաժնի տնօրէն՝
Տ. Արարատ քիւյ. Պօղոսեան

Խմբագրութեան հասցէն՝
ՀԱՅԱՍՏԱՆԻ ՀԱՆՐԱՊԵՏՈՒԹԻՒՆ, Ք. ՎԱՂԱՐՇԱՊԱՏ,
ՄԱՅՐ ԱԹՈՌ ՍՈՒՐԲ ԷՋՄԻԱԾԻՆ
«ԷՋՄԻԱԾԻՆ»
ԿՐՕՆԱԳԻՏԱԿԱՆ ԵՒ ՀԱՅԱԳԻՏԱԿԱՆ ԱՄՍԱԳՐԻ ԽՄԲԱԳՐՈՒԹԻՒՆ

Республика Армения, Эчмиадзин, редакция журнала «Эчмиадзин»

Republic of Armenia, Etchmiadzin, Editorial Office of the Journal "Etchmiadzin"

Էլ. փոստ՝ etchmiadzinamsagir@gmail.com
Հեռ. (+374-10) 517-276

Ստորագրուած է տպագրութեան՝ 20.01.2024 թ.



ԵՔԵՄԻԱԾԻՆԻ ՏՊԱՐԱՆ
ԷՋՄԻԱԾԻՆԻ ՏՊԱՐԱՆ